Rahul's ✔

Topper's Voice

AS PER CBCS SYLLABUS

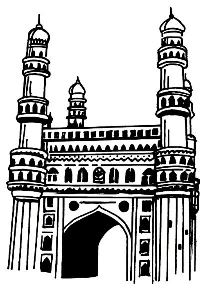

LATEST EDITION 2022

INTERMEDIATE

हिंदी

I Year

- ☞ **Study Manual**
- ☞ **Solved Model Papers**

- by -

Mohammed Basith Ali Soofiani
M.A., B.Ed.

M. Ambica Chowhan
M.A.

Price ` .99-00

Rahul Publications™

Hyderabad. Ph : 66550071, 9391018098

All disputes are subjects to Hyderabad Jurisdiction only

INTERMEDIATE

हिंदी

I Year

Inspite of many efforts taken to present this book without errors, some errors might have crept in. Therefore we do not take any legal responsibility for such errors and omissions. However, if they are brought to our notice, they will be corrected in the next edition.

© *No part of this publications should be reporduced, stored in a retrieval system, or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording and/or otherwise without the prior written permission of the publisher*

Price ` 99-00

Sole Distributors : ☎ : **66550071, Cell : 9391018098**

VASU BOOK CENTRE

Shop No. 2, Beside Gokul Chat, Koti, Hyderabad.

Maternity Hospital Opp. Lane, Narayan Naik Complex, Koti, Hyderabad.
Near Andhra Bank, Subway, Sultan Bazar, Koti, Hyderabad -195.

प्रस्तावना

'हिंदी'' भारत देश की राष्ट्र और राज्य भाषा है । इंटरमीडियेट प्रथम वर्ष के छात्र - छात्राओं की द्वितीय भाषा के रूप में तेलंगाना राज्य सरकार ने ''साहित्य भारती'' एकांकी सुधा का प्रकाशान किया जिसके लिए मै सरकार को दिल से आभारी हूँ ।

इस पुस्तक को पाँच भागों में यानी (1) प्रचीन काव्य (2) आधुनिक काव्य (3) आधुनिक गद्य - भाग (4) गद्य विविधा (5) सरल हिंदी व्याकरण संकलित किया गया है । इसमें मै छात्रों के मनोभाव के अनुकूल सरल और सरस भाषा में अच्छे अंक लाने योग्य लिखने का प्रयास किया हूँ ।

अतः आप लोग (छात्र-गण) माता - पिता और गुरूजनों का नाम रोशन करने का प्रयत्न करें ।

मै इस पुस्तक की संकलपना को साकार बानानेवाली संस्था ''राहुल प्रकाशान'' के प्रति हार्दिक आभार प्रकट करता हूँ ।

''हिंदी देती जीवन दान, सब करें इसका सम्मान''

विषय - सूची

साहित्य भारती

प्राचीन काव्य			कवि नाम	पृ.स.
1.	कबीर के दोहे	-	**कबीरदास**	**2**
2.	तुलसी के दोहे	-	**तुलसीदास**	**8**
आधुनिक कविता				
1.	समता का संवाद	-	**मैथिलीशरण गुप्त**	**14**
2.	प्रथम रश्मि	-	**सुमित्रानंदन पंत**	**18**
3.	दान-बल	-	**रामधारी सिंह दिनकर**	**22**
आधुनिक गद्य				
1.	शिष्टाचार	-	**रामाज्ञा द्विवेदी समीर**	**28**
2.	अपराजिता	-	**गौरा पंत शिवानी**	**37**
3.	गिल्लू	-	**महादेवी वर्मा**	**44**
4.	बतुकम्मा	-	**संपादक मंडल**	**52**

गद्य विविधा

1.	शिक्षा	-	**मनमोहन भाटिया**	**62**
2.	हार की जीत	-	**सुदर्शन**	**65**
3.	धरती को बचायें	-	**एन. मणिवासकम**	**67**
4.	खेलो तो ऐसा खेलो	-	**योगराज थानी**	**69**

सरल व्याकरण

1.	वर्तनी, शब्द विचार, उपसर्ग, प्रत्यय	**72**
2.	लिंग एवं वचन	**83**
3.	वाक्य संरचना, कारक	**88**
4.	काल, कारक	**92**
5.	बोधक गद्यांश	**94**
6.	अनुवाद	**98**

नमूना प्रश्न - पत्र

➢	नमूना प्रश्न पत्र - I	**101 - 108**
➢	नमूना प्रश्न पत्र - II	**109 - 115**
➢	नमूना प्रश्न पत्र - III	**116 - 122**

साहित्य भारती

प्राचीन काव्य

1. कबीर के दोहे - **कबीरदास**
2. तुलसी के दोहे - **तुलसीदास**

Rahul Publications

प्राचीन काव्य

1

कबीर दास के दोहे

कवि - कबीर दास

कवि परिचय

कबीरदास के जन्म संवत् - 1455 (सन् 1398) मृत्यु - संवत् - 1575 (सन् 1518) कबीर दास हिन्दी साहित्य के भक्तिकाल के निर्गुण धारा के ज्ञानमार्ग शाखा के प्रतिनिधि कवि माने जाते है। इनका जन्म संवत् 1455 को एक विधवा ब्राम्हणी के गर्भ से हुआ । इनको लोकलज्जा के भय से लहरत्तारा नामक तालब के किनारे छोडा गया । वहाँ से गुजरने वाले नीरू और नीमा नामक जुलाह परिवार ने कबीर का पालन-पोषण किया ।

कबीरदास अनपढ थे । आप पेशे के जुलाहा थे । एक और काम करते हुए देशाटन संत - सांगत्य तथा अनुभव से ज्ञान प्राप्त किया । आपके गुरू का नाम पं. रामानंद था, इनकी रचना ''बीजक '' है । बीजक के तीन भाग है साखी सबद और रमैणी है. इनकी भाषा का नाम ''सधुक्कड़ी'' है । मिथ्या, विश्वास एवं मूढ़ परंपराओं का खण्डन तीखी भाषा में करना ही आप की कविता की विशेषता है । नीति ज्ञानी, भक्त और समाज सुधारक के रूप में कबीरदास हिन्दी साहित्य में अमर है ।

Rahul Publications

दोहे

1. **सतगुरू की महिमा अनँत, अनँत किया उपकार ।**
लोचन अनँत उघारिया, अनँत दिखाचनहार ।।

प्रस्तावना : प्रस्तुत दोहा ''कबीर के दोहे'' नामक पद्यांश से लिया गया है । कबीर दास भक्तिकाल क निर्गुण धारा के ज्ञानमार्ग शाखा के प्रतिनिधि कवि है । इनका जन्म सन् 1398 ई.में और मृत्यु सन् 1518 में हुआ । इनके गुरू का नाम पं. रामानंद था, और प्रसिद्ध रचना ''बीजक'' है । इनकी भाषा ''सधुक्कड़ी'' है ।

संदर्भ : प्रस्तुत दोहे में कबीर सतगुरू की महिमा के बारे में अपना अभिप्राय व्यक्त कर रहे है ।

भावार्थ : कबीर दास का कहना है कि गुरू की महिमा अनंत है और उनके उपकार भी अनंत है। वे अनंत दृष्टि से अनंत प्रभू का दर्शन प्राप्त कराते है। सतगूरू ही भगवान के बारे में हमें बताते है। अर्थात् भगवान तक पहुँचने का मार्ग गुरू ही हमें दिखाते है।

विशेषता : कबीर के अनुसार गूरू वंदनीय होते है। अतः उनका आदर करना चाहिए।

భావం : కబీర్‌దాసు ఈ దోహాలో గురువు యొక్క మహిమను వివరించుచున్నారు. సద్గురువు యొక్క మహిమ మరియు గురువు యొక్క ఉపకారం అనంతమైనది. గురువు నా యొక్క జ్ఞానదృష్టి తెరిపించిరి. ఆ జ్ఞానదృష్టి సహాయంతోనే నేను భగవంతుని సాక్షాత్యారం పొందగలిగాను అని కబీర్ అంటున్నారు. భగవంతుని వద్దకు వెళ్ళుటకు సరియైన మార్గమును చూపించగలిగే వ్యక్తి సద్గురువు.

2. **साच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।**
जाके हिरदे साच है, ता हिरदे गूरू आप॥

प्रस्तावना : प्रस्तुत दोहा ''कबीर के दोहे'' नामक पद्यांश से लिया गया है। कबीर दास भक्तिकाल क निर्गुण धारा के ज्ञानमार्ग शाखा के प्रतिनिधि कवि है। इनका जन्म सन् 1398 ई.में और मृत्यु सन् 1518 में हुआ। इनके गुरू का नाम पं. रामानंद था, और प्रसिद्ध रचना ''बीजक'' है। इनकी भाषा ''सधुक्कड़ी'' है।

संदर्भ : प्रस्तुत दोहे में कबीर ''सच्चाई के महत्व के प्रति अपना अभिप्राय व्यक्त कर रहे है।

भावार्थ : कबीर दास का कहना है कि इस संसार में सत्य के मार्ग पर चलने से बड़ी कोई तपस्या नहीं है और झूठ बोलने से बडा पाप नहीं है। जिसके ह्रदय में सत्य का वास होता है उसके ह्रदय साक्षात् भगवान का वास होता है। अर्थात् सत्य मार्ग मे भगवान की कृपा होती है।

विशेषता : कबीर के अनुसार सत्य मार्ग उत्तम मार्ग है, जिससे जीवन को सार्थकता मिलती है।

Rahul Publications

భావం : కబీర్‌దాసు ఈ దోహాలో సత్యము యొక్క గొప్పతనాన్ని వివరించిరి. సత్యమార్గమునందు సమయనిమచువారు ఒక మహాతపస్వి కంటే గొప్పవారు. అత్యము మాట్లాడేవారి కంటే పాపత్ములు ఈ భూమినందు లేరు. ఎవరైతే ఎల్లప్పుడు సత్యమునే మాట్లాడతారో వారి హృదయం నందు సాక్షాత్తు భగవంతుడు ఉంటాడు. సత్యమార్గమునందు ప్రయాణంచేయు వారిపై ఎల్లప్పడు భగవంతుని కృప ఉంటుంది.

3. सोना सज्जन साधुजन, टूटि जुटै सौ बार।
दुर्जन कुंभ कुम्हार का, एकै धका दरार ।।

प्रस्तावना : प्रस्तुत दोहा ''कबीर के दोहे'' नामक पद्यांश से लिया गया है। कबीर दास भक्तिकाल क निर्गुण धारा के ज्ञानमार्ग शाखा के प्रतिनिधि कवि है । इनका जन्म सन् 1398 ई.में और मृत्यु सन् 1518 में हुआ । इनके गुरू का नाम पं. रामानंद था, और प्रसिद्ध रचना ''बीजक'' है । इनकी भाषा ''सधुक्कड़ी'' है ।

संदर्भ : प्रस्तुत दोहे में कबीर ''सज्जन के गुण'' के प्रति अपना अभिप्राय व्यक्त कर रहे है ।

भावार्थ : कबीर दास का कहना है कि साधू (संत) सोने समान होते है । जो सौ बार टूटने पर भी जोड़े जा सकते है। जो सौ बार टूटने पर भी जोड़े जा सकते है। उसी प्रकार भले मनुष्य (साधु) हर अवस्था मे भले ही रहते है । इसके विपरीत बुरे लोग कुम्हार के घड़े के समान होते है, जो एक बार टूटने पर दुबारा जुडा नही जाते ।

विशेषता : कबीर के अनुसार संत (भले मनुष्य) सोने के समान होते है । अतः उनका आदर करने से जीवन सार्थक बनता है ।

భావం : కబీర్‌దాసు ఈ దోహాలో మంచి వ్యక్తి యొక్క గుణం ఏవిధంగా ఉండునో మనకు వివరించుచున్నారు. బంగారం మనం ఎన్నిసార్లు ముక్కలు చేసినను మరల అతుకవచ్చునో అదేవిధంగా మంచి వ్యక్తి ఎటువంటి పరిస్థితులలోనైనా మంచితనంగానే ఉండును. కాని చెడ్డ వ్యక్తి కుమ్మరివారి యొక్క కుండతో సమానం ఒక్కసారి కుండను విరగగొట్టిన మరల ఎప్పటికి అతుకదు. చెడ్డవారి మనస్థితి ఎల్లప్పుడు చెడుగానే ఉంటుంది.

Rahul Publications

4. **बोली तो अनमोल है, जो कोइ जानै बोल ।**
हिये तराजू तोलि के, तब मुख बाहर खोल ।।

प्रस्तावना : प्रस्तुत दोहा ''कबीर के दोहे'' नामक पद्यांश से लिया गया है। कबीर दास भक्तिकाल क निर्गुण धारा के ज्ञानमार्ग शाखा के प्रतिनिधि कवि है । इनका जन्म सन् 1398 ई.में और मृत्यु सन् 1518 में हुआ । इनके गुरू का नाम पं. रामानंद था, और प्रसिद्ध रचना ''बीजक'' है । इनकी भाषा ''सधुक्कड़ी'' है ।

संदर्भ : प्रस्तुत दोहे में कबीरदास ''मधुरवाणी'' की महानता का वर्णन कर रहे है ।

भावार्थ : कबीर दास का कहना है कि बाणी मे मधुर भावना रखना अमूल्य रत्न के समान है । अतः जो बोली का तरीका जानता है वह तराजू में तोलकर ही हृदय की बात को मुह से बाहर आने देता है ।

विशेषता : कबीर के अनुसार बोली मधुर बोलने से समाज में हमारा गौरव बढ़ता है ।

భావం : కబీర్‌దాసు ఈ దోహానందు మధురవాణి అనగా మంచి మాటాల యొక్క గొప్పతనము వర్ణించుచున్నారు. ఇతరులతో మంచి మాటలు మాట్లాడటం తెలిసినట్లయితే బహుశా వానికి మంచిమాట అనధి అమూల్యమైన రత్నం అని తెలియును. అందువలన హృదయం అనే తరాజు (కాటా) లో కొలచి నోటి నుండి బయటకు పంపును.

5. **जहाँ दया तहँ धर्म है, जहाँ लोभ तहँ पाप ।**
जहाँ क्रोध तहँ काल है, जहाँ छिमा तहँ आप ।।

प्रस्तावना : प्रस्तुत दोहा ''कबीर के दोहे'' नामक पद्यांश से लिया गया है । कबीर दास भक्तिकाल क निर्गुण धारा के ज्ञानमार्ग शाखा के प्रतिनिधि कवि है । इनका जन्म सन् 1398 ई.में और मृत्यु सन् 1518 में हुआ । इनके गुरू का नाम पं. रामानंद था, और प्रसिद्ध रचना ''बीजक'' है । इनकी भाषा ''सधुक्कड़ी'' है ।

संदर्भ : प्रस्तुत दोहे में कबीरदास ''दया और क्षमा'' जैसे उत्तम गुणों के प्रति अपना अभिप्राय व्यक्त कर रहे है ।

Rahul Publications

भावार्थ : कबीर दास का कहना है कि जहाँ दया भाव है वहाँ धर्म का व्यवहार होता है। जहाँ क्षमा और सहानुभूति होती है वहाँ भगवान का वास होता है । लेकिन इसके विपरीत जहाँ लालच और क्रोध होता है वहाँ का अंत होना अनिवार्य है । अतः लोभ, क्रोध से दूर रहकर दया और क्षमा को अपनाने में लीन रहना चाहिए ।

विशेषता : कबीर के अनुसार क्रोध से दूर रहकर क्षमा को अपनाने से जीवन सार्थक बनता है ।

భావం : కబీర్‌దాసు ఈ దోహానందు దయ మరియు క్షమాగుణం యొక్క గొప్పతనమును చెప్పుచున్నారు. ఎక్కడైతే దయా భావం ఉండునో అక్కడ ధర్మ వ్యవహారం ఉండును. ఎక్కడైతే దురాశ మరియు కోపం ఉండునో అక్కడ పాపం ఉండును. ఎక్కడైతే క్షమ మరియు సహానుభూతి ఉండునో అక్కడ దేవుడు ఉండును. దయ మరియు క్షమాపణ ఈ రెండు ప్రపంచం నందు మహాగుణములుగా చెప్పదురు.

दीर्ध प्रश्नोत्तर

1. सतगुरू के विषय में कबीर के क्या विचार है?

उत्तर :

कबीरदास गुरू को भगवान से उत्तम स्थान देते है । गुरू की महिमा अपार और अनंत है। गूरू ही अपने अज्ञान रूपी अंधकार को दूर करके ज्ञान रूपी दीप जलाते है ।

2. कबीरदास का संक्षिप्त परिचय लिखिए?

उत्तर :

कबीरदास भक्तिकाल के निर्गुण धारा के ज्ञानमार्ग शाखा के प्रतिनिधि कवि है । कबीर के जन्म और मृत्यु लेकर विभिन्न मत प्रचलित है । कबीर के गुरू का नाम रामानंद था, इनकी भाषा सधुक्कडी है । रचना ''बीजक'' है । वे समाज सुधारक कवि थे ।

Rahul Publications

लघु प्रश्नोत्तर

1. कबीर के गुरू कौन थे?

उत्तर :

कबीर के गुरू पं. रामानंद थे ।

2. कबीर की एक मात्र प्रामाणिक रचना का नाम क्या है?

उत्तर :

कबीर की एक मात्र प्रामाणिक रचना का नाम ''बीजक'' है ।

3. कबीर ने दुर्जन की तुलना किससे की है ?

उत्तर :

कबीर ने दुर्जन की तुलना मिट्टी के घड़े से की है ।

4. कबीर के अनुसार जहाँ दया होती है, वहाँ क्या होता है ?

उत्तर :

कबीर के अनुसार जहाँ दया होती है, वहाँ धर्म होता है ।

Rahul Publications

प्राचीन काव्य

2

तुलसी के दोहे

कवि - तुलसीदास

कवि परिचय

गोस्वामी तुलसीदास हिन्दी साहित्य के भक्तिकाल के सगुणधारा के प्रसिद्ध कवि माने जाते है । इनका वास्तविक (असली) नाम रामबोला था । इनका जन्म सन् 1532 में काशी के रूणकता नामक गाँव में हुआ था । इनकी माता का नाम हुलसी और पिता का नाम आत्मराम दूबे था । वे पं.नरहरिदास के शिष्य थे, इनकी प्रसिद्ध रचाना ''रामचरित मानस'' है । इनकी भाषा का नाम अवधि है । इनकी मृत्यु सन् १६२३ में हुई । इनकी रचनाएँ भाक्ति, नीति के साथ-साथ समाज सुधार भी होते है ।

संदर्भसहित व्याख्याएँ

1. तुलसी मीठे वचन ते, सुख उपजत चहूँ ओर ।
वसीकरण इक मंत्र है, परिहरू वचन कठोर ।।

संदर्भ : प्रस्तुत दोहे में 'तुलसीदास के दोहे' नामक पदय भाग से लिया है । गोस्वामी तुलसीदास हिंदी साहित्य के लोकप्रिय कवि है । तुलसीदास हिंदी साहित्य के भक्तिकाल में सगुण भाक्तिधारा के रामभक्ति शाखा के प्रमुख कवि है । हिंदी का रामकाव्य 'रामचरितमानस' इनका प्रसिद्ध महाकाव्य है। उनकी भाषा अवधि है ।

रचनाएँ : दोहावली, कवितावली, गीतावली, जानकीमंगल, पार्वतीमंगल । आदि ।

व्याख्या : तुलसीदास इस दोहे में 'मधुरवाणी' का महत्व बताते है । मीठेवचन बोलने से चारों ओर खुशियाँ फैलती है । सब हमारे मित्र बनते है । कोई हमारा शत्रु नहीं बनता । सबकुछ खुशहाल रहता है। मीठी वाणी से हम किसी को भी अपने वश में कर सकते हैं । इसीलिए मनुष्य को कठोर वचन छोडकर मीठे वचन बोलने का प्रयत्न करना चाहिए । मीठे वचन बोलने से सब का मन

Rahul Publications

प्रसन्न रहता है और शत्रु भी मित्र बन जाते हैं । कठोर वचन बोलने से सब हमसे नफरत करते है । कठोरता से बना बनाया काम बिगड जाता है वही मीठे वचन से बिगडा हुआ काम बन जाता हैं । इसीलिए हमें सबसे मधुरभाषी बनकर रहना चाहिए ।

विशेषता : कठोरवचन से कभी किसी से बात नहीं करनी चाहिए । मीठे वचनों से हम सबको वश में कर सकते है । मीठे बातो से शत्रु भी मित्र बन जाते हैं । हमारि मुधुरवाणी से हम हमारे समाज को खुश रख सकते है ।

భావం : ఈ దోహానందు తులసీదాసు మంచి మాటల యొక్క గొప్పతనమును మనకు వివిరించుచున్నారు. మంచి మాటాలు మాట్లాడితే మన చుట్టు ప్రక్కల అంతా సుఖంగా ఉంటుంది. నాలుగువైపుల సంతోషమైన వాతావరణం కనిపిస్తుంది. ఇతరులను మన వశం చేసుకోవాలంటే మధురమైన మాటాలు ఒక మంత్రంవలె పనిచేస్తాయి. అందువలన కఠినంగా మాట్లాడటం మాని తియ్యని మాటాలు మాట్లాడటం నేర్చుకోవలెను. మధురమైన మాటల వలన అందరూ మన మిత్రులు అవుతారు. కఠినమైన మాటల వలన శత్రువులు అగుదురు.

2. तुलसी काया खेत है, मनसा भयो किसान ।

पाप-पुव्य दोऊ बीज है, बुवै सो लुनै निदान ।।

संदर्भः प्रस्तुत दोहे में 'तुलसीदास के दोहे' नामक पदय भाग से लिया है । गोस्वामी तुलसीदास हिंदी साहित्य के लोकप्रिय कवि है । तुलसीदास हिंदी साहित्य के भक्तिकाल में सगुण भाक्तिधारा के रामभक्ति शाखा के प्रमुख कवि है । हिंदी का रामकाव्य 'रामचरितमानस' इनकी प्रसिद्ध महाकाव्य है। इनकी भाषा अवधि है ।

रचनाएँ : दोहावली, कवितावली, गीतावली, जानकीमंगल, पार्वतीमंगल ।

व्याख्या : इस दोहे में तुलसीदास कहते हैं, कि मनुष्य का शरीर खेत के समान है और मन किसान के समान है । पाप और पुण्य दो प्रकार के बीज है । जो हम बोते है, वहीं हम पाते हैं । मनरूपी किसान अच्छा बीज बोएगा तो फसल भी अच्छा ही पाएगा अगर बुरा बीज बोएगा तो बुरा ही फल पाएगा । उसीप्रकार हम अगर

अच्छा कर्म करेंगे तो पुण्य मिलेगा और बुरे कर्म करेंगे तो पाप मिलेगा । अर्थात जो अच्छा काम करता है । उसे अच्छा फल मिलता है । इसीलिए हमें अच्छे काम करने चाहिए । मनुष्य का मन ही पाप और पुण्य दोनों में से किसी एक की ओर आकर्षित होता है । हम जैसा बोएगें, वैसा ही फल पाएगें अर्थात अच्छे कर्मो का फल हमेशा अच्छा ही होता है और बुरे कर्मो का फल हमेशा बुरा ही होता है । यह हमपर निर्भर है कि हम किसे चुनते हैं ।

विशेषता : तुलसीदास ने शरीर को खेत और मन को किसान बताकर पाप और पुण्य को अच्छी तरह से समझाया है । मानव के मन में जब भी बुरे कर्म का विचार आए तो इस दोहे याद कर लेना चाहिए फिर कभी वह बुरे मार्ग पर नहीं जाएगा ।

భావం : తులసీదాసు ఈ దోహానందు నీతి యొక్క గొప్పతనమును విరించెను. మానవ శరీరం తులసీదాసు దృష్టిలో పొలముతో సమానం. మనసు రైతుతో సమానం. పాపపుణ్యములు రెండు విత్తనములు. వేటినైతే నాటతామో అదే ఫలితమును పొందును. మన చిత్తమునందు పాపము గురించి ఆలోచించి పాపం పనులు చేస్తే పాపాత్ముడు అని, దానికి వ్యతిరేకంగా మంచి పనులు చేస్తే పుణ్యాత్ముడు అని అంటారు. పుణ్యాత్ములను గౌరవంగా చూస్తారు. గౌరవాన్ని మనకు ఎక్కడకు వెళ్లినా ఇస్తారు.

3. तुलसी साथी विपत्ति के, विध्या, विनय, विवेक ।

साहस, सुकृति, सुसत्य, व्रत, राम भरोसो एक ।।

संदर्भ : प्रस्तुत दोहे में 'तुलसीदास के दोहे' नामक पदय भाग से लिया है । गोस्वामी तुलसीदास हिंदी साहित्य के लोकप्रिय कवि है । तुलसीदास हिंदी साहित्य के भक्तिकाल में सगुण भाक्तिधारा के रामभक्ति शाखा के प्रमुख कवि है । हिंदी का रामकाव्य 'रामचरितमानस' इनकी प्रसिद्ध महाकाव्य है। इनकी भाषा अवधि है।

रचनाएँ : दोहावली, कवितावली, गीतावली, जानकीमंगल, पार्वतीमंगल ।

व्याख्या : तुलसीदास इस दोहो में कहते हैं कि, मुसीबत के वक्त में आपको यह गुण बचाएगें । आपका ज्ञान या शिक्षा, आपकी विनम्रता, आपकी बुद्धि, आपके अंदर का साहस, आपके अच्छे कर्म, सच बोलने की आदत और ईश्वर पर

Rahul Publications

विश्वास । यही गुण हमें किसी बडी परेशानी के समय बचाएंगे । मुसीबत के समय शिक्षा, विनय, विवेक साहस तथा अच्छे कार्य और सच्चाई की आवश्यकता पडती है । बुरे समय में हमें धैर्य से काम लेना चाहिए । और आधिक मेहनत करके उसमें से बाहर निकलनेका प्रयत्न करना चाहिए । बुरे समय में हमे कभी भी अपने सदगुणों को नहीं छोडना चाहिए । कठिन प्रयत्न करके बुराई पर विजय पानी चाहिए । यही हमारे बुरे समय के साथी है ।

विशेषता : कभी भी विपत्ती को देखकर डरना नहीं चाहिए हमारे अंदर जो सद्रगुण है, उनसे उस कठिण परिस्थिती का सामना करना चाहिए । धैर्य से आगे बढ़ना चाहिए।

భావం : తులసీదాసు ఈ దోహానందు విద్య, వినయం మరియు వివేకము వంటి గుణముల గొప్పతనమును వివరించెను. జ్ఞానము, వినమ్రతతో కూడిన వ్యవహారం, వివిఏకం, సాహసం, మంచి పనులు, మన యొక్క సత్యము మరియు భగవంతుని నామస్మరణ. ఇవి అన్నియు కష్టకాలం నందు మనకు సహాయముగా ఉండును. కష్టకాలము నందు శిక్ష వినయం, వివేకం, సాహసం, నిజాయితీ మన తోటి ఉండును. కష్టము నుండి కాపాడును.

दीर्ध प्रश्नोत्तर

1. तुलसी के अनुसार विपत्ती के साथी कौन है ?

उत्तर :

तुलसी के अनुसार विपत्ती के समय हमें ये सात गुण बचायेंगे। आपका ज्ञान या शिक्षा, आपकी विनम्रता, आपकी बुद्धी, आपके अंदर का साहस, आपके अच्छे कर्म सच बोलने की आदत और परमात्मा पर विश्वास इन गुणों के सहारे हम हर आपत्ती-विपत्ती से लढ़ सकते है । यही हमारे बुरे समय के साथी है ।

2. तुलसी के अनुसार मीठे वचन बोलने से कया लाभ है ?

उत्तर :

तुलसी के अनुसार मीठे बोल बोलने से चारों ओर खुशियाँ फैलती हैं । मीठी वाणी से हम किसी को भी अपने वश में कर सकते हैं । मीठी बोली बोलने से शत्रुभी मित्र बन जाते हैं । इसीलिए कठोर वचन न बोलकर हमें मीठे वचन बोलना चाहिए । मीठी वाणी से हम सबको सम्मोहित कर सकते है । कटू शब्द बोलने से हम दुसरों का मन दुःखाते हैं । तब हमसे कोई भी बात नहीं करेगा । मीठी बोलने से हर कोई हमारा मित्र बन लाएगा । मीठे वचन बोलने से यह लाभ है ।

Rahul Publications

लघु प्रश्नोत्तर

1. तुलसी का अमरकाव्य कौनसा है ?

उत्तर :

'रामचरितमानस'

2. तुलसीदास के गुरू कौन थे?

उत्तर :

'नरहरिदास'

3. तुलसी के अनुकार वशीकरण मंत्र क्या है ।

उत्तर :

'मीठे वचन' बोलना ।

4. तुलसी ने काया की तुलना किससे की है ?

उत्तर :

'खेत' से की है ।

Rahul Publications

आधुनिक कविता

1. समता का संवाद - **मैथिलीशरण गुप्त**
2. प्रथम रश्मि - **सुमित्रानंदन पंत**
3. दान-बल - **रामधारी सिंह दिनकर**

Rahul Publications

आधुनिक कविता

1

समता का संवाद

कवि - मैथिलीशरण गुप्त

कवि परिचय

राष्ट्रकवि ''मैथिलीशरण गुप्त'' का जन्न ई.स. 1886 में झांसी के चिरगाँव में हुआ था । महात्मा गांधी ने इन्हें 'राष्ट्रकवि' की उपाधि दी । भारत सरकार ने 'पदम्‌भूषण' पूरस्कार से सम्मानित किया । उन्होंने कई राष्ट्रीय आंदोलनों में भाग लिया । ई.स. 1964 में उनकी मृत्यू हो गई। **रचनाएँः-** साकेत, यशोधरा, भारत-भारती, जयभारत अदि । प्रेम, त्याग और मानवता को कविता में स्थान दीया तथा देश का गौरवगान किया ।

सारांश

''समता का संवाद'' इस कविता में कवि ने 'भारत की अनेकता में एकता' का चित्र उभारा है । सभी, धर्म, संस्कृति, आचार-विचार को समानता से देश में एकता को स्थापित करना चाहते हैं। खडीबोली भाषा में कविता है । भारत देश एक मंदिर के समान है । यहाँ सब लोग एकसमान हे इसदेश में अनेक धर्म, जाति, वर्ग, संप्रदाय है मगर वाणी एक है कोई भेदभाव नहीं हैं । सबका स्वागत, सबका आदर समान है । यहाँ, राम, रहीम, बुद्ध, ईसा सबकी पुजा की जाती हैं । अलग-अलग संस्कृति होनेपर भी सभी का गौरव है । सब लोग प्रेम से रहते है । शत्रुता किसी कों नहीं पसंद। इसदेश में सबकी इच्छाएँ पूरी होगी सभी का मंगल होगा । यहाँ अनेक तीर्थस्थल है । हम अपने हृदय को ही मंदीर बनाएंगे । सबको मित्र बनाऐगे । आदार्शो से चरित्र बनाएंगे । हम सब भारत माँ की गोद में पले बडे है । हम सब भाई - बहन है । मिलकर सुख-दुख बटेंगे । इसप्रकार भारत देश की महानता और गौरवगान कवि करते हैं ।

Rahul Publications

संदर्भसहित व्याख्याएँ

1. भारत माता का मांदिर यह, समता का संवाद जाहाँ।
सबका शिव कल्याण यहाँ है, पावें सभी प्रसाद यहाँ।

संदर्भ : प्रस्तुत पदयांश ''समता का संवाद'' कविता से लिया गया है। इसके कवि 'राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त' है। इसमें देश का गौरवगान करके एकता पर बल दिया है। देश की मंगल कामना है।

व्याख्या : कवि कहते हैं कि भारत देश माता का मंदिर है। यहाँ 'समता का संवाद' किया है। सभी जाति, वर्ग, धर्म में एकता लाने का प्रयत्न किया है। अनेकता में एकता का प्रतीक भारतदेश है। ऐसे देश में हम सब का कल्याण होगा और इच्छाएँ पूरी होंगी। भारत माता की कृपा सब पर समान रूप से होंगी।

विशेषता : इसमें सभी, धर्मो, विचारो, संस्कृतियों की विभिन्नता में एकता दिखाई देती है। भाषा सरल खडीबोली है।

2. सब तीर्थों का एक तीर्थ यह, हृदय पवित्र बाना लें हम।
आओ यहाँ अजातशत्रु बन, सबको मित्र बना लों हम।
रेखाएँ प्रस्तुत है, अपने,मन के चित्र बना ले हम।
सौ - सौ आदर्शो को लेकर, एक चरित्र बना लें हम।

संदर्भ : प्रस्तुत पदयांश ''समता का संवाद'' कविता से लिया गया है। इसके कवि 'राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त' है। इसमें देश का गौरवगान करके एकता पर बल दिया है। देश की मंगल कामना है।

व्याख्या : कवि कहते हैं, हमारा देश एक मंदीर के समान है। हम अपने मनमंदीर में इसे बसाएंगें तथा हमारे हृदय को पवित्र बनाऐंगे हम अजातशत्रु बनकर सबसे मित्रता करेंगे। हमारे चरित्र को आदर्श बनांएगे। इसप्रकार कवि सबको आदर्शमय जीवन बिताने को कहते है। इस देश में एकता स्थापित करना चाहते हैं।

विशेषता : भारतदेश की महानता और भारतमाता को एक देवी के रूप में चित्रण करके देश के प्रति हमारा कर्तव्य निभाने का संदोश देते है।

Rahul Publications

दीर्घ प्रश्नोत्तर

1. 'समता का संवदा' कविता का सारांश लगभग पाँच - छः वाक्यों में लिखिए ।

उत्तर :

''समता का संवाद'' इस कविता में कवि ने 'भारत की अनेकता में एकता' का चित्र उभारा है । सभी, धर्म, संस्कृति, आचार-विचार को समानता से देश में एकता को स्थापित करना चाहते हैं। खडीबोली भाषा में कविता है । भारत देश एक मंदिर के समान है । यहाँ सब लोग एकसमान हे इसदेश में अनेक धर्म, जाति, वर्ग, संप्रदाय है मगर वाणी एक है कोई भेदभाव नहीं हैं । सबका स्वागत, सबका आदर समान है । यहाँ, राम, रहीम, बुद्ध, ईसा सबकी पुजा की जाती हैं । अलग-अलग संस्कृति होनेपर भी सभी का गौरव है । सब लोग प्रेम से रहते है । शत्रुता किसी कों नहीं पसंद। इसदेश में सबकी इच्छाएँ पूरी होगी सभी का मंगल होगा । यहाँ अनेक तीर्थस्थल है । हम अपने ह्रदय को ही मंदीर बनाएंगे । सबको मित्र बनाऐगे । आदार्शों से चरित्र बनाएंगे । हम सब भारत माँ की गोद में पले बडे है । हम सब भाई - बहन है । मिलकर सुख-दुख बटेंगे । इसप्रकार भारत देश की महानता और गौरवगान कवि करते हैं ।

Rahul Publications

लघु प्रश्नोत्तर

1. गुप्त जी के अनुसार भारत देश की विशेषता क्या है ?

उत्तर :

यहाँ सब लोग एकसमान हे इसदेश में अनेक धर्म, जाति, वर्ग, संप्रदाय है मगर वाणी एक है कोई भेदभाव नहीं हैं । सबका स्वागत, सबका आदर समान है । यहाँ, राम, रहीम, बुद्ध, ईसा सबकी पुजा की जाती हैं । अलग-अलग संस्कृति होनेपर भी सभी का गौरव है । सब लोग प्रेम से रहते है । शत्रुता किसी कों नहीं पसंद। इसदेश में सबकी इच्छाएँ पूरी होगी सभी का मंगल होगा ।

2. मैथिलीशरण गुप्त का संक्षिप्त परिचय लिखिए ।

उत्तर :

राष्ट्रकवि ''मैथिलीशरण गुप्त'' का जन्न ई.स. 1886 में झांसी के चिरगाँव में हुआ था । महात्मा गांधी ने इन्हें 'राष्ट्रकवि' की उपाधि दी । भारत सरकार ने 'पदमूभूषण' पूरस्कार से सम्मानित

किया। उन्होंने कई राष्ट्रीय आंदोलनों में भाग लिया। ई.स. 1964 में उनकी मृत्यू हो गई। **रचनाएँः-** साकेत, यशोधरा, भारत-भारती, जयभारत अदि। प्रेम, त्याग और मानवता को कविता में स्थान दीया तथा देश का गौरवगान किया।

एक शब्द में उत्तर लिखिए

1. समता का संवाद कविता के कवि कौन हैं ?

उत्तर :

समता का संवाद कविता के कवि ''मैथिलीशरण गुप्त'' हैं।

2. मैथिलीशरण गुप्त का प्रमुख महाकाव्य कौनसा है ?

उत्तर :

मैथिलीशरण गुप्त का प्रमुख महाकाव्य 'साकेत और यशोधरा है'।

3. समता शब्द का अर्थ क्या है ?

उत्तर :

समता शब्द का अर्थ समानता, बराबरी है।

Rahul Publications

आधुनिक कविता 2

प्रथम रश्मि

कवि - सुमित्रानंदन पंत

कवि परिचय

''सुमित्रानंदन पंत'' छायावाद के कवि है । इनका जन्म ई.स. 1900 में 'अल्मोडा' जिले के 'कौसानी' गाँव में हुआ था । उन्हें 'सुकुमार कवि' कहा जाता है । उनकी रचनाओं में प्रकृति सौदर्य, आदर्शवादी विचारधारा प्रमुख है । ई.स. 1977 में उनकी मृत्यू हो गई।

रचनाएँः- वीणा, ग्रंथि, पल्लव, युगांत प्रसिद्ध रचना है । 'चिदंबरा' काव्य के लिए उन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला ।

सारांशः

''प्रस्तुत कविता में वे प्रातःकाल के प्रकृति सौदर्य का चित्रण करते हैं । कवि बाल पक्षी को पुछते है कि उषाकाल में सुरज की प्रथम किरण इस धरती पर पडने वाली है यह तुने कैसे जाना। इतना सुंदर गीत तुमने कहाँ से सीखा । तुम स्वप्नां के घोंसले में पंखों में छिपकर सुख से सो रहे थे, रातभर जुगनू पहरा दे रहे थे । तुमने कैसे जाना की सुर्योदय हुआ है । सुंदर तितलीयाँ चंद्र की किरणों की तरह जमीन पर उतर कर कोमल नवल पत्तों को चुम-चुम कर मुस्कुराना सिखा रही हैं ।

प्रातःकाल में प्रकृति शांत थी । रात भर चमककर तारे अपनी चमक खो रहे थे । पेड-पौधे भी निस्तब्ध थी । चारों और अंधकार फैला हुआ था अचानक उसी समय कोकिला स्वागत गीत गाने लगी । कवि पुछ रह है, हे कोयल । तुम्हे कैसे पता चला की सुर्योदय हुआ है । इसप्रकार कवि प्रकृति का सुंदर वर्णन करते है । प्रकृति के माध्यम से ईश्वर की प्रशंसा करते हैं । उनकी भाषा सरल सुंदर खडीबोली है ।

Rahul Publications

संदर्भसहित व्याख्याएँ

1. प्रथम रश्मि का आना रंगिणि ।
तुने कैसे पहचाना ?
कहाँ, कहाँ, हे बाल - विहंगिनि !
पाया तूने वह गाना ?

संदर्भ : प्रस्तुत पदयांश ''प्रथमरश्मि'' कविता से लिया गया है । इसके कवि 'सुमित्रानंदन पंत' है । प्रकृति का सौदंर्य - वर्णन करते हैं ।

व्याख्या : कवि पक्षी से पूछता है, तुम अभी नींद से जागे हो, तुम्हें कैसे पता की प्रातःकाल हो रहा है । सुरज की प्रथम किरण इस धरती पर पड रहीं है यह तुने कैसे जाना। हे कोयला ये जो तुम सुंदर गीत गारही हो, यह तुमने कहाँ से सीखा? सुर्योदय की पहचान सबसे पहले तुमको कैसे होती है यह कवि पुछता है ।

विशेषता : सुकुमार कवि पंत इन नन्हें पक्षीयों, तितलीयों से प्रश्न पुछते है, की सुर्योदय की पहचान इन्हें कैसे होती है ।

Rahul Publications

2. शशि - किरणों से उतर-उतरकर,
भू पर कामरूप नभ - चर,
चूम नवल कलियों का मृदु-मुख,
सिखा रहे थे मुसकाना ।

संदर्भ : प्रस्तुत पदयांश ''प्रथमरश्मि'' कविता से लिया गया है । इसके कवि 'सुमित्रानंदन पंत' है । प्रकृति का सौदंर्य - वर्णन करते हैं ।

व्याख्या : कवि कहते हैं, रंग बदलनेवाली तितलीयाँ चंद्र किरणों की तरह जमीन पर उतरकर नव कोमल पत्तों को चुमकर उनको मुस्काना सिखा रही है । प्रकृति का सौदर्य चित्रण किया गया है । प्रातःकाल के समय पर्यावरण शांत रहता है, उसमें पक्षियों की चहचहार से प्रकृति आनंदित है उठती है ।

विशेषता : प्रकृति की गोद में रहकर कवि प्रकृति की सुंदरता का संजीव चित्रण करते है।

दीर्घ प्रश्नोत्तर

1. सुमित्रानंदन पंत का कवि परिचय लिखिए ?

उत्तर :

पंत का जन्म सन् 1900 में अल्मोडा जिले के कौसानी गाँव में हुआ था । वे प्रकृति के सुकुमार कवि माने जाते है । उनकी रचनामें प्रकृति सौदर्य तथा आदर्शवादी विचारधारा दिखाई देती है। 1977 में उनकी मृत्यु हुई । वीणा, ग्रंथि, पल्लव, युगांत - उनकी प्रासिध रचनाएँ हैं । 'चिदंबरा' काव्य के लिए उन्हे ''ज्ञानपीठ पुरस्कार'' मिला । पंत प्रकृति के सौदर्य चित्रण करते हैं ।

2. कवि ने प्रातः काल का वर्णन किस प्रकार किया है ?

उत्तर :

पंत 'प्रकृति के सुकुमार कवि' है वे प्रातः काल का सुंदर वर्णन करते हैं । सुर्योदय के समय प्रकृति का सुंदर रूप चित्रित करते हैं । सुरज की प्रथम किरण धरती के छुते ही कितने सूंदर परिवर्तन होते है , पक्षीयों की गीत, नन्ही कलियों का मुस्काना । कोयल का स्वागत गीत गाना । चंद्र के किरण से तितलीयों का नहाना । रात के चमकीले सितारे मंद पडना फिर सुर्योदय होना इन सबका सुंदर चित्रण कवि करते है । कवि आश्चर्यचकित है, की इन सबने कैसे जाना की सुर्योदय हो रहा है ।

Rahul Publications

एक शब्द में उत्तर लिखिए

1. प्रथम - रश्मि कविता के कवि कौन है?

उत्तर :

सुमित्रानंदन पंत ।

---

2. किस काव्य के लिए पंत को 'ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला?

उत्तर :

चिदंबरा ।

3. 'प्रथम-रश्मि' कविता में कौन स्वागत गीत गा रहे है ?

उत्तर :

कोयल ।

4. 'प्रथम-रश्मि' कविता में पक्षियों के घोंसलो के पास कौन पहरा दे रहे थे ?

उत्तर :

जुगनु ।

Rahul Publications

आधुनिक काव्य 3

दान-बल

कवि - रामधारी सिंह दिनकर

कवि परिचय

हिंदी के ओजस्वी कवि श्री रामधारी सिंह दिनकर का जन्म 1908 ई. में बिहार के मुंगेर जिले के सिमरिया नामक गाँव में एक किसान परिवार में हुआ था। उनकी प्रारंभिक शिक्षा घर पर ही हुई थी । उन्होंने पटना विश्वविद्यालय से बी.ए. आनर्स की परीक्षा पास की । बाद मे कुछ समय तक उन्होंने अध्यापन का कार्य किया । वे बिहार राज्य सरकार में सब रिजिस्ट्रॉर के पद पर नियुक्त हुए । उन्होंने कुछ समय तक लंगरसिंह पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज में हिंदी विभाग के अध्यक्ष के रूप में काम किया । उन्होंने भागलपुर विश्वविद्यालय के उपकुलपति के रूप में भी कार्य किया । पैरिस के विश्वकवि सम्मेलन में उन्होंने भारत का प्रतिनिधित्व भी किया ।

दिनकर जी को 'पद्म भूषण' की उपाधि से अलंकृत किया गया। उनकी पुस्तक संस्कृति के चार अध्याय, के लिए उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला । 'उर्वशी' काव्य पर उनको भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गाया । सन् 1952 में उन्हें राज्य सभा सदस्य के रूप में मनोनीत किया गया । सन् 1970 में उन्हें भारत सरकार के गृह मंत्रालय में हिंदी सलाहकार के रूपमें नियुक्त किया गया । दिनकर जी का स्वर्गवास 1974 ई. में हो गया ।

Rahul Publications

संदर्भसहित व्याख्याएँ

1. **ऋतु के बाद फलों का रूकना डालों का सड़ना है,**
मोह दिखाना देय वस्तु पर आत्मघात करना है ।
देते तरू इसएि कि रेशों में मत कीट समायें
रहें डालियाँ स्वस्थ और फिर नये - नये फल आयें ।

संदर्भः यह पदय् 'दान-बल' नामक कविता से लिया गया है । यह कविता 'रश्मिरथी' नमाक काव्य से लिया गया है । इस कविता के कवि 'पदम् भूषण' श्री रामधारी सिंह दिनकर है । दिनकर को 'उर्वशी' काव्य पर भारतीय ज्ञानपीठ पूरस्कार

मिला । उनकी रचनाएँ रेणुका, हुकार कुरूश्रेत्र, रश्मिरथी, उर्वशी प्रमुख है । इस कविता में कवि दान की महानता और उससे जीवन की संपूर्णता पर ध्यान दिया गाया है ।

व्याख्या : इस कविता में कवि दान के महत्व को समझाते हुए वृक्ष का उदाहरण दे रहे है । वृक्ष ऋतु जाने के बाद स्वयं अपने फलों को छोड देता है अगर नहीं छोडता तो वे फल डालों पर ही सड जाते है और उसमें से कीडे निकलकर सारे वृक्ष का नाश हो जाता है । अगर वह वृक्ष समय पर फल छोडता है, तो उसके बीजों से नये पौधे और नये फल पैदा होते है । असल में दान देना जीवन की सहज प्रक्रिया है । जो लोग संपत्ति रोक कर दान नहीं देते समय पर वे मृतक के समान माने गए है । अधिक संपत्ति होते हुए भी वह किसी के काम न आए तो उस संपत्ति होते हुए भी वह किसी के काम न आए तो उस संपत्ति पर धिक्कार है । समय पर दिया गया दान ही मुल्यवान है ।

विशेषता : दान करना मानव का सहज स्वभाव होना चाहिए । न की इसे उपकार समझना है । इस कर्तव्य का पालन सभी को करना है । दान से बढ़कर और कुछ भी नहीं है ।

Rahul Publications

2. **दान जगत का प्रकृत धर्म है, मनुज व्यर्थ डरता है,**

एक रोज तो हमें स्वयं सब-कुछ देना पड़ता है ।

बचते वही, समय पर जो सर्वस्व दान करते हैं,

ऋतु का ज्ञान नहीं जिनको वे देकर भी मरते हैं ।

संदर्भः यह काव्य पांक्तियाँ 'दान-बल' नामक कविता से लिया गया है । यह कविता 'रश्मिरथी' नामक कविता से लिया गया है । इस कविता के कवि 'पद्म - भूषण' श्री रामधारी सिहं दिनकर है । दिनकर को उर्वशी काव्य पर ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला । उनकी रचनाएँ :- रेणुका, हुँकार, रसवंती, कुरूश्रेत्र, रश्मिरथी, उर्वशी प्रमुख रचनाएँ है । इस कविता में कवि ने दान की महानता और उससे जीवन की संपूर्णता के बारे में बताया है ।

व्याख्या : कवि का मानना है कि दान प्राकृतिक धर्म है दान देने में मनुष्य व्यर्थ ही डरता है । हर एक को किसी न किसी दिन सब छोडकर जाना है । इसलिए समय का ज्ञान रखकर हमें सब कुछ समय पर दान देना चाहिए । मरने के बाद सब कुछ छोडकर जाने पर उसकी कोई भी महानता नहीं है । समय पर दान करने से ही उसका बल अर्थात महानता होती है । मरने के बाद देने से उसका कोई फल नहीं मिलता इसीलिए दान-बल सबके लिए आवश्यक है । जो संपत्ति किसी जरूरत मंद के काम न आए ऐसी संपत्ति व्यर्थ है । इसप्रकार हमें दान करने के महत्व को आसान उदाहरणो से समझाते है ।

विशेषता : कवि का कहना है कि दान देने से ही मानव जीवन निरंतर रूप से आगे चलता है । दानबल की श्रेष्ठता आसान शब्दों में समझाते है ।

दीर्घ प्रश्नोत्तर

1. 'दान-बल' कविता का सारांश पाँच-छः वाक्यों मे लिखिए ।

उत्तर :

लेखक परिचय

'दान-बल' कविता के कवि रामधारी सिंह दिनकर है । इस कविता को 'रश्मिरथी' काव्य से लिया गया है । इस कविता में कवि दान की महानता, स्वाभाविकता और समय पर दान करने पर बल देते हैं ।

सारांश

कवि कहते है कि दान देने से ही मानव जीवन निरंतर रूप से आगे बढ़ती है । दान बल से स्नेह, ज्योति उज्ज्वल रूप से जलती है । एक दुसरे की मदद की भावना अधिक बलशाली बनती है । वृक्ष अपना फल त्यागने से ही स्वस्थ रहता है और उस फल के बीज से ही नए पौधे उगते हैं । नदि पानी को देकर दूसरों को जीवन देती है । और उसके भाष्प से फिर पानी बरसकर नदी में ही मिल जाता है । इसप्रकार दान देना एक सहज प्रक्रिया है । समय पर दान देने से ही उसकी महानता रहती है, मरने के बाद दान देने से कोई फल नहीं मिलता है,क्योंकी समय किसी के काम न आए तो वह व्यर्थ है । इसीलिए दान-बल सबके लिए आवश्यक है ।

Rahul Publications

लघु प्रश्नोत्तर

1. 'दान-बल' कविता में फलों का दान करने से पेड को क्या लाभ होता है ?

उत्तर :

दान देना सहज क्रिया है । कवि कहते है कि वृक्ष फल देता है यह कोई दान नहीं, यदि ऋतु चले जाने के बाद वृक्ष फल नहीं छोडता है तो फल उसी डाल पर सड़ जाते हैं । इससे कीडे लगकर पूरा पेड़ नष्ठ हो जाता है । वही पेड अगर फल समय पर गिराता है तो उस फल के बीज से नए - नए पौधे उगते हैं और नए फल भी लगते हैं । इसप्रकार कवि समय पर दान करने की सलाह देते है ।

2. दिनकर के अनुसार दान देने से नदी को क्या लाभ होता है ।

उत्तर :

दिनकर दान की महानता के बारें में नदि का उदाहरण देकर समझाते हैं । नदी अपने में पानी को सोखकर नही रखती । वह पानी का त्याग करके हमें जीवन देती है । पशु-पक्षी मनुष्य, सारे जीव जतुओं की प्यास बुझती हैं । गर्मी में नदी का पानी भाँप बनकर बादलों का रूप ले लेता है और वर्षा ऋतु में बरसकर उसी नदी में मिल जया हैं । उसीप्रकार मनुष्य को समय पर दान करने से उस दान का फल मिलता है ।

Rahul Publications

एक शब्द में उत्तर लिखिए

1. दान-बल कविता के कवि कौन है ?

उत्तर :

दान-बल कविता के कवि 'श्री रामधारी सिंह दिनकर' है ।

---

2. किस काव्य के लिए दिनकर को ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला?

उत्तर :

'उर्वशी' काव्य पर मिला ।

3. 'दान-बल' कविता के कवि के अनुसार किसकी किर्ति प्रतिष्ठा हमेशा रहती है ?

उत्तर :

कवि के अनुसार 'दानी व्यक्ति' की प्रतिष्ठा हमेशा रहती हैं ।

4. 'दान-बल' कविता किस काव्य से लिया गया है ?

उत्तर :

दान बल कविता 'रश्मिरथी' काव्य के चतुर्थ सर्ग से लिया गया है ।

Rahul Publications

आधुनिक गद्य

1.	शिष्टाचार	-	**रामाज्ञा द्विवेदी समीर**
2.	अपराजिता	-	**गौरा पंत शिवानी**
3.	गिल्लू	-	**महादेवी वर्मा**
4.	बतुकम्मा	-	**संपादक मंडल**

Rahul Publications

आधुनिक गद्य

1

शिष्टाचार

लेखक - रामाज्ञा द्विवेदी 'समीर'

लेखक परिचय

रामाज्ञा द्विवेदी 'समीर' का जन्म सन् 1902 में अम्लिया, जिला फैजाबाद, उत्तर प्रदेश में हुआ । वे सीतापुर के मूल निवासी थे । वे 'समीर' उपनाम से साहित्यिक रचनाएँ करते थे । इनका सबसे बडा योगदान अवधी भाषा में निर्मित 'अवधी शब्दकोश' था । इसमें उन्होंने 15000 शब्दों का संग्रह किया था । इसका प्रकाशान हिंदी साहित्य के प्रसिद्ध प्रकाशक हिंदुस्तानी अकादमी, इलाहाबाद ने सन् 1955 में किया था । हिंदी के शब्द भंडार को समृद्ध करने की दृष्टि से उन्होंने अवधी शब्दकोश का निर्माण किया था । हिंदी की उपभाषाओं में ऐशे कई शब्द हैं जिनके समानार्थी वर्तमान मानक हिंदी में नहीं मिलते । इनको व्यापक रूप में प्रयोग में लाने से हिंदी की अभिव्यक्ति की क्षमताएँ बढेंगी । इस दृष्टि से उन्होंने हिंदी भाषा के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है । आज भी हिंदी की उपभाषा अवधी से संबंधित किसी भी रचना को अच्छी तरह से समझने के लिए इस शब्दकोश का उपयोग किया जाता है । इसके अतिरिक्त उन्होंने कईं फुटकल रचनाएँ भी की है ।

शिष्टाचार - सारांश

मेरे पड़ोस में दो बच्चे रहते है - प्रदीप और भुवन । प्रदीप जब कभी मेरे पास आता है, पहले हाथ जोड़कर नमस्ते करता है, फिर 'चाचा जी' कहकर मुझसे बात करता है । बड़े ही मृदुल और शांत स्वर में वह बोलता है । किंतु भुवन दूसरी ही तरह से बात करता है । दूर से ही चिल्लाता हुआ आता है, ''मुन्नी के बाबूजी, आपको मेरे बाबूजी बुला रहे हैं ।''

आसपास के सभी लोग प्रदीप की प्रशंसा करते नहीं थकते और भुवन के व्यवहार पर सबको हँसी आ जाती है । यों भुवन पढ़ने में तेज़ है और प्रदीप की अपेक्षा उसका स्वास्थ्य भी अधिक अच्छा है, फिर भी लोगों की प्रशंसा का पात्र प्रदीप ही है । इसका कारण यह है कि प्रदीप का बोल-व्यवहार लोगों का मन लुभा लेता है । दूसरे शब्दों में यों कहें कि प्रदीप का व्यवहार शिष्ट है जबकि भुवन का अशिष्ट ।

शिष्ट + आचार = अच्छा - व्यवहार

Rahul Publications

समाज में सभ्य बनकर रहने के लिए शिषटाचार के नियम अवश्य जानने चाहिए और उन्हें अपनी आदत में सम्मिलित कर लेना चाहिए । यह भी ध्यान रखना चाहिए कि अलग - अलग समाजों मे ं शिष्टाचार के नियम भिन्न - भिन्न हैं, यद्यपि उनके आधांर प्रायः समान ही हैं ।

शिष्टाचार का सबसे पहला गुण है, विनम्रता । हमारी वाणी में, हमारे व्यवहार में विनम्रता घुली होनी चाहिए । इसीलिए किसी बड़े के बुलाने पर 'हाँ', 'अच्छा', 'क्या' न कहकर 'जी हाँ' या 'जी नहीं' कहना चाहिए । किसी की बात का उत्तर ऐसे नहीं देना चाहिए कि सुननेवालों को लगे कि लट्ठ मारा जा रहा है ।

विनम्रता केवल भाषा की वस्तु नहीं । हमारे कर्म में भी विनम्रता होनी चाहिए । अपने यहाँ किसी के आने पर हमें उसका प्रसन्नता से स्वागत और यथोचित सत्कार करना चाहिए । अपने से बड़े व्यक्तियों के बैठ जाने के बाद ही हमें बैठना चाहिए । महिलाओं के प्रति हमारे व्यवहार में और भी विनम्रता का होना आवश्यक है । बस या रेल में किसी महिला को खड़ी देखकर अपनी सीट उन्हें बैठने के लिए दे देना शिष्ट आचरणा है ।

विनम्रता और दिनता में अंतर है । विनम्र होते हुए भी हम अपने स्वाभिमान की रक्षा कर सकते हैं । विनम्र व्यवहार का अर्थ चापलूसी नहीं है । यदि कभी यह महसूस हो कि जिसके प्रति हम विनीत हैं वह हमारा तिरस्कार कर रहा है अथवा हमें दीन-हीन जानकर हमारे प्रति दया की भावना प्रकट कर रहा है, तो उसकी कृपा प्राप्त करने की चेष्टा हमें नहीं करनी चाहिए ।

शिष्टाचार का दूसरा विशेष गुण है दूसरों की निजी बातों में दखल न देना । हर व्यक्ति का अपना एक निजी जीवन होता है । इसीलिए हमें अकारण किसी से उसका वेतन, उम्र, जाति, धर्म आदि पूछने से बचना चाहिए । यदि कोई कुछ लिख रहा है तो झाँक - झाँककर उसे पढ़ने की चेष्टा करना उजड्डपन कहा जाएगा । किसी के घर या दफ्तर जाने पर उसकी वस्तुओं क बिना पूछे उलटने-पुलटने लगना अशिष्टता है ।

शिष्टता का तीसरा आधार अनुशासन का पालन है । अनुशासन समाज के नैतिक नियमों का भी हो सकता है और कानून की धाराओं का भी । उदाहरण के लिए किसी मंदिर, गुरूद्वारे या मस्जिद में जाने के पहले जूते उतार देना धार्मिक अनुशासन का पालन है । सड़क पर बाई और चलना या जहाँ जाना मना हो, वहाँ न जाना, कानून के अनुशासन का पालन है । समय का पालन करना सामाजिक नियमों का पालन है । ठीक समय पर कहीं पहुँचना अनुशासन भी सिखाता है और लाभ भी पहुँचाता है ।

संक्षेप में हम कह सकते हैं कि शिष्टाचार वह व्यवहार है जिसके करने पर दूसरों के तथा अपने मन को प्रसन्नता होती है । इसके विपरीत अशिष्ट व्यवहार से दूसरों का दिल दुखता है और उससे अंत में हानि भी होती है ।

తెలుగు అనువాదం

ప్రస్తుతం మనం చదువుకున్న ఈ పాఠం రామాజ్ఞ ద్వివేదీ సమీర్ గారు వ్రాసిన ఒక సామాజిక వ్యాసం. ఈనాడు సమాజంలో నైతిక విలువలు కనుమరుగైపోతున్నాయి. సమాజంలో వ్యక్తు మధ్య మంచి ఆచరణ కనిపించడం లేదు. ఈ మంచి నడవడికను ఎలా అవరచుకోవాలో కూడా ఆయన ఈ వ్యాసంలో విశదీకరించాడు. మంచి నడవడికను కొన్ని గుణాలు ఉంటాయని తెలిపారు.

హిందీలో శిష్టాచార్ అనగా మంచి ఆచరణ (లేక) మంచి నడవడిక అని అర్థం. ఏ సమాజమైన అభివృద్ధి చెందాలంటే ఈ లక్షణం తప్పనిసరి. శిష్టాచార్ రెండు శబ్దముల యొక్క కలయిక అవే శిష్ట్. అచార్. శిష్ట్ అనగా మంచి, అచార్ అనగా (వ్యవహారం) ఆచరణ అని అర్థం. మనం ఎవరితో మాట్లాడుతున్నాం. ఎక్కడ మాట్లాడుతున్నాం. ఎందుకు మాట్లాడుతున్నాం అనే విషయాలు ఎల్లప్పుడు గుర్తుంచుకోవాలి. మనం మాట్లాడే విధానం ద్వారా మనం ఎలాంటి వారము అని ఎదుటి వారు మనల్ని అంచనా వేస్తారు. కాబట్టి ఎవరితో మాట్లాడిన కొన్ని నియమాలను మనం గుర్తుపెట్టుకోవాలి కొన్ని కొన్ని సమాజలలో వారి ఆచరణలు, మాట్లాడే తీరు, నవడిక భిన్నంగా ఉంటుంది.

మంచి ఆచరణకు ఉండవలసిన మొదటి గుణం వినమ్రత, ఎదుటివారితో మనం మాట్లాడే విధానం చక్కగా ఉండాలి. ఎదుటి వారిని ఆకర్షించునట్లు తియ్యని మాటాలు మాట్లాడాలి. పరుషమైన మాటాలు మాట్లాడకూడదు. పెద్దవారితో మాట్లాడేటప్పుడు అలాగేనండి, కాదండి, అవునండి ఇలా గౌరవంగా మాట్లాడాలి. వినేవారు మనల్ని మెచ్చుకునేటట్లుగా ప్రవర్తించాలి. వినమ్రత కేవలం పెద్దవారితో కాదు మన తోటి వారితో సమవయస్కులతో కూడా అదే భావన కలిగి ఉండాలి. స్నేహభావన కలిగి ఉండాలి. కఠినమైన, కర్కశమైన మాటాలకు మన మనసులో తావు ఇవ్వరాదు. వినమ్రత మాటాలలోనే కాక చేతలలో కుడా ఉండాలి. మనకన్నా పెద్దవారు ఉన్నప్పుడు వారు ఆసీసులు అయిన తరువాతే మనం కుర్చీలో కూర్చోవాలి. స్త్రీల పట్ల కూడా గౌరవభావన కలిగి ఉండాలి. బస్సు మరియు రైళ్ళలో ఎవరైన స్త్రీలు మరియు పెద్దవారు నిలబడి ఉంటే వారిని వచ్చి మన సీటులో కూర్చోమని చెప్పడం మంచి ఆచరణ, పెద్దవారితో నడిచేటప్పుడు వారి వెనుక నడవడం ఒక మంచి పద్ధతి. తలుపు వద్దకు రాగానే తలుపు తీయడం చిన్నవారి కర్తవ్యం. పెద్దలను తప్పక గౌరవించాలి.

మంచి నడవడిక యొక్క రెండవ గుణం ఇతరుల సొంత వ్యవహారంలో తలదూర్చక పోవడం. ప్రతి వ్యక్తికి వారి యొక్క సొంత ఆలోచనలు. పనులు ఉంటాయి. అందుకే మనం ఎవరిని వారి యొక్క జీతం, వయస్సుఇ మతం, కులం గురించి అడుగరాదు. ఎవరైనా ఏదైనా వ్రాస్తున్నప్పుడు దాన్ని తొంగితొంగి చూడరాదు. ఎవరి ఇంటికైన వెళ్లినప్పుడు వారి అనుమతి లేకుండా వారి వస్తువులను ముట్టుకోవడం లేక మార్చడం చెయరాదు. ఎవరి పేరు అయినా వ్రాసేటప్పుడు శ్రీ, శ్రీమాన్, శ్రీమతి, కుమారి లాంటవి ఉపయోగించాలి. కొందరు పేరు చివర జీ అని ఉంచుదురు. ఎవరైన మన కోసం కష్టపడి ఏదైనా పనిచేస్తే వారికి మనం కృతజ్ఞత తెలియచేయాలి. అన్నింటికంటే సులువైన పద్ధతి ధన్యవాదములు తెలియచేయడం. బస్సులో లేక రైలులో ఎవరైన మనల్ని కూర్చోమని స్థానం చూపినట్లయితే వారికి ధన్యవాదములు తెలియచేయుట మన కర్తవ్యం.

మంచినడవడిక మూడవ లక్షణం క్రమశిక్షణ. క్రమశిక్షణ అనేది ప్రతి సమాజంలో చట్టంలో, పనులలో ఉంటుంది. ఏదైనా గుడికి, మసీదు, చర్చికి వెళ్ళినప్పుడు పాదరక్షణలు బయట వదిలి పెట్టడం ఒక క్రమశిక్షణ నియమం. ఇది ఎవరు మనకు చెప్పకపోయినా మనం ఆచరిస్తున్నాము. క్రమశిక్షణ మన సమాజంలో జీర్ణించుకుపోయింది. ఏదైనా సభకు వెళ్ళినప్పుడు, బహిరంగ ప్రదేశాలలో పెద్దగా అరవడం వంటి పనులు చేయరాదు. రోడ్డుపై వెళ్ళేటప్పుడు నియమాలని పాటించడం మనకు మంచిది. పెద్దవారి ముందు కాళ్ళు చాపుకోవడం మంచి అలవాటు కాదు. ఎదుటివారు మాట్లాడేటప్పుడు మాటను ఖండిచకూడదు. రాష్ట్రీయగీతం పాడేటప్పుడు కూర్చోవడం, ఊగడం, నవ్వడం వంటివి చేయరాదు. మనం మనసులో సహనం పాటించడం అత్యవసరం.

చివరగా ఒకటే మాట మీకు తలుపదలచినది ఏమిటంటే మంచి ఆచరణ అనగా మనం చెయడం వలన పాటించడం వలన మనకు మరియు ఎదుటి వారికి మనసులో సంతోషం కలగాలి. చెడు ఆచరణతో ఎవరి మనసు కష్టపెట్టకూడదు. ఎవరికి హాని చేయవద్దు.

నీలో ఎన్ని లోపాలున్నా, బలహీనుతలున్నా, నిన్ను నువ్వు ఎలా ప్రేమిస్తావో, సమర్ధించుకుంటావో అలాగే ఎదుటివారి లోపాలను, బలహీనతలను అర్ధం చేసుకుంటే అందరూ మంచిగానే కనిపిస్తారు. అందరూ నీవారవుతారు.

संदर्भसहित व्याख्याएँ

1. विनम्रता केवल बड़ो के प्रति नहीं होती, बराबर वालों और अपने से छोटों के प्रति भी नम्रता और स्नेह का भाव देना चाहिए ।

संदर्भ : प्रस्तुत वाक्य 'शिष्टाचार' नामक निबंधात्मक पाठ से लिया गया है । इसके लेखक 'रामाज्ञा दिववेदी' समीर है । हिंदी के शब्द भंडार को समृध्द किया 'अवधि शब्दकोश' का निर्माण करके । इसमें 15000 शब्दों का संग्रह है।

व्याखया : 'विनम्रता' शिष्टाचार का प्रथम लक्षण है । किसीके बुलाने पर हाँ, नहीं न कहकर 'जी हाँ' या जी नहीं, कहकर उत्तर देना चाहिए । विनम्रता केवल बड़ो के प्रति ही नहीं बल्कि अपने से छोटों या बराबर वालों के प्रति भी स्नहे और नम्रता का भाव होना चाहिए । किसी बात का उत्तर ऐसे नही देना चाहिए कि सुननेवालों को लगे की लठठ् मारा जा रहा है । सभी से बोलते हुए हमारी वाणी में मिठास रहनी चाहिए । कटूता या कर्कशता नहीं। महिलाओ के प्रति हमारे व्यवहार में और भी विनम्रता होनी चाहिए।

विशेषताएँ : 'विनम्रता' केवल भाषा की वस्तु नहीं बल्कि हमारे कर्म में भी 'विनम्रता' होनी चहिए । विनम्र होते हुए भी हम अपने स्वाभिमान की रक्षा कर सकते है । 'शिष्टाचार' व्यक्ति ही समाज में गौरव पा सकता है ।

Rahul Publications

2. यदि कोई कुछ कष्ट या असुविधा उठाकर हमारे लिए कोई काम करता है तो हमें उसके प्रति अपनी कृतज्ञता अवश्य प्रकट करनी चाहिए ।

संदर्भ : 'प्रस्तुत वाक्य' शिष्टाचार नामक निबंधात्मक पाठ से लिया गया है । इसके लेखक रामाज्ञा दिववेदी 'समीर' है । इन्होंने अवधि भाषा में निर्मित 'अवधि शब्दकोश' का निर्माण करके हिंदी शब्द भंडर में वृध्दि् की । इसमें १५००० शब्दों का संग्रह है ।

व्याखया : अगर कोई कष्ट उठाकर हमारी मदद करते है । उनके प्रति हमें कृतज्ञता चाहिए । इसका सबसे सरल तरीका है उसे 'धन्यवाद' देना । 'धन्यवाद' बोलते समय ऐसा लगना चाहिए कि हम उसे हदय सें 'धन्यवाद' दे रहे है, केवल उपर-उपर से नहीं । हमारे कठिन समय में जो व्यक्ति मदद करता है। समय आनेपर हमें भी उनकी मदद करनी चाहिए ।

विशेषताएँ : 'शिष्टाचार' का व्यवहार करने से अपने तथा दूसरों के मन को प्रसन्नता होती है । जब कोई बात हमें न मालुम हो और दूसरों के दवारा हमें ज्ञात हो, तब हमें उन्हें । धन्यवाद कहना चाहिए । यही शिष्टाचार का सबसे महान गुण है।

दीर्ध प्रश्नोत्तर

1. 'शिष्टाचार' निबंध का साराशं लगभग पाँच - छः वाक्यों में लिखिए ।

उत्तर :

लेखक परिचय

'शिष्टाचार' निबंधात्मक पाठ के लेखक रामाज्ञा दिववेदी 'समीर' है । 'समीर' उपनाम से वे रचनाएँ करते हैं । इनका जन्म 1902 में अम्लिया जिला फैजाबाद, उत्तर प्रदेश में हुआ । इनका सबसे बडा योगदान अवधि भाषा में निर्मित 'अवधि शब्दकोश', है । इसमें उन्होंने 15000 शब्दों का संग्रह किया है । हिंदी के शब्द-भंडार को समृदद किया ।

सारांश

समाज में सभ्य बनकर रहने के लिए 'शिष्टाचार' के नियम अवश्य जानने चाहिए और इसे अपनी आदत बनानी चहिए। शिष्टाचार का सबसे प्रथम गुण है , 'विनम्रता'। हमारी बातों में और व्यवहार में विनम्रता होनी चाहिए । इसीलिए किसी बड़े के बुलाने पर हाँ, नहीं, क्या न कहकर 'जी हाँ' 'जी नहीं' चाहिए । विनम्रता केवल बडो के प्रति ही नही बल्कि बराबर वालों और अपने से छोटों के प्रति नम्रता तथा स्नेह का भाव होना चाहिए । महिलाओं के प्रति हमारे व्यवहार में विनम्रता होनी चाहिए ।

Rahul Publications

शिष्टाचार का दूसरा गुण है, दुसरों की निजी बातो में दखल न देना। हर व्यक्ति का अपना निजी जीवन होत है, इसीलिए हमें बिना कारण किसी से उसका वेतन, उम्र, जाति, धर्म नहीं पुछ ना चाहिए अगर कोई लिख रहा है तो झाँक-झाँकर उसे पढ़ने की चेष्टा नहीं करनी चाहिए।

यदि कोई कुछ कष्ट या असुविधा उठाकर हमारे लिए कोई काम करता है तो हमें उसके प्रति अपनी कृतज्ञता अवश्य प्रकट करनी चाहिए। इसका सबसे सरल तरीका है, उसे 'धन्यवाद' देना।

शिष्टाचार का तीसरा आधार 'अनुशासन' का पालन करना। अनुशासन समाज के नैतिक नियमों का और कानून की धाराओं का पालन करना है। उदाहराण किसी मंदीर, मस्जिद या गुरूदवारे में जाने से पहले जुते उतार देना धार्मिक अनुशासन का पालन है। सडक पर बाई और चलना या जहाँ मना हो वहाँ न जाना कानून के अनुशासन का पालन है। ठीक समय पर कहीं पहुँचना अनुशासन सिखाता है।

संक्षेप में हम कह सकते है कि शिष्टाचार वह व्यवहार है जिसके करने पर दूसरो के तथा अपने मन को प्रसन्नता होती है। इसके विपरीत अशिष्ट व्यवहार से दूसरों का दिल दुखता है और अंत में हानि भी होती है।

---

2. 'शिष्टाचार' के कितने गुण है ? वे कौन कौन से है ?

उत्तर :

'शिष्टाचार' के प्रमुख तीन गुण है :-

1. विनम्रता
2. दूसरों की निजी बातो में दखल नदेना
3. अनुशासन

'शिष्टाचरा' का प्रथम गुण है, ''विनम्रता''। विनम्रता केवल भाषा की वस्तु नहीं, कर्म में भी 'विनम्रता' होना जरूरी है हमारी बोली तथा व्यवहार में विनम्रता होनी चाहिए। केवल बडों के प्रति भी स्नेहे तथा नम्रता का भाव होना चाहिए। महिलाओं के प्रति भी श्रद्धा और गौरव भाव होनी चाहिए।

Rahul Publications

'शिष्टाचरा' का दूसरा गुण है, दूसरों के निजी बातों में दखल न देना, इसीलिए बिना कारण किसी से उसका वेतन, उम्र, धर्म, जाति नहीं पूछना चहिए ।

'शिष्टाचरा' का तिसरा आधार है 'अनुशासन' का पालन करना अनुशासन समाज के धार्मिक, नैतिक नियमों का और कानून की धाराओं का हो सकता है । ठीक समय पर कही पहूँचाना अनुशासन सिखाता है ।

लघु प्रश्नोत्तर

1. 'अनुशासन' के पालन पर विचार व्यक्त किजिए ।

उत्तर :

समाज में सभ्य बनकर रहने के लिए 'शिष्टाचार' के नियमों का पालन करना आवश्यक है। अनुशासन नैतिक या धार्मिक और कानून की धाराओं का हो सकता है । हमारे जीवन में अनुशासन का बहुत महत्व है यह हमें नियमों का पालन करना सिखाता है । मनुष्य एक समाजिक प्राणी है , जो कि समाज में रहता है और उसमें रहने के लिए अनुशासन का पालन आवश्यक है। अनुशासन हमारी सफलता की सीढी है । अनुशासन के बिना जीवन निष्क्रीय है कोई भी कार्य पूर्ण करने के लिए अनुशासन मदद करता है । और हमारे जीवन में सफलता लाता है । हमें समाज के नियमों का पालन करने और सही तरीके व्यवहार करना चाहिए । हमें अपने जीवन में अनुशसन को महत्व देना चाहिए । जो लोग जीवन में अनुशासित नहीं है, उन्हें कई सारी समस्याओ का सामना करना पडता है तथा उन्हें जीवन में निराशा ही मिलती है । प्रकृति कभी अनुशासन का उल्लंघन नहीं करती और हम भी प्रकृति के अभिन्न अंग है, इसीलिए हमें सदैव अनुशासन का पालन करना चाहिए । यह आदत बच्चों में बचपन से ही होनी चहिए । अनुशासन ही सफलता की कुंजी है ।

Rahul Publications

एक शब्द में उत्तर लिखिए

1. समाज में सभ्य बनकर रहने के लिए कौन से नियम जानना आवश्यक है ?

उत्तर :

शिष्टाचार के नियम ।

2. शिष्टाचार का सबसे पहला गुण क्या है ?

उत्तर :

विनम्रता ।

3. शिष्टाचार का दूसरा विशेष गुण क्या है ?

उत्तर :

दूसरों की निजी बातों में दखल न देना ।

4. शिष्टता का तीसरा आधार क्या है ?

उत्तर :

अनुशासन ।

Rahul Publications

आधुनिक गद्य 2

अपराजिता

लेखिक - गौरा पंत 'शिवानी'

लेखक परिचय

गौरा पंत हिंदी की प्रसिद्ध उपन्यासकार हैं । वे 'शिवानी' उपनाम से लिखा करती थीं । उनका जन्म सन् 1923 में गुजरात के पास राजकोट शहर में हुआ था । शिवानी के पिता श्री अश्विनीकुमार पाण्डे राजकोट में स्थित राजकुमार कॉलेज के प्रिंसिपल थे, जो कालांतर में माणबदर और रामपुर की रियातों मे दीवान भी रहे । शिवानी के माता और पिता दोनों ही विद्वान संगीत प्रेमी और कई भाषाओं के ज्ञाता थे । शिवानी ने पश्चिम बंगाल के शांति निकेतन से बी.ए. किया । साहित्य और संगीत के प्रति एक गहरा रूझान 'शिवानी' को अपने माता और पिता से ही मिला । शिवानी के पितामह संस्कृत के प्रकांड विद्वान पंडित हरिराम पांडे, जो बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में धर्मोपदेशक थे ।

शिवानी की नामचीन रचनाएँ इस प्रकार हैं - 'कृष्णकली', 'कालिंदी', 'अतिथि', 'पूतों वाली', 'चल खुसरों घर आपने', 'श्मशान चंपा', 'मायापुरी'। उनकी अधिकतर कहानियाँ और उपन्यास नारी प्रधान रहे । इसमें उन्होंने नायिका के सौंदर्य और उसके चरित्र का वर्णन बड़े रोचक ढंग से किया ।

Rahul Publications

अपराजिता

कभी-कभी अचानक ही विधाता हमें ऐसे विलक्षण व्यक्तित्व से मिला देता है, जिसे देख स्वयं अपने जीवन की रिक्तता बहुत छोटी लगने लगती है । हमें तब लगता है कि भले ही उस अंतर्यामी ने हमें जीवन में कभी अकस्मात् अकारण ही दंड़ित कर दिया हो किंतु हमारे किसी अंग हमसे विच्छिन्न कर हमें उससे वंचित तो नहीं किया । फिर भी हममें से कौन ऐसा मानव है जो अपनी विपत्ति के कठिन क्षणों में विधाता को दोषी नहीं ठहराता । मैंने अभी पिछले ही महीने, एक ऐसी अभिशप्त काया देखी है जिसे विधाता ने कठोरतम दंड दिया है ।

उसकी कोठी की अहाता एकदम हमारे बँगले के अहाते से जुड़ा था । अपनी शानदार कोठी में उसे पहली बार कार से उतरते देखा, तो आश्चर्य से देखती ही रह गयी ।

धीरे - धीरे मेरा उससे परिचय हुआ। कहानी सुना तो दंग रह गयी। नियति के प्रत्येक कठोर आघात को अति अमानवीय धैर्य एवं साहस से झेलती वह बित्ते - भर की लड़की मुझे किसी देवांगना से कम नहीं लगी। मैं चाहती हूँ कि मेरी पंक्तियों को उदास आँखों वाला वह गोरा, उजले वस्त्रों से सज्जित, लखनऊ का मेधावी युवक भी पढ़े, जिसे मैंने कुछ माह पूर्व अपनी बहिन के यहाँ देखा था। वह आई.ए.एस. की पहीक्षा देने इलाहाबाद गया। लौटते समय किसी स्टेशन पर चाय लेने उतरा कि गाड़ी चल पड़ी। चलती ट्रेन में हाथ के कुल्हड़ सहित चढ़ने के प्रयास में गिरा और पहिये के नीचे हाथ पड़ गया। प्राण तो बच गयें, पर दायाँ हाथ चला गया। उसी विच्छिन्न भुजा के साथ-साथ धीरे -धीरे वह मानसिक संतुलन भी खो बैठा। पहले दुःख भुलाने के लिए नशे की गोलियाँ खाने लगा और अब नूर मंजिल की शरण गया है।

తెలుగు అనువాదం

ప్రస్తుతం మనం చదువుకుంటున్న అపరాజిత అను ఈ కథను శివానీ గారు రచించిరి. అపరాజిత అనే ఈ కథలో శివాని గారు మనకు డాక్టర్, చంద్ర అనే యువతి జీవతమును గురించి తెలియుజేశారు. చంద్ర ఒక వికలాంగ యువతిఈ చంద్రకు 1976వ సంవత్సరంలో మైక్రోబయాలజీలో డాక్టరేట్ పొందిన మొదటి భారతీయురాలు. డాక్టర్ చంద్ర గురించి వారి తల్లిగారు ఈ విధంగా చెబుతున్నారు. చంద్ర చిన్నతనంలో సుమారు 18 నెలల వయసులో సామాన్య జ్వరంగా వచ్చిన జ్వరం నాల్గవ రోజు చంద్ర అవయవాలు ఏమి కదలలేని స్థితికి తూసకువచ్చింది. మెడ నుండి క్రిమద ఉన్న అవయవాలు ఏమి కదపలెని స్థితి. భయంతో చంద్ర తల్లిదండ్రులమైన మేము ఎందరో డాక్టర్లకు చూపించాము. అందరు డాక్టర్లు మీరు అనవసరంగా డబ్బు వృథా చేస్తున్నారు. మీ అమ్మాయి కేవలం జీవితాంతం మెడ తప్ప ఏది కదిలించలేదని చెప్పారు. ప్రపంచంలో ఏ శక్తి మీ అమ్మాయిని బాగచేయలేదని వివరించారు. చంద్ర చేతులలో, కాళ్ళలో ఎటువంటి చలనం లేదు. తల్లిదండ్రులు ఆశ వదలలేదు. ప్రఖ్యాతిగాంచిన ఆర్థోపెడిక్ డాక్టరు వద్దకు తీసుకు వెళ్ళారు. ఒక సంవత్సరం చికిత్స జరిగింది. ఒకరోజు చంద్ర స్వయంగా మెడ మరియు కాళ్ళ మధ్య శరీరంలో చలనం వచ్చింది. చేతులు ఊపి నన్ను పిలిచింది. ఎంతో కష్టం మీద చంద్రకి కూర్చోవడం నేర్పించాను. 5 సంవత్సరాల వరకు అమ్మ అయిన నేనే ఆమె టీచరుని చంద్ర తెలివిగలది. బెంగుళూరులోని ప్రసిద్ధి చెందిన మౌంట్ కార్మెల్ అనే పాటసాలలో ప్రవేశం దొరికింది. తన తల్లి ఒమతి సుబ్రమణ్యం ప్రతి క్లాసులో ఆమెతో ఉండి అమె వీల్‌చెయిర్‌ని తిప్పుతూ ఉండేది. ప్రత్యేక పరీక్షలో చంద్రకి మంచి ర్యాంకు వచ్చింది. స్వర్ణపతకం సాధించింది. బి.యస్.సి.చేసింది. ప్రాణిశాస్త్రంలో

యమ్.ఎస్.సి.లో ప్రథమ స్థానం పొందింది. బెంగుళూరులోని ప్రఖ్యాతి గాంచిన ఇన్స్టిట్యూట్ ఆఫ్ సైన్స్‌లో స్పెషల్ సీటు సంపాదించింది. తన నిష్ఠ, ధైర్యం మరియు సాహసంతో 5 సంవత్సరాలు ప్రొఫెసర్ సెతానా గారి అధ్వర్యంలో శోధన చేసింది. అందరూ ఆమె యొక్క సంతోషకరమైన ముఖం చూసి అశ్చర్యపోయేవారు. ఆమెకు అంగవైకల్యం ఉన్నది అని ఎవరూ అనేవారు కాదు. మన రచయిత్రి మొదటిసారిగా తన బంగళా ప్రక్క ఉన్న బంగళాలో కారు నుండి దిగడం చూసింది. డ్రైవరు వీల్‌చెయిర్ తీసి ముందు ఉంచాడు. కారు నుండి ఒక యువతి తన నిర్జీవమైన క్రింద భాగంతో చాలా నేర్పుగా క్రిందికి దిగి చేతికర్రల సహాయంతో వీల్‌చెయిర్ దాకా వెళ్ళింది. తనకు తానే వీల్‌చెయిర్ నడుపుకుంటూ లోపలికి వెళ్ళింది. ఆమె పేరు చంద్ర. మెల్లమెల్లగా రచయిరతికి ఆమెకు పరిచయం ఏర్పడింది. చంద్ర కథ విన్న రచయిత్రి అశ్చర్యచకితురాలు అయ్యింది. చంద్ర రచయిత్రి కళ్ళకి దేవతా స్త్రీవలె అనిపించింది. చంద్ర ఏనాడు భగవంతున తిట్టలేదు. సామాన్యంగా మనుషులు ఎప్పుడైనా తమకి కష్టం వస్తే భగవంతుని నిందిస్తుంటారు. కాని (తనకి) చంద్రకి భగవంతుడు అంత అన్యాయం చేసినా ఏరోజూ బాధపడలేదు. భగవంతుని నిందించలేదు. మద్రాసు ఐ.ఐ.టి లో ఆమె పనిచేస్తుంది. గర్ల్‌గైడ్‌లో రాష్ట్రపతి ద్వారా బంగారు కార్డు పొందిన మొదటి వికలాంగురాలు (ఆమెకు) చంద్రకి భారతీయ మరియు పాశ్చాత్య సంగీతము అంటే చాలా ఇష్టం.

చంద్ర యొక్క ప్రొఫెసర్ గారు చంద్ర విజ్ఞానశాస్త్రంలో చేసిన కృషిని ఎంతో గొప్పగా మెచ్చుకున్నారు. చికిత్స పరంగా తాను పోగొట్టుకున్నది. విజ్ఞానపరంగా సాధించినది అని చెప్పారు. చంద్ర వద్ద ఒక అల్బమ్ ఉన్నది. దానిలో చివర ఆమె తల్లి ఫోటో పెద్దది ఉంది. ఆమె తల్లిని మెచ్చుకుంటూ జె.సి బెంగుళూరు వారు ఒక బహుమానాన్ని మరియు వీరజనని అను బిరుదు ఇచ్చారు. చంద్ర ల్లి ఒక సభలో చెప్పిన మాటలు రచయిత్రికి ఇప్పటికి గుర్తు ఉన్నాయి. ఆ వాఖ్యలు ఏమిటంటే భగవంతుడు ఒక ద్వారం మూసివేస్తే, వేరొక ద్వారం మనకి చూపిస్తారు. చంద్ర తన శరీరం లోపం గురించి ఆలోచించక కష్టపడి డాక్టరేట్ సంపాదించింది. ఆమె యొక్క ఈ స్థాయి వెనుక ఎంత నిష్ఠ, కఠిన శ్రమ ఉండవచ్చు. ఒక్కసారి మనము అందరం ఆలోచిద్దాం. చంద్ర గొప్ప స్థాయికి రావడానికి ఆమె తల్లి యొక్క సహనం మరియు పట్టుదల కారణం అయి ఉండవచ్చు. అటువంటి గొప్ప వ్యక్తి చంద్ర నుండి సామాన్యులమైన మనం ఎన్నో విషయాలు నేర్చుకోవాలి. ప్రతి పనిలో కష్టం ఉంటుంది. కష్టాన్ని ఎదిరించి ఎవరైతే ముందుకు వెళతారో వారు జీవితంలో ఉన్నత శిఖరాలను చేరుకుంటారు.

संदर्भसहित व्याख्याएँ

1. मेधावी पुत्री की विलक्षण बुद्धि ने फिर मुझे चमत्कृत कर दिया है । सरस्वती जैसे आकर जिह्वाग्र पर बैठ गया थी ।

संदर्भ : प्रस्तुत वाक्य 'अपराजिता' नामक कहानी से दिया गया है । इस कहानी की लेखिका 'गौरा पंत' शिवानी है । उनकी अधिकतर रचनाओं में 'नारी प्रधान' दिखाई देती है । नायिका के सौदर्य के साथ चरित्र चित्रण भी रोचक ढंग से करती है । हिंदी साहित्य की सेवा के लिए भारत सरकार ने१९८२ में उन्हें 'पदमृश्री पुरस्कार' से सम्मानित किया । इस कहानी में एक अपंग युवती का संधर्ष हैं ।

व्याखया : डॉ. चंद्रा एक विकलांग लडकी थी । बचपन मे उसे पोलियो हो गया था। उसके गले से निचला भाग बेजान हो गया था । उसकी माँ ही उसका सबकुछ थी । बडे-बडे डांक्टरों से इलाज करवाया, जिससे उसके उपरी धड में हलचल हुई । निचला धड बेजान ही रहा । माँ ने उसे सहारा देकर उठना-बैठना सिखाया । चंद्रा बहुत ही कुशाग्र बुध्दि् वाली थी । पाँच साल की अवस्था में माँ ही स्कूल बनीं । मेहनत से चंद्रा को बेगलुरू के माऊंट कारमेल में प्रवेश मिला । चंद्रा ने प्रत्येक परिक्षामें सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया। उसे स्वर्ण पदक मिले । प्राणीशास्त्र में एम्.एस्.सी. किया । जिसमें प्रथम स्थान प्राप्त किया । प्रोफेसर 'सेठना' के निर्देशन में पाँच साल तक शोधकार्य किया । अंत में उसे विज्ञान में डाक्टरेठ मिलीगई ।

विशेषताएँ : चंद्रा की विलक्षण बुध्दि् को देखकर सभी आश्चर्य चकित हो जाते । डॉं. चंद्रा जैसे अपंग युवति सबके लिए प्रेरणा है ।

2. ईश्वर सब द्वार एक साथ बंद नहीं करता । यदि एक द्वार बंद करता भी है, तो दूसरा द्वार खोल भी देता है ।

संदर्भ : प्रस्तुत वाक्य 'अपराजिता' नामक कहानी से दिया गया है । इस कहानी की लेखिका 'गौरा पंत' शिवानी है । उनकी रचनाएँ नारी प्रधान होती है। जिसमे सैदंर्य के साथ चरित्र चित्रण भी रोचक ढंग से किया जता है । हिंदी साहित्य

Rahul Publications

की सेवा के लिए भारत सरकार ने १९८२ में 'पदमूश्री पुरस्कार' से सम्मानित किया । इस कहानी में लेखिका डाँ. चंद्रा नामक अपंग युवती की प्रेरणामक संघर्ष बताती है ।

व्याखया : कई बार हम विकलांग लोगो से मिलते है, जिन्हे देखकर हमारे जीवन की समस्याएँ बहुत छोटी दिखती है । क्योंकी भले ही ईश्वर हमें कुछ समस्याएँ दी है परंतु हमारे शरीर के अंग तो नही छीने । फिर भी हम विपत्ती में भगवान को ही दोषी ठहराते है। लेखिका अपंग लडकी को देखती ही, जिसने खुशी से यातनाएँ झेलकर जीवन में संघर्ष किया । सफलता प्राप्त की मगर कभी ईश्वर की निंदा नहीं की । चंद्रा अपनी जीवन की व्यथा पर असंतुष्ठ नहीं होती । चंद्रा की माँ अपने सारे सुख त्यागकर बेटी को ही जीवन समर्पित कर दिया । उनके मुख से उद्गार निकले है । गर्लगाईड में राष्ट्रपति का 'स्वर्ण कार्ड' पानेवाली चंद्रा प्रथम अपंग बालिका थी । चंद्रा के अलबल में अंतिम पृष्ठ पर उसकी माँ का बडा सा चित्र था, जिसमे वे जे.सी. बेगलुरू दवारा प्रदत्त एक विशिष्ट पुरस्कार ग्रहण कर रही है, 'वीर जननी' का पुरस्कार.

विशेषताएँ : कठीन से कठीन परिस्थितीयों में भी मनुष्य अपने साहस, धैर्य और निरंतर कोशिश से प्रगति कर सकता है । चंद्रा से हमें प्रेरणा मिलती है ।

Rahul Publications

दीर्ध प्रश्नोत्तर

1. 'अपराजिता' कहानी का सारांश पाँच-छः वाक्यों में लिखिए ।

उत्तर :

लेखिका परिचय

गौरा पंत हिंदी की प्रसिध्द उपन्यासकार है । वे 'शिवानी' उपनाम से रचनाएँ करती है । उनका जन्म सन् १९२३ में 'गुजरात' के पास राजकोट शहर में हुआ था । 'शिवानी' ने पश्चिम बंगाल के शांति निकेतन से बी.ए किया । साहित्य और संगीत के प्रति गहरा रूझान 'शिवानी' को अपने माता और पिता से ही मिला ।

प्रमुख रचनाएँ

कृष्णकली, कालिंदी, अतिथि, मायापूरी विषकन्या, शिवानी की श्रेष्ठ कहानियाँ, झरोखा, स्मृति कलश, रतिविलाप इ । भारत सरकार ने १९८२ में शिवानी को पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित किया है ।

सारांश

'अपराजिता' कहानी में लेखिका हमें 'चंद्रा' नामक ऐसी युवती की जीवन के बारे में बताती है, जो पोलियो होने से 'अपंग' हो गई और उसका निचला शरीर एकदम निर्जीव हो गया । फिर भी उसने जीवन में हार नहीं मानी और उच्च शिक्षा प्राप्त कर डॉक्टरेट की डिग्री प्राप्त की । उसका उद्म्भ साहस रखने से उसे 'अपराजिता' कहा गया । डॉ. चंद्रा जब डेढ़ साल की थी, तो उसे बुखार के चौथे दिन प्रक्षाघात हुआ तो गरदन के नीचे सर्वाग अचल हो गया । उस दशा में उसकी माँ ने बडे से बडे डॉक्टर को दिखाया । सबने कहा की, व्यर्थ पैसा बरबाद कर रहे है फिर भी हार नहीं मानी । उसके साथ स्कुल में हर समय साया बनकर रही । 'चद्रा' बहुत होशियार बच्ची थी । माँ ही उसकी स्कूल बनीं । मेहनत से बेंगलूरू के 'माउँट कारमेल' में प्रवेश मिला चंद्रा प्रथेक परिक्षा में सर्वोच्च स्थान प्राप्त करती । उसे कई 'स्वर्ण-पदक' मिले । प्राणीशास्त्र में एम्.एस्.सी. किया। जिसमें चंद्रा ने पहला स्थान प्राप्त किया । 'प्रोफेसर सेठना' के निर्देशन में पाँच साल तक शोध कार्य किया अंत में उसे विज्ञान में डाक्टरेट पानेवाली डॉं. चंद्रा प्रथम भारतीय है । सभी लोगों के डॉ. चंद्रा से बहुत सीखना चाहिए । कभी जीवन में निराश नहीं होना चाहिए ।

Rahul Publications

विशेषताएँ

जितने भी जीवम में कष्ट आने पर भी, सभी को हँसते हुए झेलकर अपनी मंजिल की ओर बढ़ना ही इस कहानी का उद्देश्य है । इस कहानी हमें प्रेरणा मिलती है । अंपगो की शिक्षा से जोडना आवश्यक है । वो तमाम बाधाओं का सामना करके अपने आपको सिध्द् करते है ।

लघु प्रश्नोत्तर

1. चंद्रा की किस विषय में रूचि थी । वह क्या बनना चारती थी ?

उत्तर :

चंद्रा डॉक्टर बनना चाहती थी । परिक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर भी चंद्रा को मेडिकल में नहीं मिला । क्योंकी वह अपंग थी । वह एक सफल शल्य-चिकित्सक नहीं बन पाएगी । डॉ चंद्रा

के प्रोफेसर कहते है, ''मुझे यह कहने में रंच मात्र भी हिचकिचाहट नहीं होती कि डॉ. चंद्रा ने विज्ञान की प्रगति में महान योगदान दिया है । चिकिसा ने जो खोया है, वह विज्ञान ने पाया है। ''अर्थात चिकित्सा क्षेत्र में जो काम चंद्रा करना चाहती थी, अब वह विज्ञान में करके दिखा रही है।

2. चंद्रा की माँ को 'वीर जननी' क पुरस्कार क्यों दिया गया ?

उत्तर :

शारदा सुब्रहमण्यम् को 'वीर जननी' का पुरस्कार इसलिए मिला क्योंकी चंद्रा जैसी अपंग बालिका को उसकी माँ ने स्वयं कई यातनाएँ सहकर पढ़ा-लिखाकर उच्चकोटी का वैज्ञानिक बनाया । चंद्रा के अलबम के अंतिम प्रष्ठों में उसकी माँ का बडा सा चित्र जिसमें वे जे.सी. बेंगलूर दवारा प्रदत्त पुरस्कार ग्रहण कर रही है । वीर जननी पुरसकर जिनमें स्वय माँ की व्यथा भी है और पुत्री भी है । अपने सारे सुख त्यागकर, नित्य छाया बनी पुत्री की पहिया बनी कुर्सी के पीथे चक्र सी धुमती जननी की व्यथा दिखाई दे रही थी । आज चंद्रा जो सफल है उसकी वजह माँ है । चंद्रा की माँ एक 'वीर जननी' है ।

एक शब्द में उत्तर लिखिए

1. चंद्रा की कार कौन चलाती थी ।

उत्तर :

चंद्रा की माँ टी. शारदा सुब्रम्हण्यम् ।

2. कौन डॉक्टर बनना चाहती थी ।

उत्तर :

चंद्रा ।

3. चंद्रा की माँ को कौन सा पुरस्कार दिया गया ?

उत्तर :

'वीर जननी पूरस्कार' ।

4. 'अपराजिता' पाठ की लेखिका का नाम क्या है ?

उत्तर :

गौरा पंत शिवानी है ।

Rahul Publications

आधुनिक गद्य 3

गिल्लू

लेखिका - महादेवी वर्मा

कवि परिचय

हिंदी साहित्य की 'आधुनिक मीरा' कहलाने वाली महादेवी वर्मा का जन्म सन् 1907 में फरूखाबद, उत्तर प्रदेश में हुआ। कवि निराला ने उन्हें 'हिंदी के विशाल मन्दिर की सरस्वती' भी कहा है। महादेवी ने स्वतंत्रता के पहले का भारत भी देखा और उसके उसके बाद का भी। वे उन कवियों में से एक हैं जिन्होंने व्यापक समाज में काम करते हुए भारत के भीतर विद्यमान हाहाकार, पीड़ा को देखा, परखा और करूण होकर अन्धकार को दूर करने वाली दृष्टि देने की कोशिश की। न केवल उनका साहित्य बल्कि उनके सामाज सुधारक कार्य और महिलाओं के प्रति चेतना की भावना भी इस दृष्टि से प्रभावित रहे।

महादेवी वर्मा ने मन की पीड़ा को इतने स्नेह और शृंगार से सजाया कि दीपशिखा में वह जन जन की पीड़ा के रूप में स्थापित हुई और उसने केवल पाठकों को ही नहीं समीक्षकों को भी गहराई तक प्रभावित किया।

महादेवी की रचनाएँ हिंदी साहित्य उपवन में सुगंध फैलाती हैं। 'नीहार', 'रश्मि', 'नीरजा', 'सांध्यगीत', 'दीपशिखा', 'प्रथम आयाम', 'अग्निरेखा' रचनाओं में जहाँ उनका काव्य सौंदर्य झलक्ता है।

सोनजुही में आज एक पीली कली लगी है। इसे देखकर अनायास ही उस छोटे जीव का स्मरण हो आया, जो इस लता की सघन हरीतिमा में छिपकर बैठता था और फिर मेरे निकट पहुँचते ही कंधे पर कूदकर मुझे चौंका देता था। तब मुझे कली की खोज रहती थी, पर आज उस लघुप्राण की खोज है।

परंतु वह तो अब तक इस सोनजुही की जड़ में मिट्टी होकर मिल गया होगा। कौन जाने स्वर्णिम कली के बहाने वही मुझे चौंकाने ऊपर आ गया हो।

अचानक एक दिन सवेरे कमरे से बरामदे में आकर मैंने देखा, दो कौवे एक गमले के चारों ओर चोंचों से छूआ - छुऔवल जैसा खेल खेल रहे हैं। यह काकभुशुंडि भी विचित्र पक्षी है - एक साथ समादरित, अनादरित, अति सम्मानित, अति अवमानित।

Rahul Publications

मेरे काकपुराण के विवेचन में अचानक बाधा आ पड़ी, क्योंकि गमले और दीवार की संधि में छिपे एक छोटे - से जीव पर मेरी दृष्टि रफक गई । निकट जाकर देखा, गिलहरी का छोटा-सा बच्चा है जो संभवतः घोंसल से गिर पड़ा है और अब कौवे जिसमें सुलभ आहार खोज रहे हैं ।

काकद्वय की चोंचों के दो घाव उस लघुप्राण के लिए बहुत थे, अतः वह निश्चेष्ट-सा गमले से चिपटा पड़ा था ।

सबने कहा, कौवे की चोंच का घाव लगने के बाद यह बच नहीं सक्ता, अतः इसे ऐसे ही रहने दिया जावे ।

परंतु मन नहीं माना - उसे हौले से उठाकर अपने कमरे में लाई , फिर रूई से रक्त पोंछकर घावों पर पेंसिलि का मरहम लगाया ।

वही दो वर्ष गिल्लू का घर रहा । वह स्वयं हिलाकर अपने घर में झूलता और काँच के मनकों - सी आँखों से कमरे के भीतर और खिड़की से बाहर न जाने क्या देखता-समझता रहता था । परंतु उसकी समझदारी और कार्यकलाप पर सबको आश्चर्य होता था ।

गिल्लू को जाली के पास बैठकर अपनेपन से बाहर झाँक्ते देखकर मुझे लगा कि इसे मुक्त करना आवश्यक है ।

मैंने कीलें निकालकर जाली का एक कोना खोल दिया और इस मार्ग से गिल्लू ने बाहर जाने पर सचमुच ही मुक्ति की साँस ली । इतने छोटे जीव को घर में पले कुत्ते, बिल्लियों से बचाना भी एक समस्या ही थी ।

आवश्यक कागज - पत्रों के कारण मेरे बाहर जाने पर कमरा बंद ही रहता है । मेरे कालेज से लौटने पर जैसे ही कमरा खोला गया और भीतर पैर रखा, वैसे ही गिल्लू अपने जाली के द्वार से भीतर आकर मेरे पैर से सिर और सिर से पैर तक दौड़ लगाने लगा । तब से यह नित्य का क्रम हो गया ।

गिल्लू इनमें अपवाद था । मैं जैसे ही खाने के कमरे में पहुँचती, वह खिड़की से निकलकर आँगन गी दीवार, बरामदा पार करके मेज पर पहुंच जाता और मेरी थाली में बैठ जाना चाहता । बड़ी कठिनाई से मैंने उसे थाली के पास बैठना सिखाया जहां बैठकर वह मेरी थाली में से एक-एक चावल उठाकर बड़ी सफाई से खाता रहता । काजू उसका प्रिय खाद्य था और कई दिन काजू न मिलने पर वह अन्य खाने की जीजें या तो लोना बंद कर देता या झूले से नीचे फेंक देता था।

Rahul Publications

सोनजुही की लता के नीचे गिल्लू को समाधि दी गई है - इसलिए भी कि उसे वह लता सबसे अधिक प्रिय थी - इसलिए भी कि लघुगात का, किसी वासंती दिन, जुही के पीताभ छोटे फूल में खिल जाने का विश्वास, मुझे संतोष देता है ।

తెలుగు అనువాదం

ప్రస్తుతం మనం చదువుతున్న (ఈ పాఠం) శ్రీమతి మహాదేవి వర్మగారు రచించిరి. ఆమె ఈ పాఠంలో తను పెంచుకున్న ఒక ఉడుత గురించి ఎంతో చక్కగా వర్ణించిరి.

మన రచయిత్రి ఇంటిలోపల ఉద్యానవనంలో బంతి మొక్కకి ఒక మొక్క వచ్చింది. దానిని చూడగానే మన రచయిత్రికి తను పెంచుకున్న ఉడుత జ్ఞాపకం వచ్చింది. ఆ మొక్క క్రింద దాని సమాధి ఉంది. మట్టిలో ఇప్పుడు ఆ ఉడుత పూర్తిగా కలిసిపోయి ఉండవచ్చు. దాని జ్ఞాపకాలను మనతో ఇప్పుడు పంచుకొనుచున్నాను. ఒకరోజు ఆకస్మాత్తుగా వరండాలో కాకుల శబ్దం విని నేను, చుట్టుప్రక్కల వాళ్ళు వచ్చి చూశాం. అక్కడ పూలకుండీ మధ్యలో ఒక చిన్నప్రాణి దాని గూటిలో నుండి క్రింద పడిపోయింది. దాన్ని భూజించడానికి కాకులు అరుస్తున్నాయి. దగ్గరకు వెళ్ళచూడగా ఆ చిన్ని ప్రాణి ఒక ఉడుత పిల్ల. నాకు దానిపై జాలి కలిగి రెండుచేతులతో నెమ్మదిగా పైకి తీసి ఇంటిలోపలికి తీసుకువచ్చాను. కాకులు వాటి ముక్కుతో దీనిని గాయపరిచాయి. గాయపడిన ఉడుత బ్రతకదని అందరూ అన్నారు. కానినెను ఆ మాటలను వినదలచుకోలేదు. దాని శరీరం పై రక్తం దూదితో తుడిచి పెన్సిలిన్ మందు పూశాను. దూదిని పాలలో ముంచి నోటి వద్దకు తెచ్చి నోటిలో పడేటట్లు చుక్కలు, చుక్కలుగా పోయడం ప్రారంభించాను. చాలాసేపటి తరువాత రెండు మూడు చుక్కలు నోటిలోకి వెళ్లాయి. ఇలా రెండు రోజులు శ్రమపడ్డాను. మూడవ రోజు అది కళ్ళు తెరచి నన్ను చూడటం ప్రారంభించింది. ముదు నెలలకు అది చూడటానికి ఎంతో అందంగా ఉంది. దాని తోక చాలా ఒత్తుగా, కళ్ళు నీలమణులు లాగా మెరిసిపోతున్నాయి. అది ఉండటానికి పూలబుట్టలో దూదిని ఉంచి, ఆ బుట్టను కిటికీకి తీగతో కట్టాను. దానిలో చక్కగా ఊగుతా ఉండేది. దాని పనులు చూపరులను ఆకర్షించే విధంగా ఉండేవి. నేను వ్రాయడానికి కూర్చోగానే దానిని పట్టించుకోవడం లేదని నాపై నుండి క్రింది వరకు, కర్టెను రాడ్లపై తిరుగుతూ ఉండేది. దానిని పట్టుకొని ఒక్క పెద్ద కవరులో ఉంచేదాన్ని అలా చాలా సేపు రెండు చిన్న చిన్న చేతులు, ముఖం బయటకు పెట్టి నన్ను వీక్షిస్తుండేది.

ఆకలి వేయగానే చిక్-చిక్ అని శబ్దం చేసేది. నేను అర్థం చేసుకొని జీడిపప్పు. బిస్కెటు పెట్టేదానిని. దానికి ఇష్టమైన ఆహారం జీడిపప్పు. దానికి ముద్దుగా గిల్లూ అని పేరు పెట్టాను. దాని జీవితంలో మొదటి వసంతం వచ్చింది. బయట కిటికీలోంచి ప్రకృతిని చూస్తూ ఉండేది. దాని తోటి జీవులు దానిని గ్రహించి

Rahul Publications

కిటికీ వద్దకు వచ్చి శబ్దం చేసేవి. నాకు గిల్లూపై జాలి కలిగి కిటికీ చివర తెరను కొంచెం పైకి ఎత్తి ఉంచాను. దాని నుండి బయటకు వెళ్ళి స్నేహితులతో ఆడుకునేది. చెట్లపై ఎక్కి గెంతులు వేసేది. సాయంత్రమునకు మరల తన ఇంట్లోకి వచ్చేసేది. ఒకసారి నాకు మోటారు రపమాదం జరిగింది. చాలా రోజులు ఆసుపత్రిలోనే ఉన్నాను. ఆ సమయంలో గిల్లూ కి ఆహారం ఇవ్వడానకి ఎందరో ప్రయత్నించారు. కాని నాపై ఉన్న ప్రేమ కారణంగా ఏమి తినేది కాదు. తనకు ఇష్టమైన జీడిపప్పు కూడా వదిలేసేది. నేను ఇంటికి తిరిగి వచ్చిన తరువాత నన్ను చూసి సంతోషపడింది. నా మంచం వద్దకు వచ్చి దాని సున్నితమైన చేతులతో నా తలను ఒత్తుతూ ఉండేది. ఒక పనిమనిషి వలె సేవలు చేసేది. ఎన్ని ప్రాణులు నా వద్ద ఉన్నా గిల్లూకి ప్రత్యేక స్థానం ఉండేది. కుక్కలు, పిల్లులు నుండి జాగ్రత్తగా ఉండమని చెప్పేదాన్ని నేను నా (కాగితాల కోసం) సామాగ్రి కోసం బయటకు వెళుతూ ఉండేదాన్ని. నేను రచయిత్రిని కావడం వల్ల చాలాసేపుబల్ల వద్ద కూర్చొని వ్రాస్తూ ఉండేదాన్ని వేసవిలో ఒక కుండ నా బల్ల వద్ద ఉండేది. వేసవి తాపాన్ని భరించలేక గిల్లు దానిపై కూర్చుని ఉండేది. ఎన్నో గంటలు నన్ను చూస్తూ ఉండిపోయేది. ఉడుత జీవితకాలం 2 సంవత్సరాలు మాత్రమే. ఒకరోజు ప్రొద్దున నుమడి గిల్లూ తిండి తినలేదు, దాని స్నేహితులతో ఆడుకోవడానికి వెళ్ళలేదు. సాయంత్రం కాగానే నావద్దకు వచ్చి దాని చిన్నతనంలో నా ఏ వ్రేలుని పట్టుకుందో ఆ వ్రేలు పట్టుకుంది. దాని మరణం అసన్నమయింది అసన్నమయింది అని దానికి తెలిసినట్లుంది. దాని శరీరం చల్లగా అయిపోయింది. నేను వేడికలిగించడానికి చాలా ప్రయత్నం చేశాను. హీటరు కూడా ఆన్ చేశాను. కాని గిల్లూ అప్పటికి ప్రాణం వదిలేసింది. నాకు ఎంతో బాధ కలిగింది. ఈ రోజు దాని సమాధిపై వచ్చిన బంతిపూవు మొగ్గ చూడగానే నాకు దాని జ్ఞాపకం వచ్చింది. నా జీవితంలో గిల్లూని మరవలేకపోతున్నాను. ప్రతి జీవి భగవంతుని సృష్టిలో అద్భుతం.

Rahul Publications

संदर्भसहित व्याख्याएँ

1. **काकद्वय की चोंचों के दो घाव उस लघुप्राण के लिए बहुत थे, अतः वह निशचेष्ट-सा गमले से चिपटा पड़ा था ।**

संदर्भ : 'प्रस्तुत वाक्य' गिल्लू नामक पाठ से दिया गया है । इसकी लेखिका 'महादेवी वर्मा' आधुनिक काल मे छायावाद की प्रसिद्ध कवयित्री है । इन्हे 'आधुकि काल मे छायावाद की प्रसिध्द कवयित्री है । इन्हे 'आधुनिक मीरा' कहा जाता है । नीहार, नीरजा, रशिम, सांध्यगीत, दिपशीखा प्रासीद्ध रचन है । 'यामा' काव्य पर ज्ञानपीठ पूरस्कार मिला । इस पाठ में लेखिका गिलहरी के बच्चे का स्मरण करती है ।

व्याखया : एक दिन अचानक लेखिका कमरे मे बरामदे में आई तो उसने देखा कि दो कौवे एक गमले के चारो और चोचों से, चुपके से छुकर छुप जाने का खेल-खेल रहे थे । उनकी नजर गमले और दिवार के बीच । छिपे एक छोट से जीव पर पडी, जब लेखिका पास जाकर देखती है तब वह गिलहरी का छोटा सा बच्चा था । उस छोटे से जीव के लिए उन दो कौवों की चोचों के दो घाव बहुत थे, इसलिए वह बिना किसी हरकत के गमले से लिपटा पडा था । लेखिका ने उसे उठाया और अपने कमरे मे ले जाकर उपचार किया ।

विशेषताएँ : इस पाठ में लेखिका ने अपने जीवन के एक अनुभव को बताया है, जहाँ उन्होंने एक गिलहरी के बच्चे को कौवो सं बचाकर पाला था ।

2. रूई की पतली पत्ती दूध से भिगोंकर जैसे - जैसे उसके नन्हें से मुँह में लगाई पर मुँह खुल न सका और दूध की बूँदें दोनों ओर ढुलक गई ।

संदर्भ : प्रस्तुत वाक्य 'गिल्लू' नामक कहानी से दिया गया है । इसकी लेखिका महादेवी वर्मा आधुनिक काल के छायावाद की प्रमुख कवियित्री है । इन्हें 'आधुनिक मीरा' कहा जाता है । नीहार, नीरजा, रशिम, सांध्यगीत, दीपशिखा इनकी प्रसिद्ध रचना है । 'यामा' काव्य पर इन्हे 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' मिलां । इस पाठ में लेखिका गिलहरी के बच्चे को स्मरण करती है ।

व्याखया : लेखिका ने गिलहरी के बच्चे को कौवो से बचाया था और अपने घर में लाकर उसका उपचार किया था । रूई से उसका खुन साफ किया जो कौवो ने चोंचों से घाव दिए थे उस पर पेंसिलिन दवा का मरहम लगाया। कई घंटे तक इलाज करने के बाद उसके मूँह में रूई पत्ती से दो बूँद दूध की टपकाने का प्रयत्न किया, मगर उसका छोटा सा मूँह खूल न सका और दूध की बूँदे ढूलक जाती है । बाद में एक बूँद पानी टपकाया जा सका । इसप्रकार लेखिका 'गिल्लू' को बचाने के प्रयत्न करती है ।

विशेषताएँ : लेखिका को मूक जानवरों कितना लगाव था इस पाठ से पता चलता है। जो भी समय उन्होंने गिल्लू के साथ बिताय था हमसे बाँट ती है ।

दीर्घ प्रश्नोत्तर

1. 'गिल्लू' पाठ का सारांश पाँच छः वाक्यों में लिखिए ।

उत्तर :

लेखिका परिचय

हिंदी साहित्य की 'आधुनिक मीरा' कही जानेवाली 'महादेवी वर्मा' का जन्म सन् १९०७ में फरूखाबाद, उत्तर प्रदेश में हुआ । आधुनिक काल में छायावाद की प्रसिद्ध कवियित्रि तथा लेखिका को साहित्य में उनकी उत्कृष्ट सेवाओ के लिए 'मंगलप्रसाद् पुरस्कार, भारत-भारती', सहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्माति किया । 'यामा' काव्य पर उन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार से पुरस्कृत किय तथा पद्मभूषण भी मिला ।

रचनाएँ

नीहार, नीरजा, रश्मि, सांध्यगीत, दीपशिखा (काव्य) अतीत के चलचित्र, पथ के साथी, मेरा परिवार (गद्य).

सारांश

'गिल्लू' पाठ में लेखिका ने एक गिलहरी के बच्चे पर मनुष्य के प्रेम भाव का वर्णन किया है । एक दिन पीली जुही के बेल पर लगी कली को देखकर उन्हें अचानक उस छोटे जीव गिलहरी याद आ गई । जो इस बेल की हरियाली में रहता था और लेखिका को घायल अवस्था में मिला था । उस गिलहरी के बच्च को लेखिका उठाकर कमरे में लाकर उपचार करती है । रूई की बत्ती से उसे दूध पिलाती है ।

तीन दिनों के बाद वह स्वस्थ हो जाता है । तीन चार महीनों बाद वह बडा बन जाता है । लेखिका उसका नाम । गिल्लू रखती है । लेखिका उसे रहने के लिए डलिया में रूई बिछाकर देती है । उसी में 'गिल्लू' दो वर्ष तक रहता है । गिल्लू के जीवन के प्रथम वसंत में लेखिका ने उसके लिए रास्ता बनाया । खिडकी की जाली से अंदर-बाहर खेलता रहता । लेखिका के बाहर से आने पर वह सिर से पैर तक दौडता था । गिल्लू कभी-कभी चौका देता था । लेखिका की थाली में से सफाई के साथ खाना खाता था । जब लेखिका के मोटर दुर्घटना में घायल होने पर अस्पताल में थी । तब गिल्लू अपना प्रिय पदार्थ काजु नहीं खाता था । नए नए उपाय करके गिल्लू लेखिक के पास ही रहता था दो वर्ष ही गिलहरी का समय रहता है । अपने अंत समय में गिल्लू लेखिका के पास आकर दम तोडता है ।

विशेषताएँ

प्रस्तुत रचना में गिलहरी जैसे साधाराण प्राणी की चेष्टाओं का सजीव चित्रण किया है ।

Rahul Publications

लघु प्रश्नोत्तर

1. 'गिल्लू' किसका नाम है ? उसके बारें में आप क्या जानते है ?

उत्तर :

'गिल्लू' एक चंचल तथा, तेज दौडने वाला 'गिलहरी' है । उससे लेखिका बहुत प्रेम करती है । उसकी देखभाल करके पालपोसकर बडा करती है । गिलहरी का छोटा सा बच्चा घोसलें से गिर जाता है । जिसपर नासमझ कौए टूट पडते है । लेखिका की दृष्टि उसपर अचानक ही पडती है । जिसे वह बचाने का पूरा प्रयास करती है ।

लेखिका का ध्यान आकर्षित करने के लिए 'गिल्लू' लेखिका के पैर तक आता और तुरंत अपने चंचलता से पर्दे पर चढ़ जाता । उसी तेजी से उतरना - चढ़ना कराता रहता । उसका प्रिय खाद्य काजू था । खिडकी की जाली से वह अंदर-बाहर खेलता रहता था । गिल्लू की झब्बेदार पूँछ और कांच की तरह चमकती चंचल आँखे सबको विस्मित करती थी । गिल्लू २ वर्षो तक लेखिका के पास रहा।

2. महादेवी वर्मा ने 'गिल्लू' की किस प्रकार से सहायता की थी ?

उत्तर :

एक दिन लेखिका की नजर अचानक बरामदे से पडी, गिलहरी के बच्चे को दो कौए खाने का प्रयास कर रहे थे। उस पर चोंच के दो निशान थे, लेखिका उसे बचाकर उसका उपचार करती है । पेंसिलिन की दवा लगाती है । लेखिका अगर उपचार न करती तो वह गिलहरी जिंदा नहीं होती। उसे जिंदा रखने के लिए रूई की पतली बत्ती को दूध में भिगोकर उसके मुँह में दूध डलने की कोशिश की, जो मरने की अवस्था था, वह लेखिका की सेवा से धीरे-धीरे स्वस्थ हो गया । लगभग तीन दिन होते-होते वह नन्हा जीव अपने पंजे हिलाने लगा और लेखिका की उगली पकडने लगा । उसे रहने के लिए डलिए में रूई बिछा दी गई । उसी में सोता था 'गिल्लू'। खिडकी की जाली से अंदर बाहर खेलता रहता । उसे लेखिका 'काजू' खिलाती थी । दो वर्ष तक गिल्लू जिवित था । इस छोटे जीव से लेखिका का प्रेम तथा ममत्व कहानी में स्फष्ट होता है ।

Rahul Publications

एक शब्द में उत्तर लिखिए

1. 'गिल्लू' नामक पाठ की लेखिका कौन है ?

उत्तर :

महादेवी वर्मा ।

2. परिचारिका की भूमिका कौन निभा रहा था ?

उत्तर :

'गिल्लू' ।

3. 'गिल्लू' किसका बच्चा था?

उत्तर :

गिलहरी का बच्चा ।

4. 'गिल्लू' का प्रिय खाद्य क्या था?

उत्तर :

'काजू' ।

Rahul Publications

आधुनिक गद्य

4

बतुकम्मा

संपादक मंडल

सारांश

भारत त्योहारों का देश है । यहाँ लगभग हर राज्य के अपने-अपने राज्य पर्व है । उसी तरह 'बतुकम्मा' तेलंगाणा राज्य का राज्य पर्व है । तेलंगाणा राज्य सरकार ने 24 जुलाई, 2014 के दिन सरकारी आदेश संख्या २ के अनुसार इसे राज्य पर्व के रूप में गौरवान्वित किया है । रह वर्ष धूम-धाम, श्रद्धा और भक्ति के साथ मनाये जाने वाले इस त्योहार ने 8 अक्तूबर, २०१६ को हमारे राज्य का नाम गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रेकॉर्ड में सुनहरे अक्षरों से लिख दिया । यह विश्व का एकमात्र ऐसा त्यौहार है जिसमें एक मंच पर ९,२९२ स्त्रियों ने भाग लेकर अपनी श्रद्धा और भक्ति का अनूठा उदाहरण प्रस्तुत किया है ।

बतुकम्मा तेलुगु भाषा के दो शब्दों से बना है - 'बतुकु' और 'अम्मा' । यहाँ 'बतुकु' का अर्थ 'जीवन' और 'अम्मा' का अर्थ 'माँ' है । इस तरह बतुकम्मा का अर्थ है - 'जीवनप्रदायिनी माता' । यह त्यौहार तेलंगाणा राज्य की वैभवशाली संस्कृति का प्रतीक है । बतुकम्मा त्यौहार दशहरे की नवरात्रियों में मनाया जाता है । यह कुल नौ दिनों का त्यौहार है । इसका आरंभ भाद्रपद अमावस्या यानी महालया अमावस्या या पितृ अमावस्या से होता है और सद्दुला बतुकम्मा या पेद्दा बतुकम्मा (दुर्गाषटमी) तक चलता है । विशेष रूप से इसे स्त्रियाँ मनाती हैं । इसे मनाने की विशेष विधि है। नौ दिनों तक मनाये जाने वाले इस त्यौहार का हर दिन एक विशेष नैवेद्य रूपी से जाना - जाता है। पहले दिन को 'एंगिली पुव्वुला बतुकम्मा' कहा जाता है । इस दिन नैवेद्य के रूप में तिल और चावल के आटे से बनाये गए मिष्ठ भोजन भेंट किए जाते है । दूसरा दिन 'अटुकुला बतुकम्मा' कहलाता है । इस दिन नैवेद्य के रूप में चिवड़े के व्यंजन चढ़ाये जाते हैं । तीसरा दिन 'मुद्दपप्पु बतुकम्मा' (फीकी दाल वाला बतुकम्मा), चौथा दिन नानबिय्यम बतुकम्मा (गीले चावल वाला बतुकम्मा), पाँचवा दिन 'अट्ला बतुकम्मा' (उबले हुए चावल के आटे से बनाये गये दोसे वाला बतुकम्मा), छठा दिन 'अलगिना बतुकम्मा' (ऐसा माना जाता है कि इस दिन देवी माँ रूठकर बैठ जाती हैं । कुछ नहीं खाती हैं । इसलिए यह दिन 'रूठी बतुकम्मा' के नाम से जाना जाता है ।), सातवाँ दिन 'वेपकायला बतुकम्मा' (चावल के आटे से बने हुए निंबोली के आकार के मुरूकुलचकली वाला बतुकम्मा), आठवाँ दिन 'वेन्नमुद्दला बतुकम्मा' (घी, मक्खन, तिल और गुड़ के निवाले वाला बतुकम्मा) और नवें दिन

Rahul Publications

'सद्दुला बतुकम्मा' या 'पेद्दा बतुकम्मा' (पाँच तरह के चावल - दही चावल, पुलिहोरा (इमली के रस से बना चावल), नींबू चावल, नारियल चावल और तिल चावल वाला बतुकम्मा या बड़ी बतुकम्मा) के नाम से मनाया जाता है। इन नैवेद्यों की यह विशेषता है कि इसमें ऋतु प्रधान फसलों के अनाजों का महत्वपूर्ण स्थान होता है। साथ ही इसमें उपयोग की जाने वाली सामग्री स्वास्थ्य की दृष्टि से अत्यंत लाभदायक है। इसके बाद 'बोड्डुम्मा' (गौरी माँ) की पूजा विशेष ढंग से होती है। बोड्डुम्मा की प्रतिमा को तालाब की मिट्टी से बनाया जाता है। बोड्डुम्मा का पूजन वर्षा ऋतु के अंत और शरद ऋतु के आगमन का सूचक है।

नौ दिन तक बतुकम्मा मनाने के बाद स्त्रियाँ बतुकम्मा का जल में विसर्जन करती हैं। यह प्रक्रिया विशेष ढ़ंग से संपन्न होती है। उस दि सभी स्त्रियाँ अपनी-अपनी बतुकम्मा लेकर तालाबों, जल स्रोतों के किनारे पहुँचकर माँ गोरी देवी के प्रतीक बतुकम्मा का विसर्जन करते है। विसर्जन के समय वे बतुकम्मा से अपने समाज, परिवार व स्यवं की मंगलकामना करती हैं।

बतुकम्मा विशेषकर स्त्रियों का त्यौहार है। इस त्यौहार की वे केंद्र बिंदु होती है। उनकी भक्ति और श्रद्धा उनमें आत्मविश्वास, आत्मसम्मान व आत्मगौरव की भावना को दर्शाती है। यह त्यौहार भारतीय समाज में स्त्रियों के गौरवशाली वैभव का गुणगान करता है। महाशक्ति की प्रतीक गौरी माँ भी एक स्त्री हैं। सुख - शांति व संपन्नता की प्रतीक लक्ष्मी भी एक स्त्री हैं। इसीलिए स्त्री को साक्षात देवी का अवतार कहा जाता है। इस त्यौहार से हमें यह पता चलता है कि स्त्रियाँ न केवल ममता, प्रेम, समर्पण, त्याग की प्रतीक हैं बल्कि समय आने पर समाज के हितों के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर करने के लिए तत्पर रहती है। बतुकम्मा त्यौहार के बहाने घर की स्त्रियाँ परिवार के सभी सदस्यों को एक सूत्र में बाँधती हैं। वास्तव में स्त्री तो वह देवी है जो अपने घर को कलह, शत्रुता और बुरी नजर से बचाती है। इसीलिए कहा जाता है कि जहाँ स्त्रियों का सम्मान और आदर होता है वहाँ साक्षात भगवान निवास करते हैं। यह त्यौहार उस रूढ़िवादिता का विरोध करता है जहाँ पुरूष को प्रधान माना जाता है। यह त्यौहार स्त्री शक्ति को पहचानने, उनका आदर करने और समाज में उचित स्थान देने पर बल देता है।

तेलंगाणा यदि शरीर है तो बतुकम्मा उसकी आत्मा। बतुकम्मा के बिना तेलंगाणा राज्य की कल्पना करना असंभव है। नौ दिनों तक चलने वाले इस त्यौहार में स्त्रियों के करताल से सारा वातावरण गूँज उठता है। नीरस भी सरस बन जाता है। निर्जीव भी सजीव सा प्रतीत होता है। स्त्रियां के चेहरों पर बतुकम्मा के बहाने जो मुस्कान और खुशियाँ दिखायी देती है, उसके पीछे उनकी मंगलकामाना की भावना है।

Rahul Publications

తెలుగు అనువాదం

అశ్వయుజ మాసం వచ్చేస్తుందంటే బతుకమ్మ పండుగ కూడా వచ్చేసినట్లే. భాద్రపద అమావాస్య నుంచి తొమ్మిది రోజుల పాటు జరిగే ఈ పండుగ తెలంగాణాతో పాటు ఆంధ్రప్రదేశ్ రాష్ట్రంలో కూడా జరుపుకుంటారు. అయితే ఆంధ్రప్రదేశ్‌లో కంటే తెలంగాణాలో ఈ పండుగకి ఎంతో ప్రాముఖ్యత ఉంది. ఎంత ప్రాముఖ్యత అంటే రాష్ట్ర పండగగా అధికారికంగా జరిపేంత, దసరాకు రెండు రోజుల ముందు వచ్చే ఈ పండుగను బతుకమ్మ పండుగ, బతకమ్మ పండుగ, గౌరి పండుగ, సద్దుల పండుగ అనే పేర్లతో వ్యవహరిస్తారు.

బతుకమ్మ వెనుక కథ

బతుకమ్మ పండుగ వెనుక అనేక కథలు ప్రాచుర్యంలో ఉన్నాయి. వాటిలో ముఖ్యంగా పేర్కొనే కథ ఇది. ఒక బాలిక భూస్వాములు ఆకృత్యాలను భరించలేక ఆత్యహత్య చేసుకుంది. అప్పుడు ఆ ఊరి ప్రజలు అందరి ఆమెను కలకాలం బతుకమ్మా అని దీవించారట. అప్పటి నుంచి ఆ బాలికను కీర్తిస్తూ, గౌరమ్మని పూజిస్తూ స్త్రీలకు సంబంధించిన పండుగగా బతుకమ్మ ప్రాచుర్యం పొందింది. బతుకమ్మ వేడుక సందర్భంగా స్త్రీలందరూ తమకు ఎలాంటిఅపదలు రాకూడదని, తమ భర్తకు, పిల్లలకు ఎలాంటి ఆపద రాకూడదని గౌరమ్మని వేడుకుంటారు. అలాగే బతుకమ్మ పండుగకి సంబంధిమచి మరో వృత్తాంతం కూడా ప్రచారంలో ఉంది. ఇంకొక వృత్తాంతములో దక్షిణ భారతదేశాన్ని పాలించిన చోళ వంశ చరకవర్తి ధర్మాంగదుడు సంతానం కోసం పూజలు చెయగా ఆయన భార్య లక్ష్మీదేవి అనుగ్రహముతో ఒక కూతుర్ని కన్నది. ఆమెకు లక్ష్మీ అనే పేరు పెట్టారు. పసిబిడ్డ అయిన లక్ష్మీ అనెక గండములను ఎదుర్కొంది. అప్పుడు తల్లిదండ్రులు ఆమెకి బతుకమ్మ అని పేరు పెట్టారు. అప్పటి నుండి యువతులు మంచి భర్తను ప్రసాదించాలని కోరుతూ బతుకమ్మను అనవాయితీగా జరుపుకుంటున్నారు.

బతుకమ్మ పండుగ – వివరాలు

సెప్టెంబర్, అక్టోబర్ నెలల్లో తెలంగాణాలో పండుగ వాతావరణం కనిపిస్తూ ఉంటుంది. ఈ మాసంలో తెలంగాణ ప్రాంతం అంతా పండుగ కోలాహలంతో కనిపిస్తూ ఉంటుంది. ఈ రెండు నెలల్లో వచ్చే అన్ని పండుగలలో బతుకమ్మ పండుగకు ఒక విశిష్టమైన స్థానం ఉంది. దసరా పండగుకు ఎంత ప్రాధాన్యం ఉందో బతుకమ్మ పండుగకు కుడా అంతే ప్రాధాన్యం ఉంది.అయితే బతుకమ్మ పండుగ మాత్రం మహిళలకు సంబంధించిన పండుగ, వర్షాకాలం ముగుస్తూ, శీతాకాలం ప్రవేశిస్తున్న సమయంలో తెలంగాణలోని వాతావరణం మొత్తం పచ్చగా ఉంటుంది. ప్రకృతి మాత ఆకుపచ్చ చీర కట్టుకున్నట్లుగా ఉంటుంది.

చెరువులన్నీ తాజా నీటితో నిండి ఉంటాయి. ప్రకృతి మాత ఆకుపచ్చ చీర కట్టుకున్నట్లుగా ఉంటుంది. చెరువులన్నీ తాజా నీటితో నిండి ఉంటాయి. అనేక రకాలైన పూలు రకరకాల రంగుల్లో విరబూసి ఆకట్టుకుంటాయి. వీటిలో గునుగు, తంగేడి పూలు ప్రథమ స్థానంలో నిలుస్తాయి. అలాగే సీతాఫళాలు కుడా విరగకాస్తాయి. మొక్కజొన్న పంట కుడా కోతకు సిద్ధమై ఉంటుంది. ప్రకృతి రమణీయతతో పాటు రైతులకు కూడా సంతృప్తికరంగా ఉండే వాతావరణం తెలంగాణా అంతటా ఉంటుంది. ఇలాంటి వాతావరణంలో తెలంగాణా ఆడపడుచులు ప్రకృతి సౌందర్యాన్ని అద్భుతమైన రంగు రంగుల పువ్వులతో కీర్తిస్తూ బతుకమ్మ పండుగను వైభవంగా జరుపుకుంటారు.

బతుకమ్మ అంటే సంబరమే సంబరం

బతుకమ్మ పండుగకు ఒక వారం ముందు నుంచే ఇళ్ళలో హడావిడి మొదలవుతుంది. బతుకమ్మ పండుగ కోసం ఎదురు చూస్తున్న తెలంగాణ ఆడపడుచులు పండుగకు వారం రోజులు ముందే పుట్టింటికి చేరుకుని ఆనందోత్సాహాలతో పండుగ సన్నాహాలు చేసుకుంటారు. ప్రధాన పండుగకు వారం రోజుల ముందు నుంచె తెలంగాణ ఆడపడుచులు చిన్న చిన్న బతుకమ్మలు తయారు చేసి ప్రతిరోజు సాయంత్రం ఆ బతుకమ్మ చుట్టూ తిరుగుతూ బతుకమ్మ పాటలు పాడతారు. ఆతర్వాత చెరువులో బతుకమ్మని నిమజ్జనం చేస్తారు. బతుకమ్మ పండుగ చివరిరోజు జరిగే వేడుకలను. ఆ వైభవాన్ని చూడటానికి రెండు కళ్ళు చాలవు. నయన మనోహరంగా ఉంటుంది. ఆ సన్నివేశంఈ ఆరోజున పురుషలంతా పచ్చిక బయళ్ళలోకి పోయి తంగేడు, గనుగు, కలువ పూలను కోసుకుని వస్తారు. ఆ తర్వాత ఇంట్లో అందరూ గుసుగ, తంగేడు, కలువ పువ్వుల్ని మరికొన్ని పువ్వుల్ని కలిపి బతుకమ్మను తయారు చేస్తారు. బతుకమ్మలో మిగతా ఎన్ని పూలు ఉన్నా గునుగు పూలు, తంగేడు పూలదే అధిపత్యం ఉంటుంది.

Rahul Publications

బతుకమ్మ చేసే విధానం

గునుగు, తంగేడు పూలతోపాటు మిగతా పూలు ఒక రాగి పళ్ళెంలో వలయాకారంగా పేర్చుకుంటూ వస్తారు. ఒక రంగు పువ్వు తర్వాత మరో రంగు పువ్వును పేరుస్తూ ఆకర్షణీయంగా ఉండే విధంగా బతుకమ్మని తయారుచెస్తారు. ఆ తర్వాత తంగేడు పువ్వులను కట్టగా కట్టి వాటి మీద పేర్చుతారు. మధ్యలో రకరకాల పూలను ఉపయోగిస్తారు. ఈ పూల అమరిక ఎంత పెద్దగా ఉంటే బతుకమ్మా అంత పెద్దగా, అంత అందంగా రూపొందుతుంది. పూలను చక్కగా పేర్చడం అయిన తర్వాత బతుకమ్మ మిద పసుపుతో చేసిన గౌరీమాతను పెట్టి చుట్టూ దీపాలతో అలంకరిస్తారు. ఇలా తయారుచెసిన బతుకమ్మను ఇంట్లోని పూజా గదిలో అమర్చి పూజిస్తారు. ఆ తర్వాత బతుకమ్మని బయటకి తీసుకువచ్చి ఆడపడుచులు బతుకమ్మ

చుట్టూ తిరుగుతూ పాటలతో గౌరి దేవిని కీర్తిస్తూ పాటలు పాడుతారు. ఆడపడుచులు కొత్త బట్టలు కట్టుకుని, వారికి ఉన్న అన్ని రకాల అభరణాలను ధరిస్తారు. ఇలా చాలా సేపు ఆడాక మగవారు వాటిని చెరువులో నిమజ్జనం చేస్తారు. ఆ పై ఆ పళ్ళెంలో తెచ్చిన నీటితో ఆడవారు వాయినమమ్మా వాయినం అంటూ వాయినాలు ఇచ్చి పుచ్చుకుంటారు. తరువాత ఇంటి నుండి తీసుకువచ్చిన పెరుగన్నం, మొక్కజొన్నలు లేదా వేరుశనగ లేదా పెసర విత్తనాలను దోరగా వేయించి పిండి చేసి బెల్లం లేదా పమచదార కలిపిన సత్తుపిండి ఒకరికొకరు ఇచ్చి పుచ్చుకుని ప్రసాదంలా స్వీకరిస్తారు. బతుకమ్మ వేడుకలు చివరి రోజు సాయంత్రం ఆడపడుచులు అందరూ చక్కగా దుస్తులు, ఆభరణాలు ధరించి బతుకమ్మను వాకిలిలోపెడతారు. చుట్టుపక్కల ఉన్నవారు కుడా వారి బతుకమ్మలను ఇదేవిధంగా అమర్చి వాటి చుట్టూ పెద్ద వలయాకారంలో చేరుతారు. ఐక్యత, ప్రేమతో మానవహారం బతుకమ్మ చుట్టూ తిరుగుతూ పాటలు పాడుతారు. ఒకరు ముందుగా పాట మొదలు పెడితే మిగిలినవారు వారతో గొంతు కలుపుతూ పాడుతారు. ఈ జానపద గీతాలు ప్రత్యేకమైన తెలంగాణా సంస్కృతిని ఆవిష్కరిస్తాయి. చీకటి పడే వేళకి తలపై పెట్టుకుని పెద్ద చెరువు గానీ, తటాకం వైపు గానీ ఊరేగింపుగా వెళ్తారు. ఈ ఊరేగింపు అందంగా అలంకరిమచుకున్న స్త్రీలు బతుకమ్మలతో, వాయిద్యాలతో, కన్నుల పండుగగా ఉంటుంది. జలాశయం చేరుకున్న మహిళలు బతుకమ్మలను పాటలు పాడుతూ ఆడుతూ నీటిలో జారవిడుస్తారు. ఆ తరువాత చక్కెర రొట్టెతో చేసిన మలీద అనే వంటకాన్ని బంధువులకు పంచిపెట్టి తింటారు. ఆ తర్వాత ఖాళీ పళ్లెం (తాంబళం) తో ఇంటికి చేరుతారు.

Rahul Publications

संदर्भसहित व्याख्याएँ

1. **भारत त्यौहारों का देश है । यहाँ लगभग रह राज्य के अपने-अपने राज्य पर्व हैं ।**

संदर्भ : प्रस्तुत वाक्य 'बतुकम्मा' पाठ से लिया गया है । यह निबंधात्मक पाठ है । भारत में त्यौहार का विशषमहत्व है । त्योहार हमारे जीवन में नई चेतना, नई उमंग लातां है ।

व्याखया : भारत त्योहारों का देश है, जहाँ पूरे साल अलग अलग त्योहार बडी धुमधाम से मनाए जाते हैं । सभी धर्मो के लोग मिलजुलकर मनाते है । विविधता में एकता का प्रतीक 'भारत' है । हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई सब एक साथ त्यौहार मनाते है । त्यौहार से खुशी आपस में बाँटते हैं । पूरे विश्व की तुलना

में भारत में अधिक त्यौहार मनाते है । अनेकता में एकता का संदेश 'भारत वासी' देते है । तेलंगाना का राज्य पर्व 'बतुकम्मा' है । जो तेलूगु लोगों के वैभव शाली संस्कृति की झलके दिखती है ।

विशेषताएँ : इस पाठ में लेखिका ने अपने जीवन के एक अनुभव को बताया है, जहाँ त्यौहार में स्त्रियाँ नाच-गाकर, धुमधाम से मनाती है।

2. **तेलंगाना यदि शरीर है, तो** बतुकम्मा उसकी आत्मा । बतुकम्मा के बिना तेलंगाण राज्य की कल्पना करना असंभव है ।

संदर्भ : प्रस्तुत वाक्य 'बतुकम्मा' पाठ से लिया गया है । यह निबंधात्मक पाठ है। भारत में त्यौहार का विशेष महत्व है । त्योहार हमारे जीवन में नई चेतना, नई उमंग लातां है । 'बतुकम्मा' तेलंगाना का राज्यपर्व है ।

व्याखया : भारत त्यौहारों का देश है । यहाँ लगभग हर राज्य के अपने अपने पर्व है। उसी तरह 'बतुकम्मा' तेलंगाणा राज्य का 'राज्य पर्व' है । तेलंगाना राज्य सरकार २५ जूलाई २०१४ के दिन सरकारी अदिशानुसार इसे राज्यपर्व के रूप में गौरवान्वित किया । हर वर्ष धूमधाम से श्रध्दा और भक्ति के साथ मनाए जाते है । 'बतुकम्मा' तेलुगु भाषा के दो शब्दों से बना है - 'बतुकु' और 'अम्मा' अर्थात जीवन प्रदायिनी माँ । यह त्यौहार दशहरे की नवरात्रियों में मनाया जाता है । नौ दिनों का त्यौहार 'पितृ अमावस्या' से शुरू होता है और 'सदुल्ला बतुकम्मा' (दुगष्टिमी) तक चलता है । इसे विशेष रूप से इसे स्त्रियाँ मनती है । यह त्यौहार तेलंगाणा राज्य की वैभवशाली संस्कृति का प्रतीक है ।

विशेषताएँ : नौ दिनों तक चलनेवाले इस त्यौहार में स्त्रियाँ नाच-गाकर, धुमधाम से मनाती है । सारा वातावरण गुँजता है । नीरस भी सरस बन जाता है । उसके पीछे मंगलकामना होती है ।

Rahul Publications

दीर्घ प्रश्नोत्तर

1. 'बतुकम्मा' निबंध का सारांश पांच-छः वाक्यों में लिखिए ।

उत्तर :

लेखिका परिचय

बतुकम्मा त्यौहार भारत के 'तेलंगाना' राज्य में महिलाओं दवारा मनाए जाना वाला एक क्षेत्रीय पर्व है । पूरे तेलंगाना में यह पर्व शालिवाहन संवत के अमावस्या तिथि से शूरू होकर नौ दिनों तक मनाया जाता है । इसे 'फूलों का त्यौहार भी कहते है । फूलों से सात परत से मंदीर की आकृति बनाई जाती है । तेलुगु में 'बतुकम्मा' का मतलब है , देवी माँ जिंदा है । इस दिन से बतुकम्मा को 'महागौरी' के रूप में पूजा जाता है । यह त्यौहार स्त्री के सम्मान के रूप में धुमधाम से मनाया जाता है । तेलंगाना राज्य सरकार ने २४ जुलाई २०१४ के दिन सरकारी आदेश २ के अनुसार इसे राज्य पर्व के रूप में गौरवान्वित किया । हर वर्ष श्रध्दा भक्ति के साथ इस त्यौहार को मनाया जाता है । इसमे भारतीय संस्कृति झलकती है । यह त्यौहार तेलंगाना राज्य की वैभवशाली संस्कृति का प्रतीक है । 'बतुकम्मा' पर्व दशहरे की नवरात्रियों में मनाया जाता है। यह नौ दिनों तक चलता है । इसकी शूरूवात 'पितृ अमावस्या' से होती है और 'सदुल्ला बतुकम्मा' (दुगष्टिमी) तक चलता है । नौ दिनो तक मनाए जानेवाले इस त्यौहार को हर दिन एक विशेष नैवेदय बनाते है ।

सारांश

प्रकृति और बतुकम्मा का गहरा संबंध है । इसमें प्रकृति की सुंदरता फूलों में दिखाई देती है । इसीलिए बतुकम्मा को 'फूलो का त्यौहार' भी कहते है । बतुकम्मा बनाने के लिए उपयोग में लाए जानेवाले फूल-जैसेः- तंगेडू (तेलंगाना का राष्ट्र फूल), गुम्मडी (कोहडे का फूल), बंती (गेदां फूल) मंदारम (गुडहल), गोरिंटा (मेंहदी), पोकाबंती (गुल मखमल), कट्लपाडु (जडीबुटी पुष्प), गुंटलागरगरा (भृंगराज), कोडिजूटूट (श्रीआई पूष्प), मयूरशिखा, चामंती (गुलदाऊदी) गन्नेरू (कनेर) गुलाब, वज्रदंती, गडड्ी पुव्वु (घास फूल) आदि का उपयोग करके बतुकम्मा बनाते है । इसमें हल्दी और गोबर का विशेष उपयोग करते है । इस तरह बनाके बतुकम्मा के चारों ओर स्त्रियाँ गोलाकार बनाकार तालियाँ बजाती हुई गीत गाकर नाचती है । नौ दिन ऐसा करके बतुकम्मा का जल मे विसर्जन करती है । स्त्रियाँ और सबकी मंगलकामना करती है ।

Rahul Publications

बतुकम्मा त्यौहार में छिपी ऐतिहासिक कई कहानियाँ है ऐसा कहा जाता है कि चोल नरेश ''धार्मीगद'' और उनकी पत्नी 'सत्यवती' के सौ पुत्र महायुध्द् में मारे गए थे। इस दुख से उबरने के लिए राजा रानी ने कई पूजा-पाठ, यज्ञ-पूजन किए। फलस्वरूप उनके घर में साक्षात लक्ष्मी देवी का जन्म हुआ। बचपन में कई दुर्धटनाएँ घटने के बावजूद वह सूरक्षित रहती है। इसीलिए माता-पिता ने उसका नाम 'बतुकम्मा' रख दिया।

एक दूसरी मान्यता है कि जब माँ गौरी ने 'महिषासूर' राक्षस का वध किया था और थकने से बेहोश हो गई थी। कहते हैं, उन्हें उठाने के लिए वहाँ की स्त्रियों की भीड ने 'बतुकम्मा' गीत गाकर माता को जगाया था। तेलंगाना यदि शरीर है तो बतुकम्मा उसकी 'आत्मा'।

लघु प्रश्नोत्तर

1. 'बतुकम्मा' का अर्थ क्या है और यह त्यौहार कितने दिनों तक मनाया जाता है ?

उत्तर :

तेलंगाना का राज्य पर्व 'बतुकम्मा' है। 'बतुकम्मा' तेलुगु भाषा के दो शब्दों से बना है - 'बतुकु' और 'अम्मा' यानी माता अर्थात 'जीवनप्रदायिनी माता'। 'बतुकम्मा' त्यौहार तेलंगाणा राज्य की वैभवशाली संस्कृति का प्रतिक है। यह त्यौहार दशहरे से पहले नवरात्रियों में मनाया जाता है। नौ दिनों का त्यौहार 'पितृ अमावस्या' से शुरू होता है और (दुगष्टिमी) तक चलता है। इसे 'सदुदूला बतुकम्मा' या 'पेद्दा बतुकम्मा' भी कहते है। रसे मुख्यतः स्त्रियाँ नाच-गाकर धुम-धाम से मनाती है।

2. बतुकम्मा त्यौहार में किन-किन फूलों का उपयोग होता है?

उत्तर :

प्रकृति और बतुकम्मा का गहरा संबंध है। इसमें प्रकृति की सुंदरता फूलों में दिखाई देती है। इसीलिए बतुकम्मा को 'फूलो का त्यौहार' भी कहते है। बतुकम्मा बनाने के लिए उपयोग में लाए जानेवाले फूल-जैसेः- तंगेडू (तेलंगाना का राष्ट्र फूल), गुम्मडी (कोहडे का फूल), बंती (गेदां फूल) मंदारम (गुडहल), गोरिंटा (मेंहदी), पोकाबंती (गुल मखमल), कट्‌लपाडु (जडीबुटी पुष्प), गुंटलागरगरा (भृंगराज), कोडिजूटूट (श्रीआई पूष्प), मयूरशिखा, चामंती (गुलदाऊदी) गन्नेरू (कनेर) गुलाब, वज्रदंती, गडड्डी पुव्वु (घास फूल) आदि का उपयोग करके बतुकम्मा बनाते है।

Rahul Publications

एक शब्द में उत्तर लिखिए

1. तेलंगाणा का राज्य पर्व क्या है ?

उत्तर :

बतुकम्मा ।

2. राजा धर्मांगद की पत्नी का नाम क्या था ?

उत्तर :

सत्यवती ।

3. किस त्यौहार को फूलों का त्यौहार भी कहते है ?

उत्तर :

बतुकम्मा ।

4. बतुकम्मा का विसर्जन कहाँ करते हैं?

उत्तर :

तालाबों या जल स्त्रोंतो में ।

Rahul Publications

गद्य - विविधा

1. शिक्षा - **मनमोहन भाटिया**
2. हार की जीत - **सुदर्शन**
3. धरती को बचायें - **एन. मणिवासकम**
4. खेलो तो ऐसा खेलो - **योगराज थानी**

Rahul Publications

गद्य - विविधा

1

शिक्षा

लेखक - मनमोहन भाटिया

लेखक परिचय

मनमोहन भाटिया का जन्म सन् 1958 में दिल्ली में हुआ । उन्होंने हिंदू कॉलेज, दिल्ली से बी. कॉम और कैंपस लॉ सेंटर से एल.एल.बी. उपाधि प्राप्त की है । उन्हें बचपन से ही कहानियाँ लिखने में बड़ी रूचि है । भारत की कई प्रसिद्ध पत्र - पत्रिकाओं में उनकी कहानियाँ प्रकाशित हुई हैं । उनकी प्रसिद्ध कहानियों में 'बड़ी दादी', 'ब्लू टरबन', 'अखबार वाला', 'अहंकार', 'मोबाइल लत', 'लाइसेंस' और 'शिक्षा' प्रमुख हैं ।

प्रस्तुत कहानी 'शिक्षा' अभिव्यक्तिकथा महोत्सव द्वारा पुरस्कृत की गई है । इस कहानी में रवींद्र नामक बालक के माध्यम से शिक्षा का महत्व बताया गया है ।

Rahul Publications

मुख्य राजमार्ग से कटती एक संकरी सड़क आठ किलोमीटर के बाद नहर पर समाप्त हो जाती है । नहर पार जाने के लिए कच्चा पुल एकमात्र साधन हैं । जब नहर में अधिक पानी छोड़ा जाता है, तब पुल टूट जाता है और नाव से नहर पार जाया जाता है । यह अस्थायी पुल जिसे पार के गाँववाले खुद बनाते है, बरसात के महीनों में भी अधिक पानी के आ जाने पर टूट जाता है । सरकार ने कभी पुल को पक्का करने की नहीं सोची । नहर के पार गाँवों में गरीब परिवारों की संख्या अधिक है । आधे छोटे खेतों में फसल बो कर गुजारा करनेवाले हैं और आधे दूध बेचने का काम करते है । गाय, भैंसें पाल रखी हैं, जिनका दूध वे मुख्य राजमार्ग पर बसे शहर में बेचने जाते हैं ।

शिक्षा से गाँव वालों का दूर-दूर तक कोई वास्ता नहीं हैं । ऐसा लगता था, कि नहर पार आधुनिक सभ्यता ने अपने पैर अभी तक नहीं रखे हैं । नहर से पहले गाँव में एक स्कूल है, जहाँ नहर पार गाँव के बच्चे इसलिए पढ़ने जाते हैं, क्योंकि सरकारी स्कूलों में मुफ्त शिक्षा और दोपहर का खाना मिलता है । इसके अतिरिक्त गाँव वाले अपने बच्चों को पढ़ने के लिए प्रोत्साहित नहीं करते, जब कोई बच्चा फेल हो जाता है तो स्कूल से निकाल लिया जाता हैं ।

रवीन्द्र ने लाख समझाने की कोशिश की लेकिन सब बेकार, आखिर थक कर उसने कारखाने में नौकरी कर ली । रवीन्द्र को स्टोर में ड्यूटी दी गई, छः हज़ार रूपये का वेतन पा कर घर वाले

तो खुश हो गए, लेकिन रवीन्द्र का मन दुःखी था। कंपनी में दो हज़ार लोगों को रोजगार मिला। रवीन्द्र स्टोर में बैठा वर्करों की वर्दी के कपड़ों के लिए थान में से नाप के अनुसार कपड़ा फाड़ के बाँटा कारता था, इस काम से वह दुःखी था, लेकिन कुछ कर नहीं सकता था।

रवीन्द्र ने कॉलेज में दाखिले और छात्रवृति के काग़ज़ दिखाए तब पुजारी को यकी हुआ कि रवीन्द्र सच बोल रहा है। पुजारी मंदिर परिसर में ठीक मंदिर के पीछे क्वार्टर में रहता था। उसने रवीन्द्र को मंदिर मे ठहरने की इज़ाज़त दे दी, लेकिन इसमें उसका अपना स्वार्थ था। पुजारी ने शर्त रखदी कि उसके दोनों बच्चों को पढ़ाना होगा और मंदिर की सफाई और छोटे मोटे सभी कार्य करने होगें। रवीन्द्र को सिर छिपाने की जगह मिलगई और उसने पुजारी की शर्तें मान ली। बेघर रवीन्द्र को घर मिला।

नहर पर पुल का काम तेज़ी से चल रहा था और गाँव वालों को अपने रबी से मिलने की बेताबी थी। आखिर वो घड़ी आ ही गई। पुल का उद्घाटन राज्य के मुख्यमंत्री ने किया। आज पाँच साल बाद रवीन्द्र अपने गाँव जा रहा था। जीप धीरे-धीरे पुल से गुज़र रही थी, रवीन्द्र की आँखें नम होती जा रही थीं। पूरा गाँव रवीन्द्र के स्वागत में खड़ा था। प्रधानाचार्य सबकी अगुवाई कर रहे थे। उन्होंने आगे बढ़ कर रवीन्द्र को गले लगाया। उसके बाद माता-पिता ने अपने बेटे को गले लगाया। कोई कुछ नहीं कह सका। तीनों की आँखें नम थीं। माँ रोती-रोती बस इतना ही बुदबुदा सकीं ''मेरा रबी।''

Rahul Publications

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर तीन - चार वाक्यो में दीजिए।

1. रवींद्र का क्या लक्ष्य था ?

उत्तर :

गरीब परिवार का रवींद्र खुद अपने बलबुते पर पढ़कर दसवी कक्षा की बोर्ड परीक्षा में पूरे जिले में प्रथम आया। वह एक छोटे से गाँव मं रहकर मेहनत और लगन से पढाई करता है। उसका एक ही लक्ष्य था, कि खुब पढ़कर आई.ए.एस बनना। उसके लिए वह काफी मेहनत करता है। होनहार रवींद्र को प्रिंसीपल ने छात्रवृली दिलाई। अंत मे रवींद्र मेहनत से आई.ए.एस्. अधिकारी बनता है। कलकटर बनकर गाँव की दशा सुधारता है।

2. रवींद्र नौकरी क्यों नहीं करना चाहता था ?

उत्तर :

गाँव में कारखाने बनने लगे । गाँव के गरीब परिवारों को मजदूरी मिल गई । गाँव के दूसरे नौजवान कारखाने में भरती हो रहे थे । लेकिन रवींद्र ने अपना लक्ष्य आई.ए.एस. ही बनाया था । वह नौकरी के लिए तैयार नहीं था। माता-पिता रवींद्र को कारखाने जाने के लिए कहते है । लेकीन रवींद्र मना करता है । अपने लक्ष्य के बारें में बतता है । अगर वह नौकरी करेगा तो कलर्क बनेगा और अगर आई.ए.एस्. की पढाई करेगा तो कलक्टर बनेगा, तब वह जिले का मालिक बनेगा। इसीलिए रवींद्र नौकरी नहीं करना चाहता था ।

Rahul Publications

गद्य विविधा

2

हार की जीत

लेखक - सुदर्शन

लेखक परिचय

हिंदी के श्रेष्ठ कहानिकारों में सुदर्शन का नाम बड़े आदर के साथ लिया जाता है। सुदर्शन का जन्म सन् १८९६ में पाकिस्तान के सियालकोट में हुआ था। वे हिंदी के प्रसिद्ध साहित्यकार थे। उनका वास्तविक नाम 'पण्डित बद्रीनाथ भट्ट' था। सुदर्शन प्रेमचन्द परम्परा के कहानीकार थे। मुंशी प्रेमचंद और उपेन्द्रनाथ 'अश्क' के समान ही वे हिंदी और उर्दू में लिखते रहे। उन्होंने अपनी प्रायः सभी प्रसिद्ध कहानियों में समस्याओं का आदर्शवादी समाधान प्रस्तुत किया है। वे अपनी सरल और हृदय को छू जाने वाली कहानियों के लिए प्रसिद्ध हैं।

प्रस्तुत कहानी सुल्तान नामक घोड़े के बारे में है। उसका मालिक बाबा भारती है। खड़गसिंह नामक डाकू उसे हथियाने का प्रयास करता है। इस प्रयास में वह जीतकर भी हार जाता है, जबकि बाबा भारती हार कर भी जीत जाते हैं।

माँ को अपने बेटे और किसान को अपने लहलहाते खेत देखकर जो आनंद आता है, वही आनंद बाबा भारती को अपना घोड़ा देखकर आता था। भगवद् - भजन से जो समय बचता, वह घोड़े को अर्पण हो जाता। वह घोड़ा बड़ा सुंदर था, बड़ा बलवान। उसके जोड़ का घोड़ा सारे इलाके में न था। बाबा भारती उसे 'सुल्तान' कह कर पुकारते, अपने हाथ से खरहरा करते, खुद दान खिलाते और देख - देखकर प्रसन्न होते थे। उन्होंने रूपया, माल, असबाब, जमीन आदि अपना सब-कुछ छोड़ दिया था, यहाँ तक कि उन्हें नगर के जीवन से भी घृणा थी। अब गाँव से बाहर छोटे-से मन्दिर में रहते और भगवान का भजन करते थे।

बाबा भारती और खड़गसिंह अस्तबल में पहुँचे। बाबा ने घोड़ा दिखाया घमंड से, खड़गसिंह ने देखा आश्चर्य से। उसने सैंकड़ो घोड़े देखे थे, परन्तु ऐसा बाँका घोड़ा उसकी आँखों से कभी न गुजरा था। सोचने लगा, भाग्य की बात है। ऐसा घोड़ा खड़गसिंह के पास होना चाहिए था। इस साधु को एसी चीजों से क्या लाभ? कुछ देर तक आश्चर्य से चुपचाप खड़ा रहा। इसके पश्चात् उसके हृदय में हलचल होने लगी।

Rahul Publications

चौथा पहर आरंभ होते ही बाबा भारती ने अपनी कुटिया से बाहर निकल ठंहे जल से स्नान किया । उसके पश्चात् इस प्राकर जैसे कोई स्वप्न में चल रहा हो, उनके पाँव अस्तबल की ओर बढ़े। परंतु फाटक पर पहुँचकर उनको अपनी भूल प्रतीत हुई । साथ ही घोर निराशा ने पाँव को मन-मन भर का भारी बना दिया । वे वहीं रूक गए । घोड़े ने अपने स्वामी के पाँवों की चाप को पहचान लिया और जोर से हिनहिनाया । अब बाबा भारती आश्चर्य और प्रसन्नता से दौड़ते हुए अंदर घुसे और अपने प्यारे घोड़े के गले से लिपटकर इस प्रकार रोने लगे मानो कोई पिता बहुत दिन से बिछड़े हुए पुत्र से मिल रहा हो । बार-बार उसकी पीठपर हाथ फेरते, बार-बार उसके मुँह पर थपकियाँ देते । फिर वे संतोष से बोले, ''अब कोई दीन-दुखियों से मुँह न मोड़ेगा''।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर तीन - चार वाक्यो में दीजिए ।

1. खड्गसिंह का चरित्र चित्रण कीजिए ?

उत्तर :

खड्गसिंह एक डाकू था । लोग उसका नाम सुनकर काँपते थे । जब सुल्तान (घोडे, के बारे में सुनाता है, उसे किसी भी हालत में पाना चाहता है । बाबा को चेताता है कि, इस घोडे को उनके पास नहीं रहने देगा ।

खड्गसिंह एक दिन अपाहिज को वेष धारण करता है । और बाबा-भारती को धोखा देकर घोडे को अपने साथ ले जाता है । मगर बाबा की बातों से उसका हृदय परीवर्तन होता है । अंत मे वह घोडे को बाबा के पास छोड देता है । बाबा - भारती के उच्च विचार के आगे एकदम हार गया खड्गसिंह । इसप्रकार हमें खड्सिह सामने के चरित्र के बारे मे पता चलता है ।

2. बाबा भारती का सुल्तान के प्रति लगाव कैसा था ?

उत्तर :

माँ को अपने बेटे और किसान को अपने लहलहाते खेत देखकर जो आनंद आता है, वही आनंद बाबा भारती को अपना घोडा देखकर आता था । भगवद् - भजन से जो समय बचता, वह घोडे को अर्पण हो जाता । वह घोडा बडा सुंदर और बलवान था । उसके जोड का घोडा सारे इलाके में न था । बाबा भारती उसे 'सुल्तान' कह कर पुकारते थे । अपने हाथ से खरहरा करते, खुद दाना खिलाते और देख - देखकर प्रसन्न होते थे । बाबा - भारती सुल्तान के बिना नहीं रह सकते थे।

Rahul Publications

गद्य विविधा

3 धरती को बचायें

लेखक - एन्. मणिवासकम

लेखक परिचय

एन. मणिवासकम का पूरा नाम नटराजन मणिवासकम है । वे विश्वप्रसिद्ध जल से जुड़े पर्यावरणीय व प्रदूषण संबंधी विषयों के विशेषज्ञ हैं । उनका जन्म तमिलनाडु के इरोड जिने में स्थित पुंजैपुलइमपट्टी नामक ग्राम में सन् 1951 में हुआ । उनके पिता का नाम सी.के. नटराजन और माता का नाम अरूणगिरि अम्माल है । उनकी प्रारंभिक और माध्यमिक शिक्षा इरोड में हुई । बचपन से ही उनकी दिलचस्पी पर्यावरण संरक्षण के प्रति थी । इसीलिए उन्होंने विज्ञान विषय का चयन किया । मद्रास विश्वविद्यालय से एम. एससी. की शिक्षा प्राप्रत की । उनकी लगन और कड़ी मेहनत ने उन्हें तमिलनाडु सरकार के इंडियन वाटर वर्क्स में जल विश्लेषक के पद पर पहुँचा दिया । उन्होंने पर्यावरण संबंधित कई सारी अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त पुस्तकें लिखी हैं ।

प्रस्तुत निबंध मणिवासकम की पुस्तक 'हवा और पानी में ज़हर (we brathe and drink poison) का अंश है । इसमें उन्होंने पर्यावरण व प्रदूषण संबंधी विषय के बारे में सुंदर वर्णन किया है । इसका हिंदी अनुवाद श्रीमती सरिता भल्ला ने किया है ।

मनुष्य के लालच ने प्राकृतिक भंडारों और संसाधनों को खाली कर दिया है । यदि युद्ध स्तर पर कदम न उठाए गये तो धरती हमारी भरण-पोषण की क्षमता खो देगी और हमें तथा अन्य सभी जीवित प्राणियों को जीने के साधनों से वंचित कर देगी ।

स्टाकहोम में 1972 में संपन्न हुए अंतर्राष्ट्रीय मानव पर्यावरण सम्मेलन मे स्वर्गीय प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने कहा था, ''रहने अथवा भोजन, पानी, सफाई और सिर छिपाने के लिए स्थान मुहैया कराने, रेगिस्तानों को हरा-भरा करने और पहाड़ों को रहने योग्य बनाने हेतु पर्यावरण में सुधार लाने के लिए विकास एक प्रमुख साधन है ।'' जनसंख्या वृद्धि पर पूरी तरह रोक तो नहीं लगायी जा सकती, परंतु सरल सस्ते उपायों को अपनाकर प्रदूषण का स्तर कम से किया जा सकता है । प्रदूषण को कम करने में कचरे के पुनः उपयोग की महत्वपूर्ण भूमिका होती है । उपयुक्त उपचार के बद व्यर्थ पानी का कृषि तथा जल-जीवों की फसल प्राप्त करने में उपयोग किया जा सकता है । भारत की अधिकांश कागज़ बनाने वाली मिलें कारखाने से निकलने वाले अपशिष्ट जल का धान तथा गन्ने की खेती में उपयोग करती हैं । औद्योगिक कचरे तथा ठोस कचरे का पुनः उपयोग करके उनसे उपयोगी वस्तुएँ तैयार का कार्य धीरे-धीरे महत्व प्राप्त कर रहा है ।

Rahul Publications

जंगली जीवों के आवासों को नष्ट करने के अतिरिक्त हम जानवरों और उनके भोजन को, पीड़क नाशियों तथा दूसरे रसायनों से विषाक्त कर रहे हैं । य रसायन मछलियों, पक्षियों और लाभदायक कीटों को मार रहे हैं । ये मानव जीवन के लिए भी खतरा उत्पन्न कर रहे हैं । प्रतिवर्ष इनसे हजारों व्यक्तियों की मृत्यु हुई है और अनेक व्यक्ति बीमार हुए हैं । अब वह समय आ गया है जब हम परिस्थिति की गंभीरता को पहचाने और इस प्रकार से कार्य करें जिससे हमारी आने वाली पीढ़ियों के लिए इस धरती पर जीवन और अधिक जीने योग्य बन सके । यह सच है कि मनुष्य जीवित रहना चाहता है और इसके लिए उसे चाहिए सांस लेने योग्य हवा तथा पीने योग्य पानी। उसे चाहिए साफ नीला आसमान, स्वच्छ नदियाँ तथा हरे-भरे वन । परंतु उसे इसकी कीमत चुकानी होगी ।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर तीन - चार वाक्यो में दीजिए ।

1. प्रदुषण को रोकने के कुछ उपाय लिखिए ?

उत्तर :

पर्यावरण संरक्षण को लेकर मानव प्रकृति अधिक महत्वपूर्ण है यदि प्रात्येक नागरिक गलियों से कूडा-कचरा न फेके । वनों को नष्ट नहीं करना चाहिए जल संलक्षण, वायु संरक्षण और भूमि संरक्षण करने के उपाय को अपनाय है । उर्जा की बचत करनेवाले उत्पादों को चुनना जो हमारे पर्यावण प्रदूषण को कम करने में मदत हो । पर्यावरण प्रकृति का उपहार है । पर्यावरण की सुरक्षा और संतुलन बनाए रखना हमारा कर्तव्य है । हमें पृथ्वी को हरा भरा रखना है , ताकि हम प्रदुषण मुक्त वतावरण में रह सके । हमें पर्यावरण को बचाना होगा ।

2. वनों को नष्ट करने से होने वाले दुष्परिणामों के बारें में लिखिए ?

उत्तर :

वनों को नष्ट करने से वायू प्रदूषण होता है । उससे ग्लोबल वार्मिग बढती है । ओझोन वरत नष्ट होता है । वर्षा में कमी आती है । जल स्त्रोतो की कमी होती है । मिट्टी की उपजाऊ शक्ति की हानि होती है । वृक्षों को काटने से जल, मिट्टी, वायु क्षरण होता है, वनों की कटाई धरती की उत्वादकता पर विपरीत प्रभाव डालती है । इसकी वजह से वृक्ष पहाडियों की सतह को बनाए रखने में महत्वपूर्ण होते है । उससे पृथ्वी का तापमान भी बढता है । त्रध्तुचक्र में भी बदलाव हो सकते है। अतिवृष्टी, अधिक उष्णता होने से पृथ्वी पर जीवन नष्ट हो जाएगा ।

Rahul Publications

गद्य विविधा

4

खेलो तो ऐसा खेलो

लेखक - योगराज थानी

लेखक परिचय

योगराज थानी की गिनती देश के महानतम खेल पत्रकारों में की जाती हैं । उन्हें खेल पत्रकारिता और खेल साहित्य की विकास यात्रा में अपना विशिष्ट योगदान देने वाले पत्रकार के रूप में जाना जाता है । उनका जन्म सन् 1931 में हुआ । बाल साहित्य लेखक के रूप में 1953 से 1964 के बच अपनी पहचान बनाने के बाद योगराज थानी ने हिंदी खेल पत्रकारिता में अनेक कीर्तिमान स्थापित किए । वह लंबे समय तक विभिन्न पत्र, पत्रिकाओं, आकाशवाणी और दूरदर्शन से जुड़े रहे । उनका निधन सन् 2009 में हुआ ।

Rahul Publications

'हॉकी के जादूगर' कहे जाने वाले भारतीय दिग्गज मेजर ध्यानचंद को हॉकी खेल इतिहास के ससे माहान हॉकी खेल इहिस के सबसे महान खिलाडियों में गिना जाता है । उनका जन्म २९ अगस्त १९०५ को इलाहाबाद में हुआ था । २९ अगस्त को उनके जन्मदिन को भारत में हर साल 'राष्ट्रीय खेला दिवस' के रूप में मनाया जाता है । ऐसा कहा जाता है कि ध्यानचंद के हॉकी स्टीक से गेंद इस तरह चिपकती रहती की विरोधी खिलाडी के अकसर ऐसा लगता था कि वाह जादूई स्टिक से खेल रहे है । व भारतीय फील्ड हॉकी के भुतपूर्व खिलाडी और अप्तान थे । उन्होंने तीन बार ओलंपिक के स्वर्ण पदक जीते ।

'हॉकी के जादूगर' कहे जाने वाले भारतीय दिग्गज मेजर ध्यानचंद को हॉकी खेल इतिहास के ससे माहान हॉकी खेल इहिस के सबसे महान खिलाडियों में गिना जाता है । उनका जन्म २९ अगस्त १९०५ को इलाहाबाद में हुआ था । २९ अगस्त को उनके जन्मदिन को भारत में हर साल 'राष्ट्रीय खेला दिवस' के रूप में मनाया जाता है । ऐसा कहा जाता है कि ध्यानचंद के हॉकी स्टीक से गेंद इस तरह चिपकती रहती की विरोधी खिलाडी के अकसर ऐसा लगता था कि वाह जादूई स्टिक से खेल रहे है । व भारतीय फील्ड हॉकी के भुतपूर्व खिलाडी और अप्तान थे । उन्होंने तीन बार ओलंपिक के स्वर्ण पदक जीते ।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर तीन - चार वाक्यो में दीजिए ।

1. ध्यानचंद्र का संक्षिपत जीवन परिचय लिखिए ।

उत्तर :

'हॉकी के जादूगर' कहे जाने वाले भारतीय दिग्गज मेजर ध्यानचंद को हॉकी खेल इतिहास के सबसे माहान हॉकी खेल इतिहास के सबसे महान खिलाडियों में गिना जाता है । उनका जन्म २९ अगस्त १९०५ को इलाहाबाद में हुआ था । २९ अगस्त को उनके जन्मदिन को भारत में हर साल 'राष्ट्रीय खेला दिवस' के रूप में मनाया जाता है । ऐसा कहा जाता है कि ध्यानचंद के हॉकी स्टीक से गेंद इस तरह चिपकती रहती की विरोधी खिलाडी के अकसर ऐसा लगता था कि वाह जादूई स्टिक से खेल रहे है । व भारतीय फील्ड हॉकी के भुतपूर्व खिलाडी और कप्तान थे । उन्होंने तीन बार ओलंपिक के स्वर्ण पदक जीते ।

2. ध्यानचंद को हॉकी का जादूगर क्यों कहते थे?

उत्तर :

१९२८ में एम्सटर्डम ओलंपिक में उनके नाम १४ गोल दर्ज है । इसी टुर्नामेंट के जीत के बाद उन्हें, हाकी का जादूगर' नाम से जाना जाने लगा । ध्यानचंद ने तीन बार स्वर्णपदक जिता। भारतीय कप्तान बनें और ओलंपिक में गोल्ड जीता । नैदरलैंडस में ध्यानचंद की हॉकी स्टीक तोडकर चेक किया था, कि कहीं इसमें चुबक तो नहीं लगी, क्योंकी गेंद इनके हॉकी स्टीक से चिपक के रहती थी, इसीलिए ध्यानचंद को 'हॉकी का जादूगर' कहते है ।

Rahul Publications

सरल हिन्दी व्याकरण

1. वर्तनी, शब्द विचार, उपसर्ग, प्रत्यय
2. लिंग एवं वचन
3. वाक्य संरचना, कारक
4. काल, कारक
5. बोधक गद्यांश
6. अनुवाद

Rahul Publications

सरल हिन्दी व्याकरण

1 वर्तनी, शब्द विचार, उपसर्ग, प्रत्यय

वर्तनी

भाषा मनुष्य के भावों और विचारों के संप्रेषण का श्रेष्ठ साधन है। यह ध्वनियों की व्यवस्था से निर्मित होती है। ये ध्वनियाँ मनुष्य के उच्चारण अवयवों से उच्चति होती हैं। भाषा के दो रूप होते हैं - उच्चारित रूप और लिखित रूप। लिखित भाषा में हर मूल ध्वनि के लिए एक चिह्न निर्धारित कर लिया जाता है। इसे वर्ण कहते है। इस तरह से वर्ण उस मूल ध्वनि या उसके चिह्न को कहते हैं जिसके और टुकड़े न हो सके। जैसे 'अ' 'इ' 'क्' आदि। वर्णों या ध्वनियों का उच्चारण मुख के भिन्न - भिन्न भागों से होता है। हिंदी वर्णमाला के प्रथम 11 वर्ण स्वर कहलाते हैं।

स्वर : अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ

व्यंजन :

'क' वर्ग	-	क ख ग घ ङ
'च' वर्ग	-	च छ ज झ ञ
'ट' वर्ग	-	ट ठ ड ढ ण
'त' वर्ग	-	त थ द ध न
'प' वर्ग	-	प फ ब भ म
अंतस्थ	-	य र ल व
ऊष्म	-	श ष स ह।
संयुक्ताक्षर	-	क्ष त्र ज्ञ

इस वर्णमाला के अतिरिक्त हिंदी में कुछ नव विकसित ध्वनियाँ हैं। इनको निम्नलिखित अक्षरों के नीचे बिंदी लगाकर सूचित किया जाता है।

ड़ ढ़ क़ ख़ ग़ ज़ फ़

स्वर का उच्चारण स्वतंत्र रूप से होता है। जबकि व्यंजन का उच्चारण स्वर की सहायाता से होता है।

Rahul Publications

शुध्द वर्तनी के नियम

उच्चारण की अशुध्दता, हिंदी सीखनेवाले विद्यार्थियों की मातृभाषा का प्रभाव और हिंदी शब्द रचना और व्याकरण के अपूर्ण ज्ञान से वर्तनी की त्रुटियाँ हो जाती है । इसलिए विद्यार्थियों को वर्तनी दोषों से बचने के लिए निरंतर अभयास की जरूरत होती है ।

शुध्द	-	अशुध्द
अभ्यास	-	अब्यास
क्योंकि	-	क्यूँकि
आरंभ	-	आरंब
पुरूष	-	पुरूस
धन	-	दन
शक्ति	-	शक्ती
कोशिश	-	कोशीश
खींचना	-	खैंचना
खूबसूरत	-	खूबसुरत
पेट	-	पेठ
भूख	-	भूक
मालूम	-	मालुम
उर्दू	-	उर्दु
अभीष्ट	-	अभिष्ट
ठीकठाक	-	ठिकठाक
रवीन्द्र	-	रविन्दर
सम्मान	-	सन्मान

Rahul Publications

सूखा	-	सूका
शोर	-	सोर
क्लिष्ट	-	क्लीष्ट
आँधी	-	आंधी
कारण	-	कारन
परिचित	-	परचित
दूध	-	दूद
स्टेशन	-	इस्टेशन
समझना	-	समजना
धोखा	-	धोका
नारी	-	नारि
पानी	-	पाणी
बैंक	-	ब्याँक
भूमि	-	भूमी
रात्रि	-	रात्री
उपग्रह	-	उपगृह
धूम्रपान	-	धुम्रपान
निष्क्रिय	-	निष्क्रीय
प्रतीक्षालय	-	प्रतिक्षालय
उज्ज्वल	-	उज्वल
साधारण	-	सादारण
तैयार	-	तयार
आशीर्वाद	-	आशिर्वाद

Rahul Publications

शब्द विचार

एक या अनेक वर्णों से मिलकर बनी हुई सार्थक ध्वनियों को शब्द कहते है । जैसे - जा, खिड़की, पुस्तक । शब्दों से वाक्य और वाक्यांश बनते हैं । शब्दों के बनावट की दृष्टि से शब्द तीन प्रकार के होते है -

1. रूढ़ि
2. यौगिक
3. योग रूढ़ि

रूढ़ि शब्द वे हैं जिनके वर्णों को अलग करने पर उन वर्णों का कोई अर्थ नहीं होता । मेज को अलग करने पर मे+ज बनता है । इन खण्डों का कोई अर्थ नहीं है ।

यौगिक वे शब्द है जो दो या दो से अधिक शब्दों के योग से बनते हैं । जैसे पाठ+शाला पाठशाला ।

योग रूढ़ि वे शब्द है जो यौगिक संज्ञाओं के समान दो शब्दों के योग से बने हों और सामान्य अर्थ को छोड़ कर विशेष अर्थ प्रकट करते हों जैसे पंकज शब्द का अर्थ है कीचड़ से उत्पन्न । लेकिन उसका विशेष अर्थ है कमल ।

हिंदी एक विकासशील भाषा है । इसके शब्द भंडार का विकास निरंतर होता आ रहा है । हिंदी भाषा ने संस्कृत भाषा से शब्दों को स्वीकार किया । फिर स्थानीय बोलियों से भी शब्दों को लिया । दूसरे प्रांतों की भाषाओं, दूसरे देशों की भाषाओं से भी शब्दों को लिया । इस तरह हिंदी भाषा समृध्द होती गयी ।

हिंदी शब्द - भंडार का विकास तत्सम, तद्‌भव, देशज और विदेशी भाषाओं के शब्दों से हुआ है ।

शब्द रचना

भावों और विचारों के आदान - प्रदान के लिए वाक्यों का प्रयोग करते हैं । वाक्यों में व्याकरणिक नियमों के अनुसार शब्दों का प्रयोग होता है । शब्द का प्रयोग वाक्य में होने पर वह पद बन जाता है । शब्दों का परिचय देते हुए बताया गया है कि शब्द बनावट के अनुसार रूढ़ि, यौगिक और यौगरूढ़ि तीन तरह के कहे जा सकते हैं ।

उपसर्ग

उपसर्ग वे शब्दांश है जो किसी शब्द के आदि में आकर उसके अर्थ को बदल देते हैं । इन उपसर्गों का प्रयोग स्वतंत्र रूप में भाषा में नहीं होता। जैसे बल शब्द के सामने 'प्र' उपसर्ग लगाने पर प्रबल शब्द बन जाता है । इसी तरह 'निर' उपसर्ग लगाने पर निर्बल शब्द बन जाता है ।

संस्कृत के उपसर्ग :

उपसर्ग	अर्थ	शब्द रूप
अति	अधिक	अतिरिक्त, अतिवृष्टि
अधि	ऊपर, श्रेष्ठ	अधिकार, अधिपति
अनु	पीछे, समान	अनुज, अनुचर
अप	बुरा	अपमान, अपशब्द
अव	नीचे, हीन	अवगुंण, अवनति
आ	तक, सहित	आजीवन, आकर्षण
उप	समीप, गौण	उपवन, उपनाम
परि	आस - पास	परिजन, परिक्रमा
सु	अच्छा	सुपुत्र, सुगम
पुरा	पहले	पुरातन, पुरातत्व

Rahul Publications

संस्कृत के उपसर्ग :

उपसर्ग	अर्थ	शब्द रूप
अ	रहित	अभाव, अचेतन
अध	आधा	अधपका, अधमरा
नि	रहित	निकम्मा, निड़र
कु	बुराई	कुटीर, कुचाल
औ	हीन	औगुण, औगट

ऊर्दू के उपसर्ग :

उपसर्ग	अर्थ	शब्द रूप
कम	थोड़ा	कमजोर, कमसमझ
खूश	प्रसन्न	अच्छा खुशबू, खुशहाल
गैर	रहित	गैरहाजिर, गैरकानूनी
दर	में	दरअसल, दरकिनार
ना	नहीं	नालायक, नापसंद

प्रत्ययः

प्रत्यय धातु या शब्दों के अंत में जुड़े जाते है। इससे शब्द के अर्थ में विस्तार होता है। उदाहरण के लिए खेल शब्द के साथ आड़ी प्रत्यय जोड़ने से खिलाड़ी शब्द बनता है।

प्रत्यय	धातु	नया शब्द
अन	जल / लग / घुट	जलन, लगन, घुटन
आन	चढ़ / थक / उड़	चढ़ान, थकान, उड़ान
अनीय	मान / प्रदर्श / शोच	माननीय, प्रदर्शनीय, शोचनीय
अक्कड़	घुम / भुल / पिय	घुमक्कड़, भुलक्कड़, पियक्कड़
आऊ	टिक / बिक / दिख	टिकाऊ, बिकाऊ, दिखाऊ
नी	कर / भर / कथ	करनी, भरनी, कथनी
वना	डर / लुभ / सुह	डरावना, लुभावना, सुहावना

पर्यायवाची शब्द

जिन शब्दों के अर्थ में समानता हो उन्हों पर्यायवाची शब्द कहते हैं। इनको समानार्थक शब्द कहते हैं। इनको समानार्थक शब्द भी कहा जाता है। इनमें अर्थ की समानता होते हुए भी इनका प्रयोग विविध संदर्भों में होता है।

Rahul Publications

शब्द	पर्यायवाची शब्द
आग	अग्नि, अनल, पावक, हुताशन, जातवेद, वैश्वानर
घोड़ा	अश्व, हय, वाजि, घोटक, तुरग, तुरंगम
आकाश	नभ, अंबर, आसमान, गगन, व्योम, अंतसिक्ष
इच्छा	चाह, अभिलाषा, कामना, वांछा, आकांक्षा, मनोरथ
कमल	पंकज, निरज, राजीव, सरोज, पद्म, अरविंद
घर	भवन, सदन, मकान, गृह, आवास, निलय
नदी	सरिता, तटिनी, तरंगीणी, निर्झरिणी, सलिला
पक्षी	खग, विहंग, पखेरू, विहग, परिंदा, अंडज
पृथ्वी	भूमि, धरा, धरती, धरणी, वसुधा, धरित्री
समुद्र	सागर, जलधि, रत्नाकर, पयोधि, जलनिधि, सिंधु
सूर्य	दिनकर, भास्कर, रवि, प्रभाकर, आदित्य, मित्र
अपमान	अनादर, बेइज्जती, अवमानना, निरादर, तिरस्कार
अनुपम	अनूप, अपूर्व, अतुल, अनोखा, अद्भूत, अनन्य
अंधकार	तम, तिमिर, अंधेरा, अंधियारा, तमस, तमिस्त्र
जल	पानी, नीर, सलील, वारि, अंबु
वायु	पवन, समीर, हवा, मारूत, अनील
पेड़	वृक्ष, तरू, झाड़, विटप
नारी	औरत, महिला, स्त्री, सबला
मनुष्य	मानव, नर, इंसान, आदमी
चाँद	चंद्र, शशि, रजनीश, सोम, कलानिधि
दिन	दिवस, दिवा, वार, याम

Rahul Publications

शिक्षक	गुरू, अध्यापक, आचार्य
धन	दौलत, संपत्ति, संपदा, वित्त, अर्थ
फूल	पुष्प, सुमन, कुसुम
माता	माँ, जननी, अम्मा, अंबा

विलोम शब्दः (विपरीतार्थक शब्द)

वे शब्द जिनके अर्थ एक दूसरे के विपरीत होते है उनको विलोम शब्द कहा जाता है ।

अंत × आदि

अति × अल्प

अपना × पराया

अपराजित × पराजित

अर्वाचीन × प्राचीन

अकाल × सुकाल

अनन्त × अन्त, सान्त

अज्ञ × विज्ञ

अपराधी × निरपराधी

अमृत × विष

अतिथि × आतिथेय

आकाश × पाताल

आचार × अनाचार

इच्छा × अनिच्छा

उत्थान × पतन

उपस्थित × अनुपस्थित

Rahul Publications

उपस्थित	×	अनुपस्थित
उत्कृष्ट	×	निकृष्ट
उपकार	×	अपकार
उद्घाटन	×	समापन
उत्पति	×	विनाश
उपचार	×	अपचार
उषा	×	संध्या
उत्तीर्ण	×	अनुत्तीर्ण
उल्लास	×	विषाद
उधार	×	नकद
एक	×	अनेक
कायर	×	वीर
कड़ुवा	×	मीठा
कमजोर	×	बलवान
क्रोध	×	शान्त
कोर्ति	×	अपकीर्ति
ग्राम	×	नगर
गर्मी	×	सर्दी
घृणा	×	प्रेम
जल	×	थल
दया	×	क्रूरता
दक्षिण	×	उत्तर

Rahul Publications

दिन	×	रात
दुर्गन्ध	×	सुगन्ध
दुरूपयोग	×	सदुपयोग
दूर	×	पास
धूप	×	छाँव
नया	×	पुराना
नश्वर	×	शाश्वत
निर्बल	×	सबल
निन्दा	×	स्तुति
निरक्षर	×	साक्षर
प्रश्न	×	उत्तर
बलवान	×	कमजोर
कठिन	×	सरल
शुभ	×	अशुभ
जन्म	×	मृत्यु
ज्ञान	×	अज्ञान
स्वदेश	×	विदेश
हिंसा	×	अहिंसा
न्यान	×	अन्याय
उपस्थित	×	अनुपस्थित
आशा	×	निराशा

Rahul Publications

अभ्यास

1. नीचे दिए गए शब्दों के विलोम शब्द लिखिए ।

   निर्धन, प्रकाश, सद्गुण, निंदा, कीर्ति, उदार, उत्थान, अपना

2. नीचे दिए गए शब्दों के समानार्थी लिखिए ।

   अभिप्राय, कमल, सूर्य, धरती, पेड़ धन, शरीर, मार्ग

3. वातावरण अनुकूल है । (रेखांकि शब्द में उपसर्ग क्या है?)
4. सीता हरदिन पढ़ती है । (रेखांकि शब्द में उपसर्ग क्या है?)
5. चौरस्ते पर भीड़ है । (रेखांकि शब्द में उपसर्ग क्या है?)
6. वह दुर्बल है । (रेखांकि शब्द में उपसर्ग क्या है?)
7. वह चतुराई से काम करता है । (रेखांकि शब्द में प्रत्यय क्या है?)
8. डॉ. चंद्रा धैर्यशाली है । (रेखांकि शब्द में प्रत्यय क्या है?)
9. भारतीय संस्कृति महान है । (रेखांकि शब्द में प्रत्यय क्या है?)
10. वह साहसी लड़का है । (रेखांकि शब्द में प्रत्यय क्या है?)

Rahul Publications

सरल हिन्दी व्याकरण

2

लिंग एवं वचन

परिभाषा

शब्द के जिस रूप से किसी व्यक्ति, वस्तु आदि के पुरूष जाति अथवा स्त्री जाति के होने का बोध हो, उसे लिंग कहते हैं । जैसेः हाथी, बाघ, बकरी आदि । इनमें हाथी, बाघ पुल्लिंग हैं, जबकि बकरी स्त्रलिंग है । हिंदी में लिंग के दो भेद हैं । वे हैं छ

1. पुल्लिंग और
2. स्त्री लिंग

1. पुल्लिंग

जिन संज्ञा शब्दों से पुरूष जाति का बोध होता हो या जो शब्द पुरूष जाति के अंतर्गत स्वीकारे जाते हों, वे शब्द पुल्लिंग कहलाते हैं । जौसेः कुत्ता, शेर, बैल आदि ।

2. स्त्री लिंग

जिन संज्ञा शब्दों से स्त्री जाति का बोध हो या जो शब्द स्त्री जाति के अंतर्गत स्वीकारे जाते हों, वे शब्द स्त्री लिंग कहलाते है । जैसेः कुतिया, शेरनी, गाय आदि ।

पुल्लिंग शब्द	प्रत्यय			स्त्री लिंग शब्द
देव, घोड़ा, चाचा	+	ई	=	देवी, घोड़ी, चाची
चूहा, बेटा	+	इया	=	चुहिया, बिटिया
माली, तेली	+	इन	=	मालिन, तेलिन
मोर, सिंह, शेर	+	नी	=	मोरनी, सिंहनी, शेरनी
नौकर, सेठ	+	आनी	=	नौकरानी, सेठानी
पंडित, ठाकुर	+	आइन	=	पंडिताइन, ठकुराइन

Rahul Publications

नायक, लेखक	+	इका	=	नायिका, लेखिका
सुत, पंडित	+	आ	=	सुता, पंडिता
भगवान, श्रीमान	+	अती	=	भगवती, श्रीमती

अभ्यास

रेखांक्ति शब्द का लिंग बदलकर वाक्य लिखिए ।

1. लुहार लोहे के औजार बनाता है ।
2. नानी घर आयी हैं ।
3. नौकर बाज़ार गया है ।
4. मोर सुंदर पक्षी है ।
5. छात्र पढ़ रहा है ।
6. गाय खेत में है ।
7. शेर मासाहारी जानवर है ।
8. पंडित पूजा कर रहा है ।
9. माली बगीचे में बैठा है ।
10. लेखक ने कहानी लिखी ।

Rahul Publications

वचन

वचन की परिभाषा

शब्द के जिस रूप से एक या एक से अधिक का बोध होता हैं, 'वचन' कहते है । वचन का शाब्दिक अर्थ है - 'संख्यावचन'। 'संख्यावचन' को ही संक्षेप में 'वचन' कहते है । वचन के दो भेद हैं ।

1. एकवचन
2. बहुवचन

1. एकवचन

संज्ञा के जिस रूप से एक व्यक्तिया एक वस्तु होने का ज्ञान हो, उसे एकवचन कहते है । जैसे- लड़का, घोड़ा, नदी, झरना, खंभा, गाय, बच्चा, स्त्री, कपड़ा, माता, माला, पुस्तक, टोपी, बंदर, मोर आदि ।

2. बहुवचन

शब्द के जिस रूप से एक से अधिक व्यक्ति या वस्तु होने का ज्ञान हो, उसे बहुवचन कहते है । जैसे : लड़के, घोड़ा, नदियाँ, झरने, खंभे, बच्चे, स्त्रियाँ, कपड़े, माताएँ, मालाएँ, पुस्तकें, टोपियाँ, बंदर, मोर आदि ।

Rahul Publications

एकवचन से बहुवचन बनाने के नियम

विभिक्ति रहित संज्ञाओं के बहुवचन बनाने के नियम :

आकारान्त पुल्लिंग शब्दों में 'आ' के स्थान पर 'ए' लगाने से :

एकवचन	-	**बहुवचन**
लड़का	-	लड़के
फीता	-	फीते
तारा	-	तारे

अकारांत स्त्रीलिंग शब्दों में 'अ' के स्थान पर 'ए' लगाने सेः

एकवचन	-	**बहुवचन**
आँख	-	आखें
पुस्तक	-	पुस्तकें
कलम	-	कलमें

जि स्त्रीलिंग संज्ञाओं के अन्त में 'या' आता है, उनमें 'या' के ऊपर चन्द्रबिन्दु लगाने से बहुवचन बनता है । जैसेः

एकवचन	-	**बहुवचन**
डिबिया	-	डिबियाँ
गुडिया	-	गुडियाँ
चिडिया	-	चिडियाँ

ईकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के 'इ' या 'ई' के स्थान पर 'इयाँ' लगाने से :

एकवचन	-	**बहुवचन**
तिथि	-	तिथियाँ
नारी	-	नारियाँ
थाली	-	थालियाँ

आकारांत स्त्रीलिंग एकवचन संज्ञा-शब्दों के अन्त में 'एँ' लगाने से बहुवचन बनता है । जैसेः

एकवचन	-	**बहुवचन**
माता	-	माताएँ
शाखा	-	शाखाएँ

Rahul Publications

इकारांत स्त्रीलिंग शब्दों में 'याँ' लगाने से :

एकवचन	-	बहुवचन
नदी	-	नदियाँ
लड़की	-	लड़कियाँ
जाति	-	जातियाँ

अभ्यास

रेखांक्ति शब्द का वचन बदलकर वाक्य लिखिए।

1. लड़का खेलता है।
2. दर्जी कपड़े सीता है।
3. मेरे पास घड़ा है।
4. वह रूपये लाया।
5. मैं केला खाता हूँ।
6. उसके घर के पास आम का पेड़ है।
7. यह राजु का घर है।
8. बिल्ली दूध पीती है।
9. वह पुस्तक पढ़ता है।
10. जड़ मजबूत है।

Rahul Publications

सरल हिन्दी व्याकरण

3 वाक्य संरचना, कारक

शुद्ध - अशुद्ध वाक्यों के उदाहरण

1. अशुद्ध : राम रावण मारा
   शुद्ध : राम ने रावण को मारा।
2. अशुद्ध : वह घर को चला गया।
   शुद्ध : वह घर जला गया।
3. अशुद्ध : मेरे को बुला रहा है।
   शुद्ध : वह मुझे बुला रहा है।
4. अशुद्ध : तुम तेरे भाई के साथ खेल।
   शुद्ध : तुम अपने भाई के साथ खेलो।
5. अशुद्ध : आप तुम्हारा रूपया ले लो।
   शुद्ध : आप अपने रूपये ले लीजिए।
6. अशुद्ध : वह सबसे श्रेष्ठतम है।
   शुद्ध : वह सबसे श्रेष्ठ है।
7. अशुद्ध : आप अच्छी महापुरूष हैं।
   शुद्ध : आप महापुरूष हैं।
8. अशुद्ध : वह शिक्षा दिया।
   शुद्ध : उसने शिक्षा दी।
9. अशुद्ध : वे गाँव जाता है।
   शुद्ध : वह गाँव जाता है।
10. अशुद्ध : वह धीरे चला गया।
    शुद्ध : वह धीरे से चला गया।

Rahul Publications

11. अशुद्ध : यदि काम करोगे इसलिए पैसा मिलेगा ।

शुद्ध : यदि काम करोगे तो पैसा मिलेगा ।

12. अशुद्ध : उनका प्राण चला गया ।

शुद्ध : उनके प्राण चले गये ।

13. अशुद्ध : उसका होश उड़ गया ।

शुद्ध : उसके होश उड़ गए ।

14. अशुद्ध : मैं चाय पीते हैं ।

शुद्ध : मै जाय पीते हूँ ।

15. अशुद्ध : कल परिणाम निकलेगी ।

शुद्ध : कल परिणाम निकलेगा ।

Rahul Publications

अभ्यास

निम्न लिखित वाक्य पढ़िए और शुद्ध कीजिए ।

1. मोहन ने पुस्तक लिखा ।
2. वह खेल खेला ।
3. अध्यापक ने विद्यार्थी पढ़ाया ।
4. उसने खेलना चाहिए ।
5. खाना खाके आओ ।
6. वह पढ़ते है ।
7. मैं मेरे गाँव जाऊँगा ।
8. तू तेरे भाई के साथ खेल ।
9. वह खाना खा लिया ।
10. यह मेरी देलीविजन है ।

कारक

भाषा में कारकों का महत्वपूर्ण स्थान है । वाक्य रचना कारकों के बिना अधूरी है । वाक्य में शब्दों के बीच के संबंध को कारक ही बनाकर रखते हैं । वास्तव में कारक शब्दों के बीच सेतु का काम करते हैं । संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका संबंध वाक्य के अन्य शब्दों से जाना जाता है, उसे कारक कहते हैं ।

	कारक का नाम		**कारक चिह्न (विभक्ति)**
1.	कर्ता कारक	-	ने
2.	कर्म कारक	-	को
3.	करण कारक	-	से, के द्वारा, के साथ
4.	संप्रदान कारक	-	को, के लिए
5.	अपादान कारक	-	से
6.	संबंध कारक	-	में, पर
7.	अधिकरण कारक	-	का, की, के, रा, री, रे, ना, नी, ने
8.	संबोधन कारक	-	अरे, अरी, रे, ओ, हे, री

Rahul Publications

अभ्यास

रिक्त स्थानों की पूर्ति सही कारक चिहनों से कीजिए ।

1. राजु ________ पढ़ाई की ।
2. ________ क्तिना सुंदर दृश्य है ।
3. मेज ________ पुस्तक है ।
4. वह बस ________ गिर पड़ा ।
5. सोमू ________ पुस्तक चाहिए ।
6. वह बहुत दूर ________ आता है ।

7. घर ________ अनाज चाहिए।
8. वह रामू ________ लड़ता है।
9. किसान मिट्टी ________ बीज बोता है।
10. वह पेड़ ________ फल तोड़ने लगा।
11. राम कलम ________ लिखता है।
12. पिता पुत्र ________ समझाता है।
13. मेरा घर दिल्ली ________ है।
14. डाल ________ चिड़िया बैठी है।
15. नौकर ________ काम किया।
16. रमेश ________ बेटी बीमार है।
17. आशा ________ गीत गाया।
18. ________ भगवान। अब मैं क्या करूँ।
19. यह पुस्तक संगीत ________ है।
20. मैं तुम ________ बड़ा हूँ।

Rahul Publications

सरल हिन्दी व्याकरण

4 काल, कारक

काल

'काल' क्रिया का वह रूप है, जिससे उसके होने अथवा करने के समय तथा उसकी पूर्णता या अपूर्णता का बोध होता है। जैसे : वह पढ़ता है। राधा नाच रही है। वे खा चुके थे।

काल के भेद : काल के ती भेद हैं :

1. भूतकाल
2. वर्तमानकाल
3. भविष्य काल

1. **भूत काल :** जिस क्रिया के कार्य की समाप्ति का बोध हो, उसे भूत काल की क्रिया कहते हैं. जैसे : वह सोया था। सुनीता गयी। उसने गाना गया था।
2. **वर्तमान काल :** क्रिया अथवा क्रियाओं की निरंतरता को 'वर्तमान' काल कहते हैं। जैसे : सोमू पढ़ता है। मैं खेल रहा हूँ।
3. **वर्तमान काल :** क्रिया अथवा क्रियाओं की निरंतरता को 'वर्तमान' काल कहते हैं। जैसे : सोमू पढ़ता है। मैं खेल रहा हूँ।

Rahul Publications

अभ्यास

सूचना के अनुसार बदलिए।

1. डॉ. चंद्रा कामज़ोर नहीं थी। (वर्तमान काल)
2. मुझे भैया का आज्ञा पालन करना है। (भूत काल)
3. मैं खेलता हूँ। (भविष्य काल)
4. मुझे बाज़ार जाना था। (वर्तमान काल)

5. मुझे काम करना होगा। (भूत काल)
6. वह पढ़ रहा था। (वर्तमान काल)
7. मैं गाँव जाऊँगा। (भूतकाल)
8. मैं लिखता हूँ। (भविष्य काल)
9. वह दिल्ली गया। (वर्तमान काल)
10. मैं खाना पकता हूँ। (भविष्य काल)

Rahul Publications

सरल हिन्दी व्याकरण

5 बोधक गद्यांश

'बोधक' का अर्थ है - 'पढ़कर समझा गया' । यहाँ नीचे कुछ गद्यांश दिए गए हैं । ये गद्यांश उपवाचक पाठों से लिये गए हैं । प्रत्येक उपवाचक पाठ से एक-एक अनुच्छेद लिया गया है । प्रत्येक अनुच्छेद के नीचे पाँच-पाँच प्रश्न पूछे गए हैं । अतः इन प्रश्नों के उत्तर गद्यांश को अच्छी तरह से पढ़कर, समझकर देने पड़ते हैं । नीचे दिए गए गद्यांशों व प्रश्नोत्तर रूपी अभ्यास इस प्रकार है ।

1. नीचे दिया गया अनुच्छेद पढ़िए । प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में दीजिए ।

बारहवीं कक्षा की बोर्ड परीक्षा समाप्त हो गई और रिज़ल्ट आने में दो महीने का समय था । कारखाने में भरती पूरे जोश में थी । गाँव के दूसरे नौजवान कारखाने में भरती हो रहे थे, लेकिन रवीन्द्र ने अपना लक्ष्य आई.ए.एस. रख लिया था, वह नौकरी के लिए तैयार नहीं था । घर में खाली बैठे पुत्र को कोई बरदाश्त नहीं करता है । उसे घर देख माँ ने पिता से कहा, ''अजी सुनते हो, गाँव के सारे लड़के कारखाने में भरती हो रहे हैं । अपना रबी घर पड़ा है, कुछ बात करो उससे। अपना रबी तो प्रथम आता है, फेल लड़के सारे भरती हो गए हैं, सुना है पाँच-पाँच हज़ार रूपय महीना तनखाह मिल रही है, इसको तो अधिक तनखाह मिलेगी ।''

Rahul Publications

प्रश्न 1: किस परीक्षाके परिणाम आने में दो महीने का समय था ।

उत्तर : बारहवीं कक्षा की बोर्ड परीक्षा के परिणाम आने में दो महीने का समय था ।

प्रश्न 2: रवींद्र क्या बनना चाहता था ?

उत्तर : रवींद्र आई.ए.एस. बनना चाहता था ।

प्रश्न 3: रवींद्र क्या नहीं करना चाहता था ?

उत्तर : रवींद्र कारखाने में नौकरी नहीं करना चाहता था ।

प्रश्न 4: कारखाने में क्तिना वेतन मिल रहा है?

उत्तर : कारखाने में पाँच हजार रुपये वेतन मिल रहा है ।

प्रश्न 5: इस गद्यांश के लेखक का नाम क्या है ।

उत्तर : इस गद्यांश के लेखक का नाम मनमोहन भाटिया है ।

2. नीचे दिया गया अनुच्छेद पढ़िए । प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में दीजिए ।

बाबा भारती ने घोड़े से उतरकर अपाहिज को घोड़े पर सवार किया और स्वयं उसकी लगाम पकड़कर धीरे-धीरे चलने लगे । सहसा उन्हें एक झटका-सा लगा और लगाम हाथ से छुट गई । उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा, जब उन्होंने देखा कि अपाहिज घोड़े की पीठ पर तनकर बैठा है और घोड़े को दौड़ाए लिए जा रहा है । उनके मुख से भय, विस्मय और निराशा से मिली हुई चीख निकल गई । वह अपाहिज डाकू खड़गसिंह था । बाबा भारती कुछ देर तक चुप रहे और कुछ समय पश्चात् कुछ निश्चय करके पूरे बल से चिल्लाकर बोले, ''जरा ठहर जाओ।''.

प्रश्न 1: घोड़े के साथ कौन धीरे - धीरे चलने लगे ?

उत्तर : घोड़े के साथ बाबा भारती धीरे - धीरे चलने लगे ।

प्रश्न 2: वास्तव में अपाहिज कौन था ?

उत्तर : वास्तव में अपाहिज डाकू खड़गसिंह था ।

प्रश्न 3: चीख कैसी थी?

उत्तर : चीख भय, विस्मय और निराशा वाली थी ।

प्रश्न 4: अपाहिज खड़गसिंह को किसने ठहरने के लिए कहा ?

उत्तर : अपाहिज खड़गसिंह को बाबा भारती ने ठहरने के लिए कहा ।

प्रश्न 5: यह अनुच्छेद किस पाठ से लिया गया है ?

उत्तर : यह अनुच्छेद 'हार की जीत' पाठ से लिया गया है ।

3. नीचे दिया गया अनुच्छेद पढ़िए । प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में दीजिए ।

यह नितांत एक मूर्खता है कि हम प्रगाति के नाम पर अपने वनों को नष्ट कर रे हैं और अपने पारिस्थितिक संतुलन को बिगाड़ रहे हैं । व्यापक स्तर की दूरगामी योजनाओं के अभाव में शहरीकरण ने अनेक शहरी तथा उपशहरी क्षेत्रों को व्यावसायिक जंगलों में बदल दिया है । जमीन के इस गलत उपयोग का एक गंभीर परिणाम है विभिन्न प्रकार के जीवों की समाप्ति । शहरों की वृद्धि, कृषि के प्रसार, बांधों के निर्माण तथा वनों के विनाश से जंगली जीवों के आवास नष्ट हुए हैं । जीवों की बहुत-सी प्रजातियों और उपप्रजातियों के विलुप्त होने का खतरा उत्पन्न हो गया है ।

Rahul Publications

प्रश्न 1: वनों को काटना कैसा काम है?

उत्तर : वनों को काटना मूर्खता वाला काम है ।

प्रश्न 2: यहाँ किस संतुलन के बारे में चर्चा हो रही है ?

उत्तर : यहाँ पारिस्थिकि संतुलन के बारे में चर्चा हो रही है ।

प्रश्न 3: किसके गलत उपयोग से गंभीर परिणाम होते है ?

उत्तर : जमीन के गलत उपयोग से गंभीर परिणाम होते है ।

प्रश्न 4: किनके आवास नष्ट हुए हैं ?

उत्तर : जंगली जीवों के आवास नष्ट हुए हैं ।

प्रश्न 5: इस अनुच्छेद के लेखक का नाम क्या है ।

उत्तर : इस अनुच्छेद के लेखक का नाम एन. मणिवासकम है ।

4. नीचे दिया गया अनुच्छेद पढ़िए । प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में दीजिए ।

अपने निर्माण के दौर में टीमें बच्चों की तरह ही होती हैं । वे एकदम उत्तेजनशील, ओजस्विता, उत्साह एवं उत्सुक्ता से भरपूर और अपने को विशिष्ट दिखाने की इच्छा लिये होती हैं । हालाँकि बहकाए हुए अभिभावक अपने व्यवहार से इन बच्चों की सकारात्मक विशेषताओं, गुणों को नष्ट कर सक्ते हैं । टीमों की सफलता के लिए काम का माहौल ऐसा होना चाहिए जो कुछ नया करने का अवसर प्रदान करे । डी.टी.डी. एंड पी. (एयर), इसरो, डी.आर.डी.ओ. और दूसरी जगहों पर काम करने के दौरान मैंने ऐसी चुनौतियों का मुकाबला किया हः लेकिन अपनी टीमों को हमेशा ऐसा माहौल देना सुनिश्चित किया जिसमें वे कुछ नया कर सकें और जोखिम उठा सकें ।

प्रश्न 1: टीमे किनकी तरह होती है ?

उत्तर : टोमे बच्चों की तरह होती हैं ।

प्रश्न 2: बच्चों की विशेषताएँ कैसी होती हैं ?

उत्तर : बच्चों की विशेषताएँ सकारात्मक होती हैं ।

Rahul Publications

प्रश्न 3: टीमों को कैसा अवसर देना चाहिए ?

उत्तर : टीमों को कुछ नया करने का अवसर देना चाहिए ।

प्रश्न 4: यहाँ किन संस्थाओं के नाम बताए गए हैं ?

उत्तर : यहाँ डी.टी.डी. एंड पी. (एयर), इसरो, डी. आर. डी. ओ. के नाम बताए गए हैं ।

प्रश्न 5: यहाँ 'मैने' शब्द का उपयोग किसके लिए हुआ है?

उत्तर : यहाँ मैंने शब्द का उपयोग ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के लिए हुआ है ।

Rahul Publications

सरल हिन्दी व्याकरण

6 अनुवाद

अनुवाद एक महत्वपूर्ण भाषाई प्रक्रिया है । अनुवाद शब्द अंग्रेजी के ट्रांसलेशन और फारसी के तरजुमा का पर्याय है । एक भाषा के कथन का दूसरी भाषा में रूपांतरण अनुवाद कहा जाता है ।

अनुवाद तीन प्रकार से होता है ।

1. शाब्दिक अनुवाद
2. भावानुवाद
3. सारानुवाद

अंग्रेजी - हिंदी अनुवाद के उदहारण

	अंग्रेजी	हिंदी
1.	I read.	मैं पढ़ता हूँ । पढ़ती हूँ ।
2.	He reads/she reads	वह पढ़ता है । पढ़ती है ।
3.	Boys read./Girls read.	लड़के पढ़ते है । लड़कियाँ पढ़ती है ।
4.	India is a country of villages.	भारत गाँवों का देश है ।
5.	This is the house of Rama.	यह राम का घर है ।
6.	I have a Pen.	मेरे पास कलम है ।
7.	Bring those books.	उन किताबों को लाओ ।
8.	They are my books.	वे मेरी किताबें हैं ।
9.	I do my work myself.	मैं अपना काम आप ही करता हूँ ।
10.	There is a tree near my house	मेरे घर के पास एक पेड़ है ।

Rahul Publications

11.	It was terribly hot.	बहुत गर्मी पड़ रही थी।
12.	He can do nothing. /He cannot do anything.	वह कुछ नहीं कर सकता।
14.	Which boy took the book.	किस लड़के ने किताब ली।
15.	Does he eat?	क्या वह खाता है ?
16.	What does he eat?	वह क्या खाता है ?
17.	Where are you coming from?	तुम कहाँ से आ रहे रो ?
18.	Do the boys know when Their examination will be held?	क्या लड़कों को मालूम है कि उनकी परीक्षा कब होगी ?
19.	I prefer cricket to football/ I prefere cricket rather than football.	मैं फुटबाल से क्रिकेट को पसदं करता हूँ अधिक पसदं करता हूँ।
20.	I do not play football.	मैं फुटबाल नहीं खेलता हूँ।
21.	I have read.	मैं पढ़ चुका हूँ।
22.	I have read this book	यह किताब मैंने पढ़ी है।
23.	He has helped me.	उसने मेरी मदद की है।
24.	Boys went to school.	लड़के स्कूल गये।
25.	When I reach home father was reading newspaper-	जब मैं घर पहुँचा, पिताजी अखबर पढ़ रहे थे।
26.	I had been to Patna yesterday.	मैं कल पटना गया था।
27.	I shall/will play football-	मैं फुटबाल खेलूँगा।
28.	May I borrow your Pen.	क्या आप की कलम ले सकता
29.	He could not go to his office today	वह आज अपने ऑफिस नहीं जा सका।
30.	We should be good citizens.	हमें अच्छा नागरिक बनाना जाहिए।
31.	I have got my hear cut.	मैंने अपने बाल कटवायें है।
32.	Study for two hours everyday	रोज दो घंटे पढ़ा करो।
33.	Don't go home.	घर मत जाओ।

Rahul Publications

34. This is my own book. यह मेरी अपनी किताब है ।
35. He is angry with me. वे मुझ पर नाराज हैं ।
36. Your books are inside the almirah तुम्हारी किताबें अलमारी में हैं ।
37. I went to Delhi by plane. मैं हवाई जहाज से दिल्ली गया ।
38. He decorated his house. उसने अपने घर को सजाया ।

अभ्यास

अनुवाद कीजिए ।

1. I do my work my self.
2. Boys went to school.
3. Where are you coming from?
4. Which boy took the book.
5. I prefere cricket to football.
6. Don't go home.
7. Study for two hours every day.
8. He has helped me.
9. We should be good citizens.
10. I have read.

Rahul Publications

INTERMEDIATE PUBLIC EXAMINATION

Model Paper - I

HINDI

Paper - II

Time : 3 Hours | Max. Marks: 100

सूचनाएँ

1. सभी प्रश्न अनिवार्य है ।
2. जिस क्रम मे प्रश्न दिये गये हैं, उसी क्रम से उत्तर लिखना अनिवार्य है ।

खण्ड - 'क' (60 अंक)

I) निम्नलिखित किसी एक दोहे का भावार्थ लिखिए । 1 × 6 = 6

1. साच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप । **(Page No. 3, Bit - 2)**
   जाके हिरदे साच है, ता हिरदे गुरू आप ।
2. तुलसी मीठे बचन ते, सुख उपजत चहुँ ओर । **(Page No. 8, Bit - 1)**
   बसीकरन इक मंत्र है, परिहरू बचन कठोर ।।
3. बोली तो अनमोल है, जो कोई जानै बोल । **(Page No. 5, Bit - 4)**
   हिये तराजू तोलि के, तब मुख बाहर खोल ।।

II) निम्नलिखित किसी एक कविता का सारांश 5-6 वाक्यों में लिखिए । 1 × 6 = 6

1. समता का संवाद । **(Page No. 14, सारांश)**
2. प्रथम रश्मि । **(Page No. 18, सारांश)**
3. दान-बल । **(Page No. 24, सारांश)**

III) निम्नलिखित किसी एक पाठ का सारांश 5-6 वाक्यों में लिखिए । 1 × 6 = 6

1. शिष्टाचार । **(Page No. 33, Bit - 1)**
2. अपराजिता । **(Page No. 42, Bit - 1)**
3. बतुकम्मा । **(Page No. 52, Bit - 1)**

IV) निम्नलिखित किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर 3-4 वाक्यों में लिखिए। 2 × 4 = 8

1. रवींद्र का लक्ष्य क्या थ ? **(Page No. 63, Q.No. 1)**
2. बाबा भारती का सुल्तान के प्रति लगाव कैसा था ? **(Page No. 66, Q.No. 2)**
3. प्रदूषण को रोकने के कुछ उपाय लिखिए। **(Page No. 68, Q.No. 1)**
4. वनों को नष्ट करने से होने वाले दुष्परिणामों के बारे में लिखिए। **(Page No. 68, Q.No. 2)**
5. रवींद्र नौकरी क्यों नहीं करना चाहता था? **(Page No. 64, Q.No. 2)**

V) निम्नलिखित किन्हीं दो पद्यांशों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए। 2 × 3 = 6

1. भारत माता का मंदिर यह, समता का संवाद जहाँ। **(Page No. 15, Bit - 1)**
   सबका शिव कल्याण यहाँ है, पावें सभी प्रसाद यहाँ।।

2. शशि-किरणों से उत्तर-उतरकर, **(Page No. 19, Bit - 2)**
   भू पर कामरूप नभ-चर,
   चूम नवल कलियों का मृदु-मुख,
   सिखा रहे थे मुसाकाना।

3. दान जगत का प्रकृत धर्म है, मनुज व्यर्थ डरता है, **(Page No. 23, Bit - 2)**
   एक रोज तो हमें स्वयं सब-कुछ देना पड़ता है।
   बचते वही, समय पर जो सर्वस्व दान करते हैं,
   ऋतु का ज्ञान नहीं जिनको वे देकर भी मरते हैं।

4. ऋतु के बाद फलों का रूकना डालों का सड़ना है, **(Page No. 22, Bit - 1)**
   मोह दिखाना देय वस्तु पर आत्मघात करना है।
   देते तरू इसलिए कि रेशों में मत कीट समायें,
   रहें डालियों स्वस्थ और फिर नये-नये फल आयें।

VI) निम्नलिखित किन्हीं दो गद्यांशों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए। **2 × 3 = 6**

1. विनम्रता केवल बड़ों के प्रति नहीं होती। बराबर वालों और अपने से छोटों के प्रति भी नम्रता और स्नेह का भाव होना चाहिए। **(Page No. 32, Bit - 1)**

2. ईश्वर सब द्वार एक साथ बंद नहीं करता। यदि एक द्वार बंद करता भी है, तो दूसरा द्वार खोल भी देता है। **(Page No. 40, Bit - 2)**

3. रूई की पतली पत्ती दूध से भिगोकर जैसे-जैसे उसके नन्हें से मुँह में लगाई पर मुँह खुल न सका और दूध की बूँदें दोनों ओर ढुलक गई। **(Page No. 48, Bit - 2)**

4. तेलंगाणा यदि शरीर है तो बत्तुकम्मा उसकी आत्मा। बतुकम्मा के बिना तेलंगाणा राज्य की कल्पना करना अरांभव है। **(Page No. 57, Bit - 2)**

5. यदि कोई कुछ कष्ट या असुविधा उठाकर हमारे लिये कोई काम करता है तो हमें उसके प्रति अपनी कृतज्ञता अवश्य प्रकट करनी चाहिए। **(Page No. 32, Bit - 2)**

VII) निम्नलिखित किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर 3-4 वाक्यों में लिखिए। **2 × 3 = 6**

1. कबीरदास का संक्षिप्त परिचय लिखिए। **(Page No. 6, Bit - 2)**

2. तुलसी के अनुशार विपत्ति में साथी कौन होतो हैं ? **(Page No. 11, Bit - 1)**

3. गुप्त जी के अनुसार भारत देश की विशेषता क्या हैं ? **(Page No. 16, Bit - 1)**

4. सुमित्रानंदन पंत का कवि परिचय लिखिए। **(Page No. 20, Bit - 1)**

5. दान-बल कविता में फलों का दान करने से पेड़ को क्या लाभ होता है ? **(Page No. 25, Bit - 1)**

VIII) निम्नलिखित किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर 3-4 वाक्यों में लिखिए। **2 × 3 = 6**

1. शिष्टाचार के कितने गुण हैं, वे कौन-कौन से हैं ? **(Page No. 34, Bit - 2)**
2. चंद्रा की किस विषय में रूचि थी ? वह क्या बनना चाहती थी? **(Page No. 42, Bit - 1)**
3. गिल्लू किसका नाम है ? उसके बारे में आप क्या जानते हैं ? **(Page No. 50, Bit - 1)**
4. 'बतुकम्मा' का अर्थ क्या है और यह त्योहार कितने दिनों तक मनाया जाता है ? **(Page No. 59, Bit - 1)**
5. अनुशासन के पालन पर अपने विचार व्यक्त कीजिए। **(Page No. 35, Bit - 1)**

IX) एक शब्द में उत्तर लिखिए। **5 × 1 = 5**

1. कबीर के गुरू कौन थे ? **(Page No. 7, Bit - 1)**
2. तुलसी का अमर काव्य कौनसा है ? **(Page No. 12, Bit - 1)**
3. समता का संवाद कविता के कवि कौन हैं ? **(Page No. 17, Bit - 1)**
4. किस काव्य के लिए पंत जी को ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला ? **(Page No. 20, Bit - 2)**
5. दान-बल कविता को किस काव्य से लिया गया है ? **(Page No. 26, Bit - 4)**

X) एक शब्द में उत्तर लिखिए। **5 × 1 = 5**

1. शिष्टाचार का सबसे पहला गुण क्या है ? **(Page No. 36, Bit - 2)**
2. चंद्रा की माँ को कौन-सा पुरस्कार दिया गाया ? **(Page No. 43, Bit - 3)**
3. 'गिल्लू' नामक पाठ की लेखिका कौन है ? **(Page No. 51, Bit - 1)**
4. तेलंगाणा का राज्य पर्व कया है ? **(Page No. 60, Bit - 1)**
5. समाज में सभ्य बनकर रहने के लिए कौन से नियम ? जानना आवश्यक हैं ? **(Page No. 36, Bit - 1)**

खण्ड - 'ख' (40 अंक)

XI) निम्नलिखित गद्यांश पढ़कर नीचे दिये गये प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में लिखिए। **5 × 1 = 5**

बाबा भारती ने घोड़े स उतरकर अपाहिज को घोड़े पर सवार किया और स्वयं उसकी लगाम पकड़कर धीरे-धीरे चलने लगे। सहसा उन्हें एक झटका-सा लगा और लगाम राथ से छूट गई। उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा, जब दौड़ाए लिए जा रहा है। उनके मुख से भय, विस्मय और निराशा से मिली हुई चीख निकल गई। वह अपाहिज डाकू खड़गसिंह था। बाबा भारती कुछ देर तक चुप रहे और कुछ समय पश्चात् कुछ निश्चय करके पूरे बल से चिल्लाकर बोले, ''ज़रा ठहर जाओ''।

1. घोड़े के साथ कौन धीरे-धीरे चलने लगे ? **(बाबा भारती)**
2. वास्तव में अपाहिज कौन था ? **(खड्गसिंह डाकू)**
3. चीख कैसी थी ? **(भय, विस्मय, और निराशा वाली)**
4. अपाहिज खड़गसिंह को किसने ठहरने के लिए कहा ? **(बाबा भारती)**
5. यह अनुच्छेद किस पाठ से लिया गया है ? **(हार की जीत)**

XII) सूचना के अनुसार लिखिए।

I) निम्नलिखित किन्ही चार शब्दों के विलोम शब्द लिखिए। **1 × 4 = 4**

1. निर्धन **(धन)**
2. प्रकाश **(अंधेरा)**
3. उदार **(अनुदार)**
4. सद्गुण **(दुर्गुण)**
5. अनन्त **(ससीम)**
6. आकाश **(पाताल)**
7. उत्कृष्ट **(निकृष्ट)**
8. उषा **(संध्या)**

II) निम्नलिखित किन्ही चार शब्दों के समानार्थी शब्द लिखिए । **1 × 4 = 4**

1. मार्ग **(रास्ता)**
2. धरती **(भूमि)**
3. पेड़ **(वृक्ष)**
4. अभिप्राय **(विचार)**
5. आकाश **(अंबर)**
6. पक्षी **(पंछी)**
7. माता **(माँ)**
8. जल **(नीर)**

XIII) निम्नलिखित किन्ही आठ शब्दों शुद्ध वर्तनी लिखिए । **8 × 1 = 8**

1. विध्यार्थी **(दिदयार्थी)**
2. अधियापक **(अध्यापक)**
3. भारथ **(भारत)**
4. पड़ाई **(पढाई)**
5. सढ़क **(सड़क)**
6. आरंब **(आरंभ)**
7. कोशीश **(कोशिश)**
8. भूक **(भूख)**
9. रविन्दर **(रवींद्र)**
10. सन्मान **(समान)**
11. क्लीष्ट **(क्लिष्ठ)**
12. दूद **(दूध)**
13. आशिर्वाद **(आशीर्वाद)**
14. उज्वल **(उज्ज्वल)**
15. भूमी **(भूमि)**
16. सादारण **(साधारण)**

XIV) निम्नलिखित कारक चिह्नों की सहायता से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए। 8 × 1 = 8

1. यह पुस्तक संगीत **की** है। (में, की)
2. नौकर **ने** काम किया। (में, ने)
3. राम कलम **से** लिखता है। (से, का)
4. वह रामू **का** लड़ता है। (से, का)
5. राजु **ने** पढ़ाई की। (से, ने)
6. **अरे** भैया ! क्यों चिल्ला रहे हो? (अरे!, हाय!)
7. वह मोटरगाडी **से** जाता है। (में, से)
8. राम **ने** रावण को मारा। (में, ने)

XV) निम्नलिखित में से किसी चार मुहावरों के अर्थ लिखिए। 6 × 1 = 6

1. पंडित पूजा कर रहा है।(रेखांकित शब्द लिंग बदलकर वाक्य लिखिए)

   उत्तरः पंडिताइन पूजा कर रही हैं।
2. नौकर बाज़ार गया है। (रेखांकित शब्द लिंग बदलकर वाक्य लिखिए)

   उत्तरः नौकरानी बाजार गयी है।
3. मेरे पास घड़ा है। (रेखांकित शब्द वचन बदलकर वाक्य लिखिए)

   उत्तरः मेरे पास घडे हैं।
4. लड़का खेलता है। (रेखांकित शब्द वचन बदलकर वाक्य लिखिए)

   उत्तरः लडके खेलते हैं।
5. वातावरण अनुकूल है। (रेखांकित शब्द में उपसर्ग क्या है ?)

   उत्तरः अनु
6. चौरस्ते पर भीड़ है। (रेखांकित शब्द में उपसर्ग क्या है ?)

   उत्तरः चौ

7. वह <u>चतुराई</u> से काम करता है। (रेखांकित शब्द में प्रत्यय क्या है ?)

   उत्तरः आई

8. <u>भारतीय</u> संस्कृति महान है। (रेखांकित शब्द में प्रत्यय क्या है ?)

   उत्तरः ईय

9. मैं खेलता हूँ। (भविष्य काल?)

   उत्तरः मैं खेलूंगा

10. मैं मेरे गाँव जाऊँगा। (वाक्य शुद्ध कीजिए)

    उत्तरः मैं अपने गाँव जाऊँगा।

11. उसने खेलना चाहिए। (वाक्य शुद्ध कीजिए)

    उत्तरः उसे खेलना चाहिए।

12. तू तेरे भाई के साथ खेल। (वाक्य शुद्ध कीजिए)

    उत्तरः तु अपने भाई के साथ खेल।

XVI) निम्नलिखित किन्ही पाँच वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए। 5 × 1 = 5

1. I prefer cricket to football. (मैं फुटबाल से क्रिकेट को पसदं करता हूँ)
2. Don't go home. (घर मत जाओ।)
3. I do my work my self. (मैं अपना काम आप ही करता हूँ।)
4. He has helped me. (उसने मेरी मदद की है।)
5. I have read. (मैं पढ़ चुका हूँ।)
6. I have a pen. (मेरे पास कलम है।)
7. They are my books. (वे मेरी किताबें हैं।)
8. It was terrible hot. (बहुत गर्मी पड़ रही थी।)
9. He can do anything. (वह कुछ भी कर सकता)
10. I don't play football. (मैं फुटबाल नहीं खेलता हूँ।)

INTERMEDIATE PUBLIC EXAMINATION

Model Paper - II

HINDI

Paper - II

Time : 3 Hours Max. Marks: 100

सूचनाएँ

1. सभी प्रश्न अनिवार्य है ।
2. जिस क्रम मे प्रश्न दिये गये हैं, उसी क्रम से उत्तर लिखना अनिवार्य है ।

खण्ड - 'क' (60 अंक)

I) निम्नलिखित में से किसी एक दोहे का भावार्थ लिखिए । 1 × 6 = 6

1. साच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप । **(Page No. 3, Bit - 2)**
   जाके हिरदे साच है, ता हिरदे गुरू आप ।
2. तुलसी काया खेत है, मनसा भयो किसान । **(Page No. 9, Bit - 2)**
   पाप-पुण्य दोउ बीज हैं, बुवै सो लुनै निदान ।।

II) निम्नलिखित किसी एक कविता का सारांश 5-6 वाक्यों में लिखिए । 1 × 6 = 6

1. समता का संवाद । **(Page No. 14, Bit - 1)**
2. दान-बल । **(Page No. 22, Bit - 24)**

III) निम्नलिखित किसी एक पाठ का सारांश 5-6 वाक्यों में लिखिए । 1 × 6 = 6

1. शिष्टाचार । **(Page No. 28, Bit - 1)**
2. अपराजिता । **(Page No. 37, Bit - 1)**

IV) निम्नलिखित किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर 3-4 वाक्यों में लिखिए । 2 × 4 = 8

1. रवींद्र का लक्ष्य क्या थ ? **(Page No. 63, Q.No. 1)**
2. वनों को नष्ट करने से होने वाले दुष्परिणामों के बारे में लिखिए । **(Page No. 68, Q.No. 2)**

3. ध्यानचंद का संक्षिप्त जीवन-परिचय लिखिए । (Page No. 70, Q.No. 1)

4. खडगसिंह का चरित्र-चित्रण कीजिए । (Page No. 66, Q.No. 1)

V) निम्नलिखित किन्हीं दो पद्यांशों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए । 2 × 3 = 6

1. भारत माता का मंदिर यह, समता का संवाद जहाँ । (Page No. 15, Bit - 1)
सबका शिव-कल्याण यहाँ है, पावें सभी प्रसाद यहाँ ।।

2. प्रथम रश्मि का आना रंगिणि । (Page No. 19, Bit - 1)
तूने कैसे पहचाना ?
कहाँ, कहाँ, हे बाल-विहंगिनि ।
पाया तूने वह गाना ?

3. ऋतु के बाद फलों का रूकना डालों का सड़ना है, (Page No. 22, Bit - 1)
मोह दिखाना देय वस्तु पर आत्मघात करना है ।
देते तरू इसलिए कि रेशों में मत कीट समायें,
रहें डालियों स्वस्थ और फिर नये-नये फल आयें ।

VI) निम्नलिखित किन्हीं दो गद्यांशों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए । 2 × 3 = 6

1. ईश्वर सब द्ववार एक साथ बंद नहीं करता । (Page No. 40, Bit - 2)
यदि एक द्वार बंद करता भी है, तो दूसरा द्वार खोल
भी देता है ।

2. काकद्वय की चोंचो के दो घाव उस लघुप्राण के लिए बहुत थे, (Page No. 47, Bit - 1)
अतः वह निश्चेष्ट-सा गमले से चिपटा पड़ा था ।

3. तेलंगाणा यदि शरीर है तो बत्तुकम्मा उसकी आत्मा । (Page No. 57, Bit - 1)
बतुकम्मा के बिना तेलंगाणा राज्य की कल्पना करना
अरांभव है ।

VII) निम्नलिखित किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर 3-4 वाक्यों में लिखिए । **2 × 3 = 6**

1. तुलसी के अनुशार विपत्ति में साथी कौन होतो हैं ? (Page No. 11, Bit - 1)
2. सुमित्रानंदन पंत का कवि परिचय लिखिए । (Page No. 20, Bit - 1)
3. कबीरदास का संक्षिप्त परिचय लिखिए । (Page No. 6, Bit - 2)

VIII) निम्नलिखित किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर 3-4 वाक्यों में लिखिए । **2 × 3 = 6**

1. अनुशासन के पालन पर अपने विचार व्यक्त किजिए ? (Page No. 35, Bit - 1)
2. गिल्लू किसका नाम है ? उसके बारे में आप क्या जानते हैं ? (Page No. 50, Bit - 1)
3. 'बतुकम्मा' का अर्थ क्या है और यह त्योहार कितने दिनों तक मनाया जाता है ? (Page No. 59, Bit - 1)
4. 'शिष्टाचार' के कितने गुण है । कौन कौन से हैं ? जी के बारे में संक्षेप में लिखिए । (Page No. 34, Bit - 2)

IX) एक शब्द में उत्तर लिखिए । **5 × 1 = 5**

1. तुलसीदास के गूरू कौन थे? (Page No. 12, Bit - 2)
2. कबीर की एकमात्र प्रामाणिक रचना का नाम क्या है? (Page No. 7, Bit - 2)
3. दान-बल कविता के कवि कौन है ? (Page No. 25, Bit - 1)
4. प्रथम रश्मि कविता में कौन स्वागत गीत गा रहे हैं ? (Page No. 21, Bit - 3)
5. समता शब्द का अर्थ क्या है? (Page No. 17, Bit - 3)

X) एक शब्द में उत्तर लिखिए । **5 × 1 = 5**

1. कौन डॉक्टर बनना चाहती थी? (Page No. 43, Bit - 2)
2. चंद्रा की कार कौन चलाती थी ? (Page No. 43, Bit - 1)
3. गिल्लू का प्रिय खाद्य क्या था ? (Page No. 51, Bit - 4)
4. तेलंगाणा का राज्य पर्व कया है ? (Page No. 60, Bit - 1)
5. शिष्टाचार का सबसे पहला गुण क्या है ? (Page No. 36, Bit - 2)

खण्ड - 'ख' (40 अंक)

XI) निम्नलिखित गद्यांश पढ़िए। प्रश्नां के उत्तर एक वाक्य में लिखिए। 5 × 1 = 5

दूसरे दिन छोटू के पापा काम पर चले गए देखा तो कंट्रोल रूम का वातावरण बदला-बदला सा था। शिफ्ट खत्म कर घर जा रहे स्टाफ के प्रमुख ने टी.वी. स्क्रीन की तरफ इशारा किया स्क्रीन पर एक बिन्दु झलक रहा था। वह बताने लगा, 'यह कोई आसमान का तारा नहीं है, क्योंकि कंप्यूटर से पता चल रहा है कि यह अपनी जगह अडिग नहीं रहा है। पिछले कुछ घंटों के दौरान इसने अपनी जगह बदली है। कंप्यूटर के अनुसार यह हमारी धरती की तरफ बढ़ता चला आ रहा है।''

प्रश्नः

1. किसके पापा काम पर चले गए ? **(छोटू के पापा)**
2. कहाँ का वातावरण बदला-बदला सा लग रहा था ? **(कंट्रोल रूम का)**
3. स्टाफ क प्रमुख ने किसकी ओर इशारा किया ? **(टी.वी. स्क्रीन)**
4. धरती की ओर क्या बढ़ता चला आ रहा है ? **(एक बिंदू)**
5. यह अनुच्छेद किस पाठ से लिया गया है ? **(पार नजर के)**

XII) सूचना के अनुसार लिखिए।

I) किन्ही चार शब्दों के विलोम शब्द लिखिए। **1 × 4 = 4**

1. आकाश (**पाताल**)
2. एक (**अनेक**)
3. कीर्ति (**अपकिर्ती**)
4. दिन (**रात**)
5. नया (**पुराना**)
6. आशा (**निराशा**)

II) निम्नलिखित किन्ही चार शब्दों के समानार्थी शब्द लिखिए । **1 × 4 = 4**

1. आकाश (**अंबर**)
2. पृथ्वी (**धरती**)
3. वायु (**हवा**)
4. जल (**पानी**)
5. मनुष्य (**मानव**)
6. माता (**माँ**)

XIII) निम्नलिखित किन्ही आठ शब्दों शुद्ध वर्तनी लिखिए । 8 × 1 = 8

1. भारथ (**भारत**)
2. रवीवार (**रविवार**)
3. बालीका (**बालिका**)
4. भूक (**भूख**)
5. पेठ (**पेट**)
6. धोका (**धोखा**)
7. नारि (**नारी**)
8. पाणी (**पानी**)
9. भूमी (**भूमि**)
10. आंधी (**आँधि**)
11. दूद (**दूध**)
12. भासा (**भाषा**)

XIV) निम्नलिखित कारक चिह्नों की सहायता से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए । 8 × 1 = 8

1. आशा **ने** गीत गाया । (ने, का)
2. राम ने रावण **को** मारा । (को, से)
3. मेज **पर** पुस्तक है । (में, पर)
4. सोमू **को** पुस्तक चाहिए । (को, ने)
5. किसान मिट्टी **में** बीज बोता हैं । (में, पर)
6. मेरा घर दिल्ली **में** है । (में, पर)
7. पिता पुत्र **को** समझाता है । (को, से)
8. वह बस **से** गिर पड़ा । (से, में)

XV) सूचना के अनुसार किन्ही छः वाक्यों को बदलिए । 6 × 1 = 6

1. मोर सुंदर पक्षी है । (रेखांकित शब्द का लिंग बदलकर लिखिए)

   उत्तरः मोरनी सुंदर पक्षी है ।

2. दर्जी कपड़े सीता है । (रेखांकित शब्द का वचन बदलकर लिखिए)

   उत्तरः दर्जी दर्जी कपडा सीता है ।

3. कमज़ोर । (उपसर्ग लिखिए ।)

   उत्तरः कम

4. लिखावट । (प्रत्यय लिखिए ।)

   उत्तरः आवट

5. वह पढ़ रहा था । (वर्तमा काल में बदलिए ।)

   उत्तरः वह पढ़ रहा है ।

6. राम रावण मारा । (वाक्य शुद्ध कीजिए ।)

   उत्तरः राम ने रावण को मारा

7. मैं चाय पीते है। (वाक्य शुद्ध कीजिए)

उत्तरः मैं चाय पिता हूँ।

8. मैं मेरे गाँव जाऊँगा। (वाक्य शुद्ध कीजिए)

उत्तरः मैं अपने गाँव जाऊँगा।

XVI) निम्नलिखित किन्ही पाँच वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए। 5 × 1 = 5

1. He reads. (वह पढ़ता है।)
2. India is a country of villages. (भारत गाँवों का देश है।)
3. I have a pen. (मेरे पास कलम है।)
4. Don't go home. (घर मत जाओ।)
5. Boys went to school. (लड़के स्कूल गये।)
6. I went to Delhi by plane. (मैं हवाई जहाज से दिल्ली गया।)
7. I do not play football. (मैं फुटबाल नहीं खेलता हूँ।)
8. This is my own book. (यह मेरी अपनी किताब है।)

INTERMEDIATE PUBLIC EXAMINATION

Model Paper - III

HINDI

Paper - II

Time : 3 Hours Max. Marks: 100

सूचनाएँ

1. सभी प्रश्न अनिवार्य है ।
2. जिस क्रम मे प्रश्न दिये गये हैं, उसी क्रम से उत्तर लिखना अनिवार्य है ।

खण्ड - 'क' (60 अंक)

I) निम्नलिखित में से किसी एक दोहे का भावार्थ लिखिए । 1 × 6 = 6

1. बोली तो अनमोल है, जो कोई जाने बोल । **(Page No. 5, Bit - 4)**
   हिये तराजू तोली के, तब मुख बाहर खोल ।
2. तुलसी काया खेत है, मनसा भयो किसान । **(Page No. 9, Bit - 2)**
   पाप-पुण्य दोउ बीज हैं, बुवै सो लुनै निदान ।।

II) निम्नलिखित किसी एक कविता का सारांश 5-6 वाक्यों में लिखिए । 1 × 6 = 6

1. दान-बल । **(Page No. 22, 24)**
2. प्रथम - रश्मि । **(Page No. 18, Bit - 1)**

III) निम्नलिखित किसी एक पाठ का सारांश 5-6 वाक्यों में लिखिए । 1 × 6 = 6

1. शिष्टाचार । **(Page No. 28, Bit - 1)**
2. गिल्लू । **(Page No. 44, Bit - 1)**

IV) निम्नलिखित किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर 3-4 वाक्यों में लिखिए । 2 × 4 = 8

1. बाबा भारती का सुल्तान के प्रति लगाव कैसा था ? **(Page No. 66, Q.No. 2)**
2. ध्यानचंद को हॉकी का जादूगर क्यों कहा जाता है ? **(Page No. 70, Q.No. 2)**
3. प्रदुषण को रोकने के कुछ उपाय लिखिए ? **(Page No. 68, Q.No. 1)**
4. रविंद्र नौकरी क्यों नहीं करना चाहता था ? **(Page No. 64, Q.No. 2)**

V) निम्नलिखित किन्हीं दो पद्यांशों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए । **2 × 3 = 6**

1. भारत माता का मंदिर यह, समता का संवाद जहाँ । **(Page No. 15, Bit - 1)**
   सबका शिव-कल्याण यहाँ है, पावें सभी प्रसाद यहाँ ।।

2. दान जगत का प्रकृत धर्म है, मनुज व्यर्थ डरता है, **(Page No. 23, Bit - 2)**
   एक रोज तो हमें स्वयं सब-कुछ देना पड़ता है ।
   बचते वही, समय पर जो सर्वस्व दान करते हैं,
   ऋतु का ज्ञान नहीं जिनको वे देकर भी मरते हैं ।

3. शशि-किरणों से उत्तर-उतरकर, **(Page No. 19, Bit - 2)**
   भू पर कामरूप नभ-चर,
   चूम नवल कलियों का मृदु-मुख,
   सिखा रहे थे मुसाकाना ।

VI) निम्नलिखित किन्हीं दो गद्यांशों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए । **2 × 3 = 6**

1. विनम्रता केवल बड़ों के प्रति नहीं होती । बराबर वालों और अपने से छोटों के प्रति भी नम्रता और स्नेह का भाव होना चाहिए । **(Page No. 32, Bit - 1)**

2. मेधावी पुत्री की विलक्षण बुद्धि ने फिर मुझे चमत्कृत कर दिया है । सरस्वती जैसे आकर जिव्हाग्र पर बैठ गयी थी । **(Page No. 40, Bit - 1)**

3. काकद्वय की चोंचो के दो घाव उस लघुप्राण के लिए बहुत थे, अतः वह निश्चेष्ट-सा गमले से चिपटा पड़ा था । **(Page No. 47, Bit - 1)**

VII) निम्नलिखित किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर 3-4 वाक्यों में लिखिए । **2 × 3 = 6**

1. कबीर का संक्षिप्त परिचय लिखिए ? **(Page No. 6, Bit - 2)**

2. दिनकर के अनुसार दान देने से नदी को क्या लाभ होता है? **(Page No. 25, Bit - 2)**

3. तुलसी के अनुसार मीठे वचन बोलने से क्या लाभ है ? **(Page No. 11, Bit - 2)**

VIII) निम्नलिखित किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर 3-4 वाक्यों में लिखिए। 2 × 3 = 6

1. शिष्टाचार के कितने गुण है, वे कौन कौन से है ? **(Page No. 34, Bit - 2)**
2. बतुकम्मा त्यौहार में किन किन फूलों का उपयोग होता है? उनके नाम लिखिए ? **(Page No. 59, Bit - 2)**
3. चन्द्रा की माँ को 'वीर जननी' का पुरस्कार क्यों दिया गया ? **(Page No. 43, Bit - 2)**

IX) एक शब्द में उत्तर लिखिए। 5 × 1 = 5

1. 'प्रथम रश्मि' कविता के कवि कौन है? **(Page No. 20, Bit - 1)**
2. कबीर के गूरू कौन थे ? **(Page No. 7, Bit - 1)**
3. तुलसी का अमर काव्य कौनसा है ? **(Page No. 12, Bit - 1)**
4. किस काव्य के लिए दिनकर को ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला? **(Page No. 25, Bit - 2)**
5. दान-बल कविता के कवी कौन है? **(Page No. 25, Bit - 1)**

X) एक शब्द में उत्तर लिखिए। 5 × 1 = 5

1. तेलंगाना का राज्य पर्व कौनसा है। **(Page No. 60, Bit - 1)**
2. चंद्रा की कार कौन चलाता है ? **(Page No. 43, Bit - 1)**
3. गिल्लू नामक पाठ की लेखिका कौन है ? **(Page No. 51, Bit - 1)**
4. शिष्टाचार का सबसे पहला गुण क्या है ? **(Page No. 36, Bit - 2)**
5. अपराजिता पाठ की लेखिका का नाम क्या है ? **(Page No. 43, Bit - 4)**

खण्ड - 'ख' (40 अंक)

XI) निम्नलिखित गद्यांश पढ़िए। प्रश्नां के उत्तर एक वाक्य में लिखिए। 5 × 1 = 5

बारहवीं कक्षा की बोर्ड परीक्षा समाप्त हो गई और रिज़ल्ट आने में दो महीने का समय था। कारखाने में भरती पूरे जोश में थी। गाँव के दूसरे नौजवान कारखाने में भरती हो रहे थे, लेकिन रवीन्द्र ने अपना लक्ष्य आई.ए.एस. रख लिया था, वह नौकरी के लिए तैयार नहीं था। घर में खाली बैठे पुत्र को कोई बरदाश्त नहीं करता है। उसे घर देख माँ ने पिता से कहा, ''अजी

सुनते हो, गाँव के सारे लड़के कारखाने में भरती हो रहे हैं। अपना रबी घर पड़ा है, कुछ बात करो उससे। अपना रबी तो प्रथम आता है, फेल लड़के सारे भरती हो गए हैं, सुना है पाँच-पाँच हज़ार रूपय महीना तनखाह मिल रही है, इसको तो अधिक तनखाह मिलेगी।''

प्रश्न

1. किस परीक्षाके परिणाम आने में दो महीने का समय था। (**बारहवीं कक्षा**)
2. रवींद्र क्या लक्ष्य क्या था ? (**आई. ए. एस्**)
3. रवींद्र क्या नहीं करना चाहता था ? (**कारखाने में नौकरी**)
4. कारखाने में क्तिना वेतन मिल रहा है? (**पाँच हजार रूपये**)
5. इस गद्यांश के लेखक का नाम क्या है। (**मनमोहन भाटिया**)

XII) सूचना के अनुसार लिखिए।

I) किन्ही चार शब्दों के विलोम शब्द लिखिए। **1 × 4 = 4**

1. अपना (**पराया**)
2. दूर (**पास**)
3. नया (**पुराना**)
4. आशा (**निराशा**)
5. न्याय (**अन्याय**)
6. स्वदेश (**विदेश**)

II) निम्नलिखित किन्ही चार शब्दों के समानार्थी शब्द लिखिए। **1 × 4 = 4**

1. आग (**अग्नी**)
2. सूर्य (**सूरज**)
3. मनुष्य (**मानव**)
4. घर (**सदन**)
5. जल (**पानी**)
6. पक्षी (**पंछी**)

XIII) निम्नलिखित किन्ही आठ शब्दों शुद्ध वर्तनी लिखिए । **8 × 1 = 8**

1. आरंब **(आरंभ)**
2. भूक **(भूख)**
3. पेठ **(पेट)**
4. भुमी **(भूमि)**
5. बालीका **(बालिका)**
6. पाणी **(पानी)**
7. दूद **(दूध)**
8. रवीवार **(रविवार)**
9. कोशीश **(कोशिश)**
10. भास **(भाषा)**
11. भारथ **(भारत)**
12. धोका **(धोखा)**

XIV) निम्नलिखित कारक चिह्नों की सहायता से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए । **8 × 1 = 8**

1. मैं तुम **से** बड़ा हूँ ।
2. आशा **ने** गीत गाया ।
3. रमेश **की** बेटी बीमार है ।
4. नौकर **ने** काम किया ।
5. मेरा घर दिल्ली **में** हैं ।

6. मेज **पर** पुस्तक है ।

7. वह बस **से** गिर पड़ा ।

8. पिता पुत्र **को** समझता हैं ।

XV) सूचना के अनुसार किन्ही छः वाक्यों को बदलिए । 6 × 1 = 6

1. नौकर बाजार गया है । (लिंग बदलिए)

   उत्तरः नौकरानी बाजार गयी है ।

2. मैं केला खाते हूँ । (वचन बदलिए)

   उत्तरः मैं केले खाता हूँ ।

3. अपमान । (उपसर्ग लिखिए ।)

   उत्तरः 'अप'

4. धार्मिक । (प्रत्यय लिखिए ।)

   उत्तरः 'इक'

5. मैं लिखता हूँ । (भविष्य काल में बदलिए ।)

   उत्तरः मैं लिखूँगा

6. मैं चाय पिते है । (वाक्य शुद्ध कीजिए ।)

   उत्तरः मैं चाय पिता हूँ

7. वह शिक्षा दिया । (वाक्य शुद्ध कीजिए)

   उत्तरः उसने शिक्षा दी

8. वह धीरे चला गया । (वाक्य शुद्ध कीजिए)

   उत्तरः वह धीरे से चला गया ।

XVI) निम्नलिखित किन्ही पाँच वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए। 5 × 1 = 5

1. I do my work myself. (मैं अपना काम आप ही करता हूँ।)
2. Boys went to school. (लड़के स्कूल गये।)
3. Don't go home. (घर मत जाओ।)
4. Study for two hours everyday. (रोज दो घंटे पढ़ा करो।)
5. He has helped me. (उसने मेरी मदद की है।)
6. We should be good citizens. (हमें अच्छा नागरिक बनाना जाहिए।)
7. I have read. (मैं पढ़ चुका हूँ।)
8. I have pen. (मेरे पास कलम है।)